धर्मों का धर्मसंकट

बदलाव जीवन का अहम् सत्य है।
अतः अपनी सोच व कार्यप्रणाली में हमें
लगातार सकारात्मक परिवर्तन करते रहना है।

ले. जनरल (डॉ.) शिवराम मेहता

धर्मों का धर्मसंकट

Religion can to a certain degree help to overcome division. But religion alone will not be enough. Global secular ethics are now more important than the classical religions. We need a global ethics that can accept both believers and non believer including atheists.

–The XIV Dalai Lama

लेखक

ले. जनरल (डॉ.) शिवराम मेहता, एम.डी. (मेडिसिन)

अति विशिष्ट सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल (सेवानिवृत्त)

हिमांशु पब्लिकेशन्स

उदयपुर ❐ नई दिल्ली

HIMANSHU Publications

हिमांशु पब्लिकेशन्स

464, हिरण मगरी, सेक्टर 11, उदयपुर 313 002 (राज.), फोन: 0294-2421087
4379/4-B, प्रकाश हाऊस, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-2, मोबाईल: 96109-73739
Web : *himanshupublications.com;* email : *himanshupublications@gmail.com*

ISBN : 978-81-7906-000-0

संस्करण : 2020

मूल्य : ₹ 50.00

Distributor

ARYAS PUBLISHERS DISTRIBUTORS (P) LTD.

2-D, Hazareshwar Colony, Near Court Choraha, Udaipur (Raj.) - 313 001; Phone : 0294-2526160
E-mail : apdpl.2012@gmail.com

धर्मों का धर्मसंकट

लेखक

ले.जनरल (डॉ.) शिवराम मेहता, एम.डी. (मेडिसन)

अति विशिष्ट सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल (सेवानिवृत्त)

– मेम्बर, जनरल बॉडी, रामकृष्ण मिशन गौतम मार्ग,सी, स्कीम, जयपुर

– पेट्रन (संरक्षक): 'श्री' फाउंडेशन 133/2, न्यू सिविक सेंटर, भिलाई, छत्तीसगढ़

पूर्व

– आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, डिपार्टमेंट ऑफ मेडिसिन, आर्म्ड फोर्सज मेडिकल कॉलेज, पुणे

– मेम्बर, मेडिकल कॉसिल ऑफ इण्डिया

– फाउंडर डीन, आर्मी कॉलेज ऑफ मेडिकल साईन्सेज, दिल्ली छावनी।

– सीनियर कंसल्टेंट (मेडिसन), आर्म्ड फोर्सेज मेडिकल सर्विसेज, रक्षा मंत्रालय

– कमांडेट, ए.अम.सी. सेंटर व कॉलेज, लखनऊ

– प्रेसिडेन्टस ऑनरेरी सर्जन

– महानिदेशक, चिकित्सा सेवाएं (सेना) एवं कर्नल कमांडेन्ट सेना चिकित्सा कोर, रक्षा मंत्रालय, एकीकृत मुख्यालय (सेना) 'एल'. ब्लॉक, नई दिल्ली।

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

महोपनिषद् अध्याय 4 श्लोक 72

यह अपना बन्धु है और यह अपना बन्धु नहीं है, इस तरह की गणना छोटे चित्त वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वाले लोगों की तो (सम्पूर्ण) धरती ही परिवार है।

मेरी पुत्री

प्रतिभा

को समर्पित,

जिसकी हर धर्म में अक्षुण्ण आस्था रही है।

भरत सिंह कुन्दनपुर
विधायक, सांगोद
भीम निवास, गुमानपुरा, कोटा – 7

दिनांक. 28.7.2020

प्राक्कथन

"धर्मो का धर्म संकट" पुस्तक के लेखक ले0 जनरल (डॉक्टर) शिवराम मेहता से मेरा परिचय इनके अनुज श्री रामनिवास मेहता के माध्यम से हुआ था। श्री रामनिवास मेहता को मैं प्रदेश के श्रेष्ठ आर.ए.एस. अधिकारियों में से एक मानता हूँ।

धर्म के विषय में मेरी जानकारी बहुत सीमित है। लेखक द्वारा मुझे क्यों इस गंभीर विषय का प्राक्कथन लिखने के लिए चुना है, यह मेरी समझ से परे है।

मुझे ईश्वर में पूर्ण विश्वास है। मेरी यह भी मान्यता है कि "राम" मंदिरों में निवास नहीं करते हैं। हमारे "राम" तो हमारे हृदय में निवास करते हैं। इसी हृदय के एक कोने में रावण भी रहता है। राम तो आपको सदा सत्य का मार्ग ही बतलाते हैं।

सत्य ही ईश्वर है। आपने अपने राम की आवाज सुन सत्य के मार्ग पर चलने की ठान ली तो यही सबसे सुन्दर धर्म है। धर्म तो सदा मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है। जो मनुष्य से मनुष्य को तोड़ता है, वह तो अधर्म है।

जनरल मेहता ने अपने जीवन भर के अनुभव को धर्म से जोड़कर सरल भाषा में प्रस्तुत किया है। मुझे विश्वास है कि धर्म के विषय पर लिखी यह पुस्तक पाठकों को बेहतर मनुष्य बनने में मदद करेगी।

(भरत सिंह कुन्दनपुर)

शुभाशंसन

शिक्षा और अनुभव का एक हार्दिक प्रयास

सदियों पूर्व कॉपरनिक्स, ब्रुनो एवं गैलीलियो जैसे महान वैज्ञानिक जिन्होंने ब्रह्माण्ड (Universe) की खोज की, उन्हें धर्म के हाथों मृत्युदण्ड और निरादर (Humiliation) का शिकार होना पड़ा था। तब से विज्ञान और धर्म के बीच पारस्परिक मतभेद कई रूप में अब भी अनवरत प्रचलित हैं।

आज हमारे सामने यह चुनौती है कि विज्ञान और धर्म की मान्यताओं को निष्पक्ष (Unbiased) मानसिकता से समझें। इनमें पारस्परिक सहयोग मानव कल्याण के हित में हो, इसका हम निरन्तर प्रयास करें। लेखक ने इस चुनौती को मानते हुए इसके निवारण के साधनों से अवगत करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। साथ ही आध्यात्मिक, धर्म और विज्ञान इनको मूल आधार मानते हुए इन्हें मानव धर्म से जोड़ने का प्रयास किया है। इस ज्ञान के सुदृढ़ीकरण (Reinforcement) के लिए उपयुक्त धार्मिक, सामाजिक एवं वैज्ञानिक उदाहरण भी प्रस्तुत किए गये हैं।

विज्ञान और धर्म की उत्पत्ति एवं इनके निरन्तर विकास का माध्यम है, मानव का मस्तिष्क (Brain), जो करीब एक हजार करोड़ (100 billion) तांत्रिक कोशिकाओं (Neurones) से बना एक शानदार (Magnificent) प्राकृतिक चमत्कार है। इसकी हर कोशिका में निहित जीन्स (Genes) हमारी प्रतिभा (Intelligence), होश (Senses), गति (Movements) और स्मृति (Memory) आदि गुणों को निर्धारित करती है। विज्ञान हमारे मस्तिष्क को मन (Mind) की प्रतिक्रियाओं से जोड़ता है। इसके अलावा विज्ञान ने हमें यह भी बताया है कि मानव शरीर करीब $30x10^{12}$ (30 Trillion) कोशिकाओं (Cells) से बना है। इसका पूरा संचालन हर कोशिका में निहित करीब बाईस हजार (22,000)

जीन्स (Genes) द्वारा होता है। इसमें जानने योग्य बात यह है कि 99. 9 प्रतिशत Genes हर मानव प्राणी में पूर्णतया समान (Identical) हैं। इतनी समानता होते हुए भी प्रकृति से प्राप्त केवल 0.1 प्रतिशत विभिन्नता के आधार पर हमारे धर्मो ने मानव को विभिन्न जातियों में बांट कर ऊंची नीची सामाजिक श्रेणियों में बाँध दिया है। इस तरह के भेदभाव, धार्मिक अन्धविश्वास और रीति–रिवाजों आदि में बंधकर हम न केवल स्वयं को अपितु समस्त पर्यावरण को क्षति पहुंचा रहे हैं। लेखक ने इन सबका सूक्ष्म मूल्यांकन करते हुए भविष्य में सुधार आने की पूरी आशा की है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने में आम मानव पीछे ही रहा है। हमें लेखक के समान सोच, मनोवृत्ति, दृढ़ता (Perseverance) वाले विशेषज्ञ एवं वैज्ञानिकों की जरूरत है, जो धर्म की रचनात्मक आलोचना के साथ विज्ञान की उपलब्धियों का ज्ञान जनसाधारण में प्रचारित कर सकें। विज्ञान के आविष्कारों पर रोक न लगाकर इनके दुरूपयोग पर ध्यान देना आवश्यक है। ऐसे प्रयास से सब धर्म संकटो के धीरे–धीरे मिटने की आशा है।

मानव के सम्पूर्ण विकास के लिए धर्म और विज्ञान दोनों आवश्यक हैं। यह लेखक का महत्वपूर्ण संदेश है।

अपनी शुभकामनाओं के साथ,

डॉ. रामदेव मेहता

Professional Biologist
E mail- rmehta@pbr.ca
PBR Laboratries Inc.
9960-67 Avenue NW
Edmonton, Alberta
Canada T6E0P5
Phone (780) 450-3957

Distinguished Alumni
University of Alberta
Edmonton, Alberta
Canada
July 28, 2020.

Preface

Treat the world as if it belongs to some one you care and love. I have been deeply touched by the author's source of inspiration that resulted in this wonderful outcome: *Dharmo ka Dharmsankat.*

The author sees that the religion being practiced is often misunderstood and misused. This book is an honest effort of the author to convey the significance of religion and its dimensions for the people of all walks of life. The author's message is for all humankind and not specifically to any followers of a sect or a religion. The book; very thoughtfully, analytically and elaborately addresses social upliftment and world peace.

Based on his personal life and religious experiences, the author has tried to meticulously cover all dimensions of religion, including experiential, mythological, doctrinal, ethical, ritualistic and socio-political in different chapters of the book and have attempted to illustrate their impact on life during contemporary times. In fact, the religion could become dysfunctional; if the growing disturbing issues are overlooked. Religion is an essential medium to bring progress and peace to humanity. Yet the situation could be made to turn otherwise. It may lead to act as a force to divide the world, promote hatred, originate conflict and become a political tool to rule and stay in power. This has been a great concern of the author that such situations may ultimately lead in undermining the core values of religion and shake the humanistic foundations of religious institutions. In this book author emphasised understanding and practicing religion in its true spirit. Dogmatism, orthodoxy superstition, communalism are main culprits. The linkages of power politics to misuse of religion and corruption are hostile forces, which attack the spirit and values of religion; thus creating a serious threat and challenge to the functioning of the modern civil society.

As we analyze the prevailing conflicts, a disturbing pattern becomes evident that the modern society is being led to the misunderstanding the true spirit of religion. In fact, the social cohesion is the primary purpose of religion. In view of the diverse nature of the society and its needs, religion has always been a churning process to extract peace and civility, and is dynamic.

The act of social exclusion, creating barriers, discrimination and undermining other religion have brought a variety of social and economic disparities globally. As witnessed, the religion-based violence is on the rise. A major part of the world is facing religious conflict more than arms conflict.

Religious fundamentalism is a great threat to a progressive world. We see globally, the religion has often been the motivation for war than peace, and the situation is worsening on a continuous basis and the world is not in peace and religious harmony.

It appears that the humanity is in moral ambiguity and needs prevalence of true good sense and spirituality. To overcome the dilemma what one should do? Since religion is well connected with human life, the universalization of religion for common goal and welfare of humanity is the only solution.

The author has brilliantly illustrated these issues in this book. This is a praise worthy effort of the author during this time of prevailing religious and spiritual crises.

In my view, an essential message the author attempts to convey is this: May the people of all faiths work in a harmonious spirit of all religions and transform the social, moral and physical issues employing religion and spirituality as catalysts with the mission to achieve prosperity and peaceful coexistence for all on this beautiful planet of ours, the earth.

We pray for the welfare of entire universe;

Dr. ASHOK SINGH, Ph.D., P.Chem.
Professional Chemist, Alberta, Canada
4416-11A AV, NW Edmonton AB T6L 6M4
Ashok.s@telus.net
(780)463-5474
July 28, 2020

डॉ. अशोक सिंह के प्राक्कथन का हिन्दी अनुवाद

विश्व के साथ इस प्रकार का व्यवहार करें जैसे यह विश्व उन सब लोगों का है जिनको आप चाहते हैं और जिनकी आपको फिक्र है। मैं लेखक की उस प्रेरणा, जिसका परिणाम धर्मों का धर्मसंकट नामक इस पुस्तक के रूप में आया है, उससे अभिभूत हूँ।

लेखक ने यह पाया है कि धर्मों को प्रायः गलत तरीके से समझा गया है और उनका दुरुपयोग ही अधिक होता आया है। यह पुस्तक लेखक के उस ईमानदार प्रयास का प्रतिफल है जो जीवन के हर क्षेत्र के लोगों को धर्म, उसके आयाम और उसके महत्व को बताता है। लेखक का संदेश मानवता के लिए है और किसी धर्म या संप्रदाय के अनुयायियों मात्र तक सीमित नहीं है। पुस्तक बड़े विचारपूर्ण, विश्लेषणात्मक एवं विशेष रूप से सामाजिक उन्नयन और विश्व शांति के मुद्दों का मार्ग दिखाती है।

अपने व्यक्तिगत जीवन एवं धार्मिक अनुभव के आधार पर लेखक ने बारीकी से धर्म के हर आयाम को छुआ है, जिसमें व्यावहारिक, माइथोलॉजी, नैतिकता, कर्मकाण्ड एवं सामाजिक व राजनीतिक आयाम शामिल हैं। साथ ही इनका हमारे समय में, हमारे जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को भी दर्शाया गया है। वास्तव में धर्म पूर्णतया निष्क्रिय हो सकता है, यदि हमारे सामने हमें परेशान करने वाले मुद्दों को हम अनदेखा करते रहें। धर्म मानव मात्र की प्रगति और शांति लाने का एक माध्यम है परंतु यदि इसका अन्यथा उपयोग किया जावे तो यह विनाश का हथियार भी बन सकता है। यह विश्व को बांटने, हिंसा को फैलाने, विवादों को जन्म देने, शासन करने के लिए राजनीतिक हथियार एवं सत्ता में बने रहने का काम भी कर सकता है। लेखक की वास्तव में यही चिंता है कि इस प्रकार के हालात बने रहने से धर्म के मूल सिद्धांत गौण व कमजोर हो जाएंगे और यह धार्मिक संस्थाओं के

मानवीय पहलू को हिला देगा। पुस्तक में लेखक ने धर्म को उसके सही रूप में व्यवहार में लाने की बात कही है।

धर्म की आड़ में ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास और सांप्रदायिकता वास्तव में मानवता के शत्रु हैं। सत्ता हथियाने के लिए धर्म का दुरुपयोग एवं भ्रष्टाचार इस प्रकार की खतरनाक ताकते हैं जो धर्म के मूल्यों और आत्मा पर ही हमला करते हैं। इससे आधुनिक नागरिक समाज की कार्यप्रणाली को गंभीर चुनौती एवं खतरा उत्पन्न हो रहा है।

जब हम वर्तमान संघर्षों का विश्लेषण करते हैं तो हम पाते हैं कि आधुनिक समाज को धर्म के वास्तविक स्वरूप को गलत समझा कर समाज का नेतृत्व किया जा रहा है। वस्तुतः सामाजिक एकजुटता धर्म का प्राथमिक उद्देश्य है। सामाजिक विविधता एवं उसकी आवश्यकताओ की पूर्ति के कारण धर्म सदैव शांति एवं सभ्यता विकसित करने का गतिशील माध्यम रहा है।

सामाजिक बहिष्कार, लोगों के बीच में दीवारें, भेदभाव एवं दूसरे के धर्म को नीचा दिखाने जैसी प्रवृत्तियों से पूरी दुनिया में कई प्रकार की सामाजिक एवं आर्थिक विषमताएं उत्पन्न हो रही हैं। समसामयिक काल में धर्म आधारित हिंसा में वृद्धि होना प्रकट हुआ है। विश्व के अधिकांश भागों में हथियारों के संघर्ष की तुलना में धार्मिक संघर्ष ज्यादा दिखाई देता है।

प्रगतिशील विश्व को धार्मिक कट्टरवाद से बड़ा खतरा है। हमने देखा है कि अनेक बार धर्म से शांति के स्थान पर युद्ध करने की प्रेरणा ले ली गई।यह स्थिति सुधरने की बजाए खराब होती जा रही है एवं दुनिया में धार्मिक सौहार्द्र व शांति नहीं है।

ऐसा प्रतीत होता है कि मानवता नैतिक अधरझूल में है । इस दुविधा को दूर करने के लिए क्या किया जाना चाहिए ? बेहतर समझ व आध्यात्मिकता का प्रभाव इसका समाधान हो सकता है। मानव के जीवन से धर्म बहुत अच्छी प्रकार से जुड़ा हुआ है इसलिए धर्म का

सार्वभौमीकरण, सबके कल्याण एवं मानव मात्र के कल्याण के साझा उद्देश्य के लिए ही किया जाना चाहिए और यही एकमात्र उपाय है।

लेखक ने अपनी पुस्तक में इन सब मुद्दों को बड़े सटीक तरीके से समझाया है।वर्तमान धार्मिक व आध्यात्मिक संकट के मध्य लेखक का यह प्रयास प्रशंसनीय है।

मेरे विचार में लेखक जिस संदेश को देना चाहता है वह यह है कि अलग–अलग धार्मिक विश्वास के लोगों को सद्भावना से काम करते हुए सामाजिक, नैतिक एवं भौतिक मुद्दों को हल करना चाहिए । इसमें धर्म को एक उत्प्रेरक के रूप में काम में लेना चाहिए, जिससे हम सबकी समृद्धि बढे और हम इस सुंदर उपग्रह पृथ्वी पर शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के साथ समृद्धि से जी सकें।

हम पूरे ब्रह्मांड के कल्याण के लिए प्रार्थना करते हैं।

Dr. ASHOK SINGH, Ph.D., P.Chem.
Professional Chemist, Alberta, Canada
4416-11A AV, NW Edmonton AB T6L 6M4
Ashok.s@telus.net
(780)463-5474
July 28, 2020

आत्म निवेदन

इस पुस्तक को लिखने का मूल उद्देश्य यह है कि हमारा आचरण शुद्ध, नैतिक एवं मर्यादित हो न कि हम धर्म के रीति–रिवाजों का अविवेकपूर्ण तरीके से पालन करते रहें। समस्या तब शुरू होती है जब हमारा आचरण शुद्ध नहीं होता और हम हमारी धारणाओं एवं धर्म को दूसरों की धारणाओं एवं धर्म से श्रेष्ठ मानने लग जाते हैं। इस व्यवहार पर विशद व्याख्या करते हुए ही यह पुस्तक लिखने का विचार आया है।

हम पूर्णतया धार्मिक इंसान हैं एवं हर मजहब का पूरा सम्मान तहेदिल से करते हैं। हर धर्म में स्वार्थ व कुप्रचार की वजह से कई विचार तर्कसंगत नहीं रहते हैं और कई गलत धारणाएं बन जाती हैं जिन्हें बदलना जरूरी होता है क्योंकि इनमें से कई खतरनाक व विनाशकारी हो सकती हैं। आज तक विश्व में धर्म के नाम पर बहुत नरसंहार हुआ है व आंकड़े दिल दहलाने वाले हैं। यह तथ्य बहुत लोगों को मालूम नहीं है।

पुराने जमाने का मानव इतना पढ़ा–लिखा व जागरूक नहीं था लेकिन आज कई लोग धार्मिक अंधविश्वासों एवं पुराने गलत रीति–रिवाजों को आसानी से नहीं अपनाते हैं, फिर भी कुछ लोग ऐसे हैं जो लकीर के फकीर बने रहकर गलत ढंग से जीवन व्यतीत करते हैं व धर्म का अर्थ ही नहीं समझ पाते हैं।

धर्म का सही अर्थ समझना आसान नहीं है। धर्म के असली तत्व/मर्म को जानने वाला इंसान कभी भी हिंसा या गलत काम नहीं करेगा। हर मूल धर्म में बहुत पाक सलाहें हैं लेकिन कुछ तथ्यों की प्रचारकों ने खतरनाक रूप से व्याख्या कर रखी है एवं यहीं से सारी गड़बड़ शुरू होती है।

साधारण मानव का मन गलत काम करने को आतुर रहता है क्योंकि सही मार्ग कठिन होता है। इसी वजह से घोर अपराध जैसे पशु बलि देना, उत्पीड़न करना, हत्यायें करना इत्यादि अपराधों को पथ भ्रष्ट लोगों द्वारा धार्मिक कार्य मान लिया जाता है। यह पागलपन है जो आज विश्व समाज को विनाश की कगार की ओर ले जा रहा है। हम सबको इसे रोकना होगा एवं धर्म की अच्छाई को ही अपना कर अपना व विश्व

का कल्याण करना होगा। विश्व कल्याण का भाव ही हर धर्म का मूल है परन्तु इसे हम नकारते रहते हैं। धर्म सिर्फ इंसान पर ही नहीं अपितु हर जीव–जन्तु पर शासन करता रहता है। हम साधारणतया धर्म का अर्थ मंदिरों, गिरजाघरों, मस्जिदों व अन्य धर्म–स्थलों में की जानी वाली पूजा–पाठ इत्यादि को मान लेते हैं जो वास्तव में उपासना की मानवकृत भिन्न–भिन्न पद्धतियाँ है व एक परमेश्वर के पास पहुँचने के अलग–अलग रास्ते हैं। धर्म मनुष्य को उसकी अंतरात्मा (अन्तःकरण) में स्थित दिव्य स्वरूप का रास्ता दिखाता है। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं हैं जो कभी न कभी बहुत ही सूक्ष्मता पूर्वक अपने कर्मों व व्यवहार का आंतरिक मूल्यांकन नहीं करता हो। सच्चे चरित्रवान मानव किसी अलौकिक (Super power) शक्ति के सहारे ही अच्छे कार्य करते हैं। यह महाशक्ति मानवीय जीवन का महामार्ग (मुख्य पथ) है जिसके दोनों तरफ भटकाने वाले कुमार्ग भी बिछे हुये हैं। यह आकर्षित दिखने वाली गलियाँ भटकाव के रास्ते हैं जो भोले–भाले एवं कई बार बहुत ही बुद्धिमान मानव को भी धर्म के राजपथ से भटकाकर जीते जी ही नर्क में धकेल देते हैं। इस दुर्गति से बचने के लिये मानव को धर्म से ज्यादा आध्यात्मिकता की आवश्यकता है। बचपन व जवानी में इन भटकाऊ गलियों में बहुत से लोग चले जाते हैं, लेकिन अधेड़ अवस्था आते–आते काफी लोग मुख्यपथ पर आने की कोशिश करके उसमें सफल हो जाते हैं।

एक और भंयकर दुविधा यह है कि हर धर्म के कुप्रचारकों ने धर्म के सही रास्ते को गलत गलियों में मोड़ने के लिए ऊँची– ऊँची, सुसज्जित परंतु खोखली दुकानें खोल रखीं हैं एवं इनमें अधिकतर स्वनिर्मित कलयुगी गुरू व प्रचारक पोपलीलाएं करते रहते हैं। वे झूठे प्रमाण देकर व अंधविश्वास का सहारा लेते हुए कयामत, स्वर्ग, नरक, किस्मत, भूत–प्रेत, गलत ज्योतिष पर आधारित भविष्यवाणियाँ इत्यादि विनाशकारी कार्य करके लोगों को भटकाते रहते हैं। अतः इस गलत रास्ते में हमें भटकना नहीं है। सिख धर्म गत 550 वर्षों से एवं आर्य समाज गत 145 वर्षों से धर्म में आई/प्रचलित कुछ बुराइयों को सुधारने की कोशिश करता रहा है लेकिन कुछ और सुधारों की आवश्यकता बहुत जरूरी हो गई है ।

आप अपने–अपने धर्म में ही रहते हुये प्रेम, शान्ति, सहचर्य, अक्रोध को धारण करते हुये, प्रेमपूर्वक विचार करके एक दूसरे को हृदय से प्यार

करना सीखें, यही आपका सही धर्म है। इसी एक विचार से ही आज प्रचलित विनाशकारी कुरीतियों जैसे एक–दूसरे से वैमनस्यता रखना, मंदिरों, मस्जिदों, चर्चों व स्कूलों इत्यादि में निर्दोष लोगों की हत्या करना व कष्ट देना इत्यादि को रोका जा सकता है।

सब झगड़े, दुःख, हर तरह के मन–मुटाव, भेदभाव, अन्याय व संघर्षों की उत्पत्ति इसी विचार धारा से होती है कि सामने वाला मेरे विचारो से, मेरे विश्वास एवं धारणाओं से सहमत क्यों नहीं हो रहा है?। किसी भी धर्म, पंथ व विचार की कोई बात अगर आपको ठीक नहीं लगती है तो आप उसे अपनाओ मत परन्तु उसकी आलोचना से परहेज करें। धार्मिक पूजा के सभी रूपों को स्वीकार करने की परम्परा भारत के धार्मिक जीवन की हमेशा बड़ी विशेषता रही है। फ्रांसीसी दार्शनिक वाल्तेयर के महान् कथन– ''हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पांऊ फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा'' को हमें अपनाना आवश्यक है। यह कथन दैनिक समाचार पत्र ''राजस्थान पत्रिका'' में हर रोज छपता आया है।

जिस धर्म में हम पैदा हुए, पले, उसे समझा व पाला, उसके कई धर्म पालक आज गलत कुरीतियों में फंसे हुए हैं एवं कई तरह के ढ़ोंग, पाखंड व गैर जिम्मेदारी हरकते करते हैं व अफवाएं फैलाते हैं, उनकी वजह से हम हैरान व दुःखी हैं। आज जब मानव ने इतनी तरक्की करली है कि वह अन्य ग्रहों की जमीन पर पैर रख रहा है फिर भी हम कई बार पाषाण युग एवं आदि मानव जैसी हरकतें करते हैं। धर्म को सही मायने में नहीं समझने की वजह से मानव ने मानव का जितना नुकसान किया है शायद ही कोई अन्य कारण से हुआ होगा। इसका कारण यह है कि अधिकांश इंसान (चाहे वे किसी भी धर्म के हों) धर्म का सही अर्थ नहीं जानते हैं।

हम जो लिख रहे हैं वह कई महान् धर्मात्माओं, धर्म गुरूओं एवं अन्य सफल इंसानो द्वारा लिखा जा चुका है। हमारी कई बातें, धारणायें, सुझाव व सोच कई लोगों के गले नहीं उतरेगी । वे हमें गैर जिम्मेदार समझेंगे, हमारी बुराई करेंगे व हो सकता है कि हमें सतायें भी, परन्तु हमें उसकी कोई खास परवाह नहीं है क्योंकि हमारा असली धर्म व कर्म तो यही है कि हम गलत कार्य, कर्मकाण्ड एवं पोपलीलाओं को रोकें। यदि एक व्यक्ति ने भी इस बात को समझ लिया तो हमारा लक्ष्य पूरा हो

जायेगा क्योंकि उस एक की भी कोई न कोई एक तो सुनेगा ही। अगर कोई नहीं सुनेगा तो भी कोई बात नहीं, हमारी आत्मा को तो यह सांत्वना जरूर मिलेगी कि हमने हमारा धर्म निभाया है और धर्म को समझने की कोशिश की है व जीया है। इस कामयाबी के अलावा ज्यादा कुछ चाहिए भी नहीं। वैसे हमारा पूरा भरोसा है कि यह प्रयास बेकार नहीं जायेगा क्योंकि हमारा ईमान, धर्म, अंतःकरण पाक है व भगवान हमारे साथ है।

हमारी तो आप सबसे खास अरदास यही है कि आप अपने धर्म को सही से समझे एवं उसी में जीते हुए अपना व औरों का कल्याण करें। इस भावना के अलावा ना कोई धर्म, कर्म व शिक्षा है। हर मानव के प्रति करूणामय भावनायें रखना, उसकी भावनाओं व आस्थाओं का अपने धर्म के बराबर दर्जा देना एवं उनके अच्छे कर्मो में विश्वास रखना ही सही धर्म व कर्तव्य है। घृणा, हिंसा, ईर्ष्या व घंमड ही सबसे बड़ा अधर्म व पाप है।

आज पूरे विश्व में दुविधा यह है कि हर धर्म में कुछ गलत प्रथायें आ गई हैं एवं कई अच्छे पढ़े लिखे लोग भी धर्म के कुप्रचारकों में शामिल हो गये हैं। इन कमियों को उजागर करने व उनसे निपटने की कुछ कोशिशें हमने की है। धर्मों के गूढ़ विषयों पर हम जैसे साधारण व्यक्तियों द्वारा लिखना कठिन काम है। हमारी थोड़ी बहुत अध्यात्म में रूचि है अतः हमने इस जटिल विषय पर लिखने का प्रयास किया है। हमारा किसी भी सज्जन का मन दुखाने का व नीचा दिखाने का कतई इरादा नहीं हैं। अतः इसमें वर्णित कोई बात अगर आपको अच्छी नहीं लगे तो बुरा मत मानना व हमें माफ कर देना।

हम यह धारणा रखते हैं कि हर धर्म में यह काबलियत जरूर है कि वह मानव को अच्छे रास्ते पर ले जा सकता है, अतः हम प्रत्येक धर्म का आदर करते हैं। यह भी परम सत्य है कि हर मनुष्य की धर्म से सम्बन्धित धारणाएं कुछ अलग होती हैं, वह बदलती भी रहती हैं। यह अच्छी बात है। हमने हमारे अनुभवों के आधार पर टूटे–फूटे शब्दों में धर्म व कर्म के बारे में लिखने का प्रयास किया है ताकि कुछ मार्ग दर्शन करने वाली बातें आप तक पहुँचे। लेखन में कमियाँ जरूर हैं लेकिन हमें पूरा विश्वास है कि आप उन्हें नजर अंदाज करेंगे क्योंकि हम साधारण इंसान ही तो हैं। हम हर धर्म के पैगम्बरों, महान् मानवों व आत्माओ को नमन करते हैं जिन्होनें समय–समय पर नये धर्म चलाये व भटके हुये

इंसानों को सही रास्ता दिखाकर सांत्वना दी व उनका जीवन आनन्दमय बनाया। जीवन को आनन्दमय बनाना ही तो हम सब का प्रथम कर्तव्य एवं हर धर्म का सार तत्त्व है।

इस पुस्तक के लेखन के दौरान माह मार्च, 2020 में कोरोना–19 नामक विश्वव्यापी महामारी भारत में भी आ गई एवं इसने हमें नए तरीके से सोचने को मजबूर कर दिया। हमारी यह प्रार्थना है कि जो लोग इस महामारी में बहुत जबरदस्त काम करते हुए महान योद्धाओं की भूमिका निभा रहे हैं, जैसे डॉक्टर, अस्पताल से जुड़े हुए सब कर्मचारी, पुलिसकर्मी, अन्य कई संस्थाएं व स्वयंसेवक इत्यादि योद्धाओं को भगवान हमेशा खुश व सलामत रखें। हम इन महामानवों को तहेदिल से नमन करते हैं।

आज के समय की इस असामान्य, भीषण महामारी एवं उत्पन्न आर्थिक संकट में एक दूसरे पर विश्वास व वैश्विक सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता है। अगर थोड़ी भी असहिष्णुता व राष्ट्रवादी अलगाववाद का भाव हुआ तो कोई भी छोटा सा देश व किसी भी देश का एक मानव पता नहीं कौनसे बटन का इस्तेमाल करके ना सिर्फ चुपचाप हमारी पूरी एकान्तता (Privacy) की जानकारी हासिल करले एवं हमें भंयकर संकट में डाल दे, लाचार बना दे एवं हमेशा के लिये खत्म कर दे। पूरे विश्व, मानव व प्रकृति के सुन्दर भविष्य व अस्तित्व के लिये हमें वैश्विक एकजुटता (Global Solidarity) व अध्यात्मिक मय आचार शास्त्र (Ethics combined with spirituality) का पाठ युद्ध स्तर पर पढ़ना–पढ़ाना होगा।

मेरे बहुत से साथियों ने सटीक परामर्श व सहायता करते हुए कई तथ्यों का विस्तार से वर्णन करने में मदद की है। इनमें सर्वश्री डॉ. बजरंग लाल शर्मा, डॉ. लक्षमान सिंह राठौड, मेजर जनरल जसबीर कोर, वी.एस. एम (से.नि.), डॉ. संतोष कुमार नवीन, डॉ. रमेश शर्मा, डॉ. ओ.पी. गुप्ता, मनीराम सारण एवं श्री राजेश विनायक प्रमुख हैं।

इस लेखन में मेरे अनुज श्री रामनिवास मेहता, आर.ए.एस. ने जो मदद की वह शब्दों में वर्णन नहीं की जा सकती। मैं उनके इस सहयोग के लिए ऋणी रहूँगा।

श्री युवाल नोआ हरारी, विश्व इतिहास के विशेषज्ञ एवं अंतराष्ट्रीय बेस्टसेलर ''सेपियन्स, मानव–जाति का संक्षिप्त इतिहास'' के लेखक ने

अपनी पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर जो निम्न पंक्तियाँ लिखी हैं वह हमारी प्रेरणा का एक मुख्य स्त्रोत है :–

''हमारे विश्वास (आस्था) चाहे जो भी हों, लेकिन मैं हम सभी को हमारी दुनिया के बुनियादी आख्यानों (वृतांत) पर सवाल उठाने के लिए, अतीत की घटनाओं को वर्तमान के सरोकारों (चिंताजनक बातें) से जोड़कर देखने के लिए और विवादास्पद मुद्दों से ना डरने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ।''

श्री युवाल हरारी की उक्त पंक्तियों को इस पुस्तक में उद्धरित करने के लिये उनके द्वारा दी गई अनुमति व उनके द्वारा हमारे लिए भेजी गई शुभकामनाएं पाकर हम धन्य हो गये हैं।

हमारे सहायक श्री भागचन्द बलोदा, ग्राम–मुरलीपुरा, तहसील–शाहपुरा, जिला जयपुर, एवं श्री श्रीनिवास स्वामी, निवासी–सेपटों की ढ़ाणी, रणजीतपुरा, तहसील– किशनगढ़–रेनवाल, जिला–जयपुर की सराहनीय भूमिका रही है, वे धन्यवाद के पात्र हैं।

ले.जनरल (डॉ) शिवराम मेहता
(सेवानिवृत्त)
20/15, भृगु पथ, मानसरोवर
जयपुर, राज0, 302020
मो.नं.– 9413286502
ईमेल–mehtashivram29@gmail.com

दिनांक 28 जुलाई, 2020

विषय–सूची

1.	धर्म क्या है ? धर्म की परिभाषा	**1**
2.	विश्व के मुख्य धर्म व पंथ : उनकी उत्पत्ति, जरूरत व विशेषताएँ	**11**
3.	एकेश्वरवाद, बहुदेवतावाद व मूर्तिपूजा	**19**
4.	विविध धर्म व सम्प्रदायों के महात्माओं के विचार	**25**
5.	भोला मानव, धर्म, गुरू व भगवान	**37**
6.	धर्म, पूजा–पाठ व भक्ति में आये ढोंग, अवैज्ञानिक तथ्य व विवेकहीनता	**48**
7.	धर्म व राजनीति	**54**
8.	विज्ञान, धर्म और हमारा भविष्य	**57**
9.	जनसामान्य एवं लोक सेवको का धर्म	**69**
10.	धर्म की असली सीख–प्रसन्नता एवं शान्ति	**74**
11.	अन्तिम बात	**77**

अध्याय

1

धर्म क्या है? धर्म की परिभाषा

धर्म की नींव-कर्तव्य,सेवा, आध्यात्मिकता, भक्ति, सही आचरण व ध्यान

धर्म धृत धातु से बना है जिसका अर्थ होता है धारण करना। धारणाओं, जीवन सम्बन्धी विचारधाराओं एवं शैलियों को धारण करके हम जीवन यापन करते हैं, भले ही हमारे में से कुछ लोग पूर्णतया नास्तिक ही क्यों न हों, नास्तिक व्यक्ति की भी कुछ न कुछ आस्थाएं, विचार एवं जीवन मूल्य होते हैं जिनके सहारे वह लोक–व्यवहार करता हुआ जीवन जीता है और समाज में अपनी जगह बनाता है।

धर्म वह विधि है जो प्रकृति, समाज एवं व्यक्ति के बीच सही तालमेल व मधुर संबंध पैदा करती है एवं यह हमें जीवन जीने का सही रास्ता दिखाती है। ये सहारे एवं सिद्धांत भगवान के भौतिक अस्तित्व को नहीं मानने वालों के भी होते हैं यानि धर्म तो नास्तिक भी निभाते हैं एवं उनका भी धर्म तो होता ही है। विभिन्न काल में सन्तों, दार्शनिकों व बुद्धिजीवियों द्वारा खोजे और निर्धारित किये गये आदर्शों के अनुसार धर्म मनुष्य को अपना कर्तव्य निभाने व जीवन जीने का प्रशिक्षण देता रहा है। धर्म सुख, शान्ति, आनन्द, देने वाला एवं सर्वांगीण प्रगति का कल्याणमय मार्ग है। जो आचरण हमारे मानवीय

मूल्यों को ऊँचा उठा सके, हमारे रहन–सहन, सोच–विचार और आचरण को मर्यादित करें वह आचारण धार्मिक आचरण कहलाता है।

धर्म के तीन प्रमुख तत्व हैं :–

(i) ज्ञान (अध्यात्म अथवा दर्शन या नैतिकता)

(ii) प्रतीक (उपासना–सेवा, भक्ति)

(iii) कर्मकाण्ड

अध्यात्म धर्म का आन्तरिक तत्व है जबकि उपासना व कर्म बाहरी (ऊपरी,दिखाउ) तत्व हैं। हर धर्म/पंथ का आंतरिक तत्व एक ही है क्योंकि यह ही सबसे महत्वपूर्ण है। यह आन्तरिक तत्व (दर्शन/नैतिकता) हमारा धर्मसम्मत आचरण ही है जो मनुष्य के सात्विक भाव या सकारात्मक विचारों से उत्पन्न होता है। हर कार्य हम विचार के वशीभूत होकर ही करते हैं, अतः जैसा विचार होगा, वैसा ही कार्य मानव करेगा। **विचार उत्पन्न होने/करने का सीधा संबंध– हमारे आत्मिक तत्व (ज्ञान) पर निर्भर रहता है।**

धैर्य, प्रेम व धर्म

धर्म के आंतरिक तत्व का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण धैर्य है। मानव मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाले विचारों को धैर्य से संतुलित किया जा सकता है। धैर्य जीवन जीने की कला और धर्म का मूल लक्षण है। यक्ष का रूप धारण किये धर्म ने युधिष्ठर से कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न पूछे थे जिसमें एक प्रश्न यह भी था कि मनुष्य को हर जगह साथ कौन देता है ? जवाब था कि धैर्य ही मनुष्य का साथी होता है। धैर्य रहित मनुष्य सरलता से जीवनयापन नहीं कर सकता।

मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण बताये हैं :–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धी र्विद्या सत्यमक्रोधे दशकं धर्मलक्षणम्।।

भावार्थ

धैर्य (धृतिः), क्षमा, दम (दमन–अर्थात्–मन, चित और इन्द्रियों से विषयों का सेवन न होने देना), चोरी न करना, शुद्धता (पवित्रता), इन्द्रिय–संयम, बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोध– ये धर्म के दस लक्षण हैं।

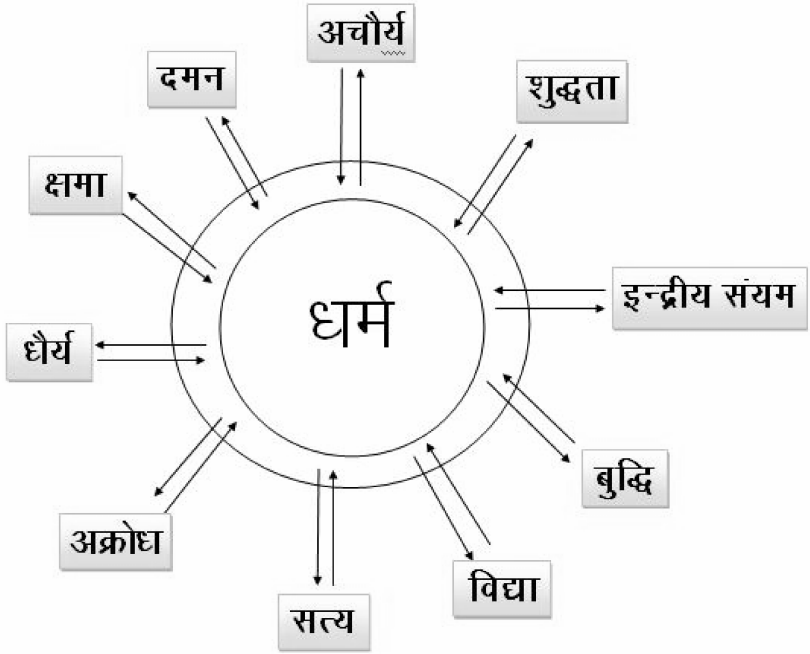

धैर्य को यहाँ पहले स्थान पर रखा गया है। जिस व्यक्ति में धैर्य नहीं, वह धार्मिक नहीं हो सकता और जिस धर्म में धैर्य यानि सहिष्णुता की कमी है, वह धर्म ही नहीं है। धैर्य के बिना धर्म के किसी भी लक्षण का विकास नहीं हो सकता। धैर्य, दया और प्रेम का बहुत गहरा संबंध है। प्रेममय मनुष्य ही धैर्य रख सकता है एवं धैर्यवान ही सच्चा प्रेमी व दयावान होता है। प्रेम का अनंत विकास ही धर्म है और प्रेम का सिमटाव होते ही अधर्म शुरू हो जाता है। धैर्य की कमी से अलग–अलग धर्मों की बातें तो छोड़ें एक ही धर्मावलम्बियों के बीच तलवारें तन जाती हैं। आज मानव समाज के हर क्षेत्र में, चाहे वो

हमारा स्वास्थ्य हो, आपसी सम्बन्ध हो, व्यापार या सेवा हो, जो भी दुर्गति व कलह हो रहा है वह धैर्य के अभाव की बदौलत ही हो रहा है। अतः हर जगह शान्ति, वास्तविक उन्नति/विकास (आन्तरिक एवं बाहरी विकास) व परमानन्द के लिये हमें धैर्यपूर्वक धर्मसम्मत प्रयास करने होंगे। अमेरिकन कवि W.H. Auden ने धैर्य के बारे में बहुत ही सटीक कहा है :– "Perhaps, there is only one cardinal Sin-Impatience, because of impatience we were driven out of paradise, because of impatience we can not return."

भावार्थ

शायद हमारी अधीरता (धैर्य का ना होना) की वजह से ही हम स्वर्ग (अच्छे स्थान) से बाहर निकाले गये थे और अधीरता की वजह से ही हम वहाँ वापस प्रवेश नहीं कर पा रहे हैं।

शेखसादी की भी धैर्य पर बहुत सही राय थी, ''सब्र जिन्दगी के मकसद का दरवाजा खोलता है, क्योंकि सिवाय सब्र के उस दरवाजे की कोई कुंजी नहीं है।''

हर उम्र में, मानव के स्वभाव व चरित्र का सबसे महत्त्वपूर्ण आभूषण धैर्य ही है एवं बुढ़ापे में तो इसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है। धैर्यवान कम बीमार पड़ते हैं और उनकी उम्र भी लम्बी होती है।

धर्म के आवश्यक तत्वों में वफादारी एवं मैत्रीपूर्ण व्यवहार के साथ कर्त्तव्यपालन को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।

किसी भी धर्म के बारे में कभी भी जल्दबाजी में एवं धार्मिक वैमनस्यता फैलाने वाली कोई प्रतिक्रिया देना उचित नहीं है। हर धर्म में कुछ न कुछ अराजकता (उथल–पुथल) आ गई है जिसका उपाय धैर्य पूर्वक उसकी पवित्रता को पुनः स्थापित करना है।

धर्म एवं संवेदना

धर्म का सार व आधार संवेदना (सहानुभूति) है। धर्म ही दूसरों के दुःखों को अनुभव करने व महसूस करने की ताकत देता है। संवेदना से धर्म पोषित होता है एवं मानव जीवन में प्रेम, करूणा व दया पनपती है। आज संवेदना की कमी आ गई है एवं धर्म में आडंबर फैल गया है। आडंबर बाहरी दिखावा है जिसमें अहंकार व स्वार्थ की भरमार है। इस अहंकार व स्वार्थ ने ही हमारे सारे जीवन को अधर्मी बना दिया है।

स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में :–

"To be good and to do good that is the whole of religion."

भावार्थ

भला बनना व भलाई करना, इसमें ही समग्र धर्म निहित है।

सही पूजा, ध्यान, धर्म व आस्तिकता के फायदे

हर धर्म के सही रीति–रिवाज, पूजा पद्धतियों के फायदे जरूर होते हैं यदि वे दूसरे मनुष्य एवं जीव जन्तुओं को कष्ट नहीं दें एवं उनकी प्रकृति का नुकसान नहीं करें।

धर्म के उचित रीति–रिवाज लोगों को आपस में जोड़ने, उत्साहित रखने एवं आपसी प्रेम बढ़ाने और दुःखी व पीड़ित लोगों को शान्ति प्रदान करते हैं व आशावान भी बनाते हैं।

नींव उसी धर्म की दृढ़ होती है जो हर एक को उसके कल्याणमय धारणा व विचार की स्वतन्त्रता देता है।

धार्मिक पूजा के सभी रूपों को स्वीकार करने का रूख ही भारत की संस्कृति व धार्मिक जीवन की हमेशा बड़ी विशेषता रही है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में एक मार्मिक व गूढ़ रहस्यमय श्लोक है :–

श्रृणुते सर्वधर्म सर्वान देवान्नमस्यति।
अनसूयर्जित क्रोधस्तस्य तुष्यति केशवः।।

भावार्थ

ईश्वर उससे प्रसन्न होता है जो सभी धर्मों के उपदेशों को सुनता है, सभी देवताओं की उपासना करता है, जो ईर्ष्या से मुक्त है और क्रोध को जीत चुका है। धर्म के सिर्फ आधारभूत तथ्यों को ही अपनाये। अनावश्यक व सारहीन बातें से नाता ना जोड़े। हठधर्मियों, सम्प्रदायवादियों, पक्षपात करने वालों एवं रूढिवादियों के चक्कर में कभी भी न आवें। सच्चे धर्म में इनके लिए कोई जगह नहीं है। अंधविश्वासों से भी दूर रहें। आज विज्ञान का युग है। अंधे व तर्कहीन होकर झूठे व खोखले धर्म प्रचारकों से दूर रहने में ही फायदा होगा।

उपनिषदों में ब्रहम साक्षात्कार (ईश्वर के दर्शन) के लिए की जाने वाली तैयारी की तीन अवस्थाओं का उल्लेख किया गया है :– 'श्रवण' 'मनन' (Careful study) और निदिध्यासन (ध्यान)। श्रवण का अर्थ –सच्चे गुरू को श्रद्धा से सुनना। धर्मग्रंथों का श्रवण बौधिक तत्व (ज्ञान) से शून्य नहीं है लेकिन यहाँ तार्किक अन्वेषण (जाँच–पड़ताल) की आवश्यकता पर बहुत जोर दिया गया है। ज्ञान अन्वेषण (Investigation) से ही प्राप्त किया जा सकता है, अन्य उपायों से नहीं।

वशिष्ठजी ने कहा है :–

"युक्ति युक्तमुपादेयं वचनं बालकादपि।
अन्यत्तणमित्र ताज्यमप्युकतं पद्मजन्मना।।"

यानी बच्चे की भी बात यदि युक्तियुक्त (उचित, प्रमाणित) हो तो मान लेनी चाहिए और अयुक्तियुक्त (Inappropriate) बात यदि ब्रह्मा की भी हो तो त्याग देनी चाहिए। श्रवण को ज्ञान से जरूर परखें।

सार यह है कि गलत बात, विचार, आज्ञा, संदेश, उपदेश चाहे कितने ही बड़े गुरू व धर्म प्रचारक का हो उसे अपने मनन द्वारा एक दम त्याग देना चाहिए।

धर्म का सबसे सरल व सटीक अर्थ है – दूसरों की मदद करना, प्यार से रहना, भला व दयावान बनना, सच्चाई पर अडिग रहना एवं जीवन के हर क्षेत्र में शुद्धता का आचरण करना।

जो लोग ब्रह्माण्ड, जीवन व अन्य गूढ़ अध्यात्मिक रहस्यों की खोज में रहते हैं उन्हें भी धार्मिक क्रिया–कलापों से कई अध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर ढूंढने में मदद मिलती है। कई लोग जब साथ मिलकर, ईश्वर की प्रार्थना करते हैं तो उस दौरान उनमें से ज्यादातर लोग शांत व सकारात्मक होकर, भावात्मक सुख की अनुभूति करते हुये आनन्दमय हो जाते हैं। यह स्थिति एक तरह की ध्यान अवस्था जैसी होती है। ध्यान से मनुष्य जीवन में जो फायदे होते हैं उसकी वैज्ञानिक पुष्टि भी हो रही है। सामूहिक भक्ति व पूजा–पाठ के दौरान भाईचारा, गरीबों की मदद व विश्व कल्याण के भाव भी पैदा होते हैं जिससे उस जगह का पूरा माहौल व वातावरण सकारात्मक स्पंदन (Positive Vibration) भाव से भर जाता है।

धर्म व अन्य सद्‌गुण

कितना ही बड़ा व ज्ञानी इंसान हो अगर वह सच्चे धर्म का पालन नहीं करता है तो उसका पूरा ज्ञान व्यर्थ है। धर्म की पालना से ही ज्ञान, अमरत्व, चिर शान्ति व परमानन्द प्राप्त हो सकता है। धर्म से ही दुःख–दर्द दूर होते हैं एवं मानव हर क्षेत्र में निपुण होकर आजाद रह सकता है। धर्म के बिना जीवन सार्थक नहीं हो सकता। यह ही एक ऐसा साधन है जो मानव को सही अस्तित्व दिलाता है एवं उसके मस्तिष्क को प्यार, सत्य, दया, सेवा भाव, शांतचित्तता व चिर प्रसन्नता दे सकता है जिसकी चाह हर जीव रखता है।

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये जब लग घट में प्राण।।

अध्यात्म (Spiritual Matters) नैतिकता व धर्म

धर्म वह साधन है जो हमारी अध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों का ध्यान रखते हुये जीवन को सजीव करके पूरे समाज को संगठित करता है। यह इंसानी मापदण्डो व मानवीय आदर्शों की एक ऐसी व्यवस्था है जो एक अलौकिक गुण वाली शक्ति (ईश्वर) में विश्वास होने व नहीं होने पर भी पूर्ण कार्य कर सकती है । विभिन्न धर्मों, पंथो व विश्वासों ने मानव–जाति को इकट्ठा रखने के लिए ऐसा ही कार्य किया है जैसा कि बड़े–बड़े साम्राज्यों एवं दौलत की शक्ति से होता आया है लेकिन आज प्रचलित कई धर्म के पथ भ्रष्ट उपदेशक लोगों को जोड़ने की बजाय उन्हें आपस में लड़ाते हैं व सामाजिक सौहार्द्र (मित्रता) को भी बिगाड़ते हैं। इस तरह की गलत प्रवृतियों को धर्म के मूल तत्व– ''अहिंसा एवं प्रेम'' को अपनाकर ही ठीक किया जा सकता है। कोई भी धर्म, शक्ति व ज्ञान भयानक हो सकता है यदि उसमें आध्यात्मिकता व नैतिकता की कमी है। बौद्धिकता एवं नैतिकता की कमी गरीबी से भी बड़ा अभिशाप है। वही धर्म अपनाने लायक होता है जो उचित–अनुचित के विचार (Ethics) की ओर अग्रसर हो।

सत्य व धर्म

सत्य की रक्षा करना व सत्यता के साथ अपना कर्तव्य करते रहना ही धर्म है एवं ऐसे कर्मों से ही जीवन में संतुलन रहता है। गाँधीजी ने तो सत्य को ही ईश्वर माना था।

सत्य का महत्त्व यह है कि उत्तम सत्य धर्म अपनाने से ही देश और समाज का हित होता है।

महान लेखक लियो टॉलस्टॉय ने अपनी पुस्तक " परमेश्वर का राज्य आपके भीतर है" (The Kingdom of God is within you) के आखिरी पृष्ठ में सत्य के बारे में यह लिखा है :–

"The sole meaning of life is to serve humanity by contributing to the establishment of the kingdom of God, which can only be done by the recognition and profession of the truth by every man."

भावार्थ

जीवन का एक मात्र लक्ष्य ईश्वर के राज्य की स्थापना में योगदान देकर मानवता की सेवा करना है जिसे प्रत्येक व्यक्ति सत्य की मान्यता और वृति से ही कर सकता है।

गुरूदेव नानक ने सत्य के बारे में इस प्रकार लिखा है :–

सच घरू खोजि लहे साचा गुर थानो।
नानक साचा साचै शचा गुरूमुखि तरीऐ तारी।।

भावार्थ

जिसे सत्य का आधार गुरू मिल जाता है, वह सत्य स्वरूप परमात्मा को खोज लेता है। गुरू नानक कहते हैं कि जो पुरूष सत्य में रमता है, वही सत्य है और वही गुरू के सहारे संसार – समुद्र को पार करता है।

सत्य ही एक ऐसा गुण व प्रवृति है जो हमें जीवन में स्वतंत्रता व खुशी की गारन्टी दिला सकता है एवं यह आपकी क्षमता के अन्दर है। अन्य कई चीजे, घटनायें, धारणायें आपके नियंत्रण में नहीं होती परन्तु सत्य का पालन हमेशा आपके वश में होता है एवं वह ही आपका असली धर्म व सद्गुण है।

धर्म वह ही है जो हमें सत्य की राह पर ले जाये। जो कार्य व विचार हमें सत्य से विमुख करते हैं वे अधर्म हैं एवं सृष्टि के विनाश के मुख्य कारण है।

स्वयं और सारे जगत की शांति, कल्याण व भगवत प्राप्ति के लिये धर्म ही हमेशा सर्वोच्च शक्ति है और रहेगी।

ooo

अध्याय

2

विश्व के मुख्य धर्म व पंथ : उनकी उत्पत्ति व विशेषताएँ

हर इंसान की सामाजिक पृष्ठभूमि, प्रवृत्ति व मनोदशा अलग–अलग होती हैं इसलिए अलग–अलग विश्वास व धर्म होना भी स्वाभाविक है। इसमें कोई बुराई भी नहीं है। एक ही तरह की सोच का चोला वांछनीय भी नहीं है। वैसे भी विविधता प्रकृति का नियम है। पारसी, यहूदी, बौद्ध, जैन, ईसाई, इस्लाम व सिख इत्यादि धर्म समय–समय पर उस वक्त की खास सामाजिक कमजोरियों को सुधारने व समय की जरूरत के लिए बने थे।

जब भी स्वार्थी, हठी, अज्ञानी धर्म प्रचारक (पंडित, मौलवी, पादरी एवं नकली गुरू) एवं अत्याचारी शासक धर्म की मर्यादा को धूमिल करने पर उतर आते हैं और जब इनके दुष्कर्म चरम सीमा पर पहुँच जाते हैं तो कोई महान ज्ञानी संत व धर्म प्रचारक अवतरित होता है और वह पनपती हुई गलत धारणाओं तथा बुराईयों को सुधारने का प्रयास करता है। इस संबंध में श्रीमद्भगवद्गीता में यह महत्वूपर्ण तथ्य वर्णित है :–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। गीता 4–7,8

अर्थ

हे भारत (अर्जुन)! जब–जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब–तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ। साधु पुरूषों का उद्धार एवं पापकर्म करने वालों का विनाश करने के लिये और धर्म की उचित स्थापना करने के लिये मैं युग–युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

सनातन हिन्दू धर्म में भी समय–समय पर नई विचार धाराएं एवं विश्वास यथा द्वैत, शंकर का अद्वैत, शैव, वैष्णव, ब्रह्म समाज व आर्य समाज इत्यादि उपजे हैं।

सभी ऐतिहासिक धर्मों का केन्द्र कुछ आधारभूत अध्यात्मिक अनुभव रहे हैं जो कहीं कम और कहीं अधिक स्पष्टता के साथ व्यक्त हुए हैं। अगर किसी भी धर्म के विचारों को समझना है तो हमें उस वक्त के वातावरण को जानना होगा जिसमें अमुक धर्म व उसके विचार बने थे व प्रचलित थे। किसी भी प्राचीन धार्मिक ग्रंथ व रचनाओं के हर एक पहलू को आज के मापदण्डों से नहीं मापना चाहिये। यद्यपि हर धर्म के मूलतत्व तो करीब–करीब एक ही है। धर्म अध्यात्मिक शक्ति का प्रवाह है एवं यह प्रवाह भी समय–समय पर अपनी गति बदलता रहता है। अतएव देखा जाता है कि कुछ समय के उपरांत कई धर्मों के पुराने सम्प्रदाय निर्जीव हो जाते हैं एवं नव–जीवन के जोश से भरे नवीन सम्प्रदायों का आरम्भ होता है। बुद्धिमान लोग उसी सम्प्रदाय का सहारा लेते हैं एवं अपनाते हैं जिसमें से सही जीवन धारा प्रवाहित होती है।

कुछ पुराने धार्मिक सम्प्रदाय अजायब–घर में सुरक्षित रखे हुए किसी समय के भीमकाय पशुओं के कंकाल के समान है तो भी, इन

प्राचीन सम्प्रदायों का हमें उचित आदर करना चाहिए। हमें पुराने धर्मों की रीति–रिवाजों, सिद्धान्तों एवं शब्दों में आज के अर्थ देखने से बचना चाहिये। हाँ, हम इस तथ्य को भी नकार नहीं सकते कि मानव की कुछ समस्यायें ऐसी हैं जो सभी युगों में एकसी रही हैं जैसे कि ईश्वर कौन है, कैसा है व कहाँ रहता है इत्यादि? हमें हमारे अध्यात्मिक ज्ञान के कुछ पहलुओं को उजागर करके उन्हें हमारे जीवन पर लागू करना होगा। दुनिया के महान दार्शनिक सुकरात ने कहा था ''हमें मिल–जुलकर उस भण्डार को खंगालना होगा जिसे दुनिया व हर धर्म के मनीषी हमारे लिये छोड़ गये हैं, और यदि ऐसा करते हुये हम एक दूसरे के मित्र बन जाते हैं तो यह बहुत ही खुशी की बात होगी।''

पुराने समय में जब लोग वैदिक एवं अन्य धर्मों की एक ईश्वरवाद की धारणा को भूलने लग गये थे तो पारसी धर्म की उत्पत्ति हुई और उसमें एक ही ईश्वर /देवता– अहुरा मज्दा (Ahura Mazda) की पूजा के महत्व पर जोर दिया। बाद में जब वैदिक धर्म में अंधाधुन्ध धार्मिक उत्सव, जानवरों की बलि, छुआछूत, भयंकर जातिवाद उभरने लगा तो बौद्ध धर्म की उत्पत्ति हुई जिन्होंने जानवरों की बलि को बंद करने पर जोर दिया एवं जातिवाद को नकारा। जब यहूदियों के पादरी बहुत अभिमानी व हठी हो गये तो यीशु (Jesus) आये और उन्होंने यहूदियों को पवित्र करने का काम किया। जब ईसाई धर्म में अंधविश्वास और वहम नजर आया तो मुस्लिम धर्म की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार हर नये धर्म व पंथ ने, पुराने धर्म में आयी कुप्रथाओं को सुधारने का प्रयास किया व इसी कारण अलग–अलग धर्म बने। इसी प्रकार हिन्दू धर्म में कुरीतियों से दुःखी होकर, इस वैदिक धर्म के भी कई नये धर्म/पंथ जैसे कि आर्य समाज, सिख समाज इत्यादि बने।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अपनी पुस्तक ''मेरी कहानी'' में धर्म क्या है, नामक अध्याय में विभिन्न धर्मों में आई कुरीतियों की बहुत निंदा की है और उनको जड़ मूल से मिटा देने की इच्छा जाहिर की है। उन्होंने लिखा है – ''मुझे तो लगभग हमेशा यही लगा कि अंधविश्वास और प्रगति विरोध जड़ (प्रमाण–रहित) सिद्धान्त, कट्टरपन,

अन्ध श्रद्धा और शोषणनीति (न्याय अथवा अन्याय) से स्थापित स्वार्थों के संरक्षण का ही नाम धर्म है।" मेरी कहानी– धर्म क्या है? (पृष्ठ 524)

महात्मा गाँधी भी हिन्दू धर्म में प्रचलित त्रुटियाँ जैसे कि अस्पृश्यता व जातिवाद से काफी दुःखी थे। इसी वजह से उन्होंने कहा था –

"Untouchability is a soul destroying sin. Caste is a social evil"

भावार्थ

अस्पृश्यता एक पाप है जो आत्मा को नष्ट कर देता है। जाति व्यवस्था एक सामाजिक बुराई है।

गाँधीजी ने अन्य धर्मों का गहरा अध्ययन किया था एवं वे सभी धर्मों की इज्जत करते थे।

यहाँ, यह बात स्पष्ट है कि वैदिक (हिन्दू) धर्म को छोड़ कर हर धर्म का प्रवर्तक/ संस्थापक मानव ही था जिसे हम देवता/प्रभु का दूत मानते हैं।

हिन्दू धर्म

सनातन धर्म अपने मूल रूप हिन्दू धर्म के वैकल्पिक नाम से जाना जाता है। सनातन का अर्थ शाश्वत– यानि हमेशा बने रहने वाला, अर्थात जिसका न आदि है, न अंत। सनातन धर्म के अनुसार ईश्वर एक महान अलौकिक शक्ति है, जो निराकार है परन्तु भक्ति, ध्यान की एकाग्रता एवं धर्म की साधना के लिए विभिन्न भौगोलिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों के कारण ईश्वर का साकार रूप भी स्वीकार किया गया है। इसी कारण अनेक प्रकार के देवी, देवताओं की मूर्ति तथा मन्दिर बनाकर पूजा करते हैं।

तुलसीदासजी ने लिखा है :–

"जाकि रही भावना जैसी, प्रभू मूरत दीखी तिन वैसी"

सनातन धर्म के मुख्य ग्रंथ वेद और उपनिषद हैं। जिनके अनुसार कर्मयोग, ध्यानयोग, भक्तियोग और राजयोग की साधना करते हुये, धैर्य धारणा और ध्यान के संगम से परमपिता ईश्वर की शक्ति की अनुभूति की जा सकती है।

हिन्दू धर्म को परिभाषित करना बेहद जटिल काम है क्योंकि इसका कोई एक संस्थापक/ पैगम्बर व संगठित मन्दिर/मठ नहीं है। यह प्राचीन ज्ञान का भण्डार है। इसका दार्शनिक लचीलापन एक बहुत अनूठा तत्व है जो किसी भी अन्य धर्म में नहीं है। एक हिन्दू किसी मन्दिर या पंडित से जुड़े बिना भी निष्ठावान हिन्दू हो सकता है। वह किसी भी देवी–देवता की अपने मनचाहे तरीके से पूजा कर सकता है। एक हिन्दू कभी भी मन्दिर नहीं जाकर, कोई भी व्रत न करके व कोई भी हिन्दू धर्म की रस्म की पालना न करके भी अपने आप को सच्चा हिन्दू मान सकता है। इस धर्म में कोई कठोर नियम या बन्धन नहीं हैं। अज्ञयवादी (Agnostic) व नास्तिक (Atheist) इंसान भी अपने आप को हिन्दू कह सकता है क्योंकि नास्तिकता भी हिन्दू दर्शन का एक अंग है।

अगर हम निष्पक्ष भाव से विचार करें तो हमें ज्ञात हो जायेगा कि हिन्दू धर्म में जो सूक्ष्म एवं गूढ़ विचार, आत्म निरीक्षण, दया, खुलापन, सहिष्णुता, स्वतंत्रता और लचीलापन है व अन्य धर्मों को मानने, इज्जत देने की हिम्मत है यह दूसरे धर्मों में नहीं है। हिन्दू लोग यह भी मानते हैं कि युगों–युगों का ज्ञान और ईश्वरतत्व सिर्फ एक धर्म ग्रंथ में नहीं समा सकता, इसलिए हिन्दू धर्म में अनेक धर्म ग्रंथ हैं और हिन्दुओं को इन धर्म ग्रंथों में से किसी माध्यम को भी अपनाकर सत्य खोजने की स्वतंत्रता है।

हिन्दू धर्म की यह भी विशेषता है कि यह धर्म किसी भी तरह की निश्चितता का दावा नहीं करता। इस धर्म के मूल तत्त्व में ऐसा नहीं है कि यदि आप ऐसा–ऐसा करोगे या नहीं करोगे तो ही स्वर्ग/नरक के अधिकारी होंगे। इस धर्म में तो सृष्टि की उत्पत्ति व रचना से चकित होकर, रचयिता की सर्वव्यापकता पर भी स्पष्ट रूप से संदेह व्यक्त किया गया है। उपरोक्त बातों का वर्णन 3500 वर्ष पुराने ऋग्वेद के नासदीय सूक्तों से साफ–साफ जाहिर होता है। इन सूक्तों को सृजन सूक्त (Creation hymn) के नाम से भी जाना जाता है।

"को अद्धा वेद क इह प्र वोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः।
इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।।"

ऋग्वेद– 10–129–6,7

भावार्थ

इस सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति कैसे और कहां से हुई, यह कोई नहीं जानता, क्योंकि उस रहस्य को जानने वाले विद्वानों की उत्पत्ति भी बाद में हुई। यह सृष्टि जिससे उत्पन्न हुई वह इसे धारण करता भी है या नहीं इसको वही विद्वान जानता है जो परम आकाश में रहता हुआ इस सृष्टि का अध्यक्ष है, सम्भवतः वह भी नहीं जानता हो।

इन श्लोकों से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दू धर्म ही एक ऐसा धर्म है जिसमें भगवान के बारे में भी आधारभूत सवाल किया जा सकता है। विश्व के अन्य धर्मों में काफी कड़े सिद्धांत हैं एवं उनमें ऐसे प्रश्न करने वालो को बहुत कष्ट झेलने पड़े हैं। हिन्दू धर्म ही दुनिया का ऐसा धर्म है जो अपने आपको एक मात्र सच्चा धर्म होने का दावा नहीं करता एवं ईश्वर प्राप्ति व भक्ति के सभी रास्तों व धर्मों को सही मानता है। बहुत से हिन्दू खुले दिल से दूसरे धर्मों के पूजा– पाठ में शामिल होते हैं व उनके धार्मिक प्रतीकों का सम्मान करते हैं। स्वामी विवेकानन्द ने "पार्लियामेंट ऑफ वल्डस रिलिजन्स" 11 सितम्बर, 1893

को दिए गए अपने भाषण में जो कहा था उन शब्दों ने हर धर्म के अनुयायियों को हिलाकर रख दिया था :–

"मुझे उस धर्म से जुड़ा होने पर गर्व है जिसने विश्व को सहिष्णुता (Tolerance) और सार्वभौमिक स्वीकृति (Universal acceptance) की सीख दी है। हम न सिर्फ सार्वभौमिक सहिष्णुता में विश्वास करते हैं बल्कि सभी धर्मों को सच्चे धर्म के रूप में स्वीकार करते हैं।"

विश्व के अन्य धर्मों का मानना है कि सिर्फ उनके धर्मों के अनुयायी ही भगवान को प्राप्त कर सकते हैं। कई धर्मों के अनुसार जो उन धर्मों को नहीं मानते हैं उनके लिए पाप मुक्ति की कोई संभावना ही नहीं है एवं वे कभी भी सद्गति प्राप्त नहीं कर सकते और न ही स्वर्ग में जा सकते हैं। हिन्दूवाद के अनुसार, भगवान की भक्ति के सभी रास्ते सही हैं। हमने भी कई हिन्दू धर्मों के मंदिरो व संस्थाओं में सभी धर्मों के रीति –रिवाजों को पालने, अन्य धर्मों के त्यौहारों का आदर/सत्कार करते एवं उनके धर्म स्थलों में हर अन्य मुख्य धर्मों के प्रतीकों को भी पूजते देखा है। ऐसा वातावरण अन्य धर्मों/धर्मावलंबियों में नहीं है। महात्मा गाँधी ने हिन्दू धर्म की इस विशिष्टता की सराहना करते हुए लिखा था – "कट्टरता से इसकी स्वतंत्रता मुझे बहुत ज्यादा सम्मोहित (Pleasing) करती है क्योंकि यह अपने अनुयायियों को आत्म–अभिव्यक्ति (Expression) की अधिकतम सम्भावना प्रदान करता है।"

हर धर्म में बहुत शक्ति है लेकिन संकीर्णता की वजह से एवं कुछ लोगों की गलत सोच के कारण धर्म से कल्याण की अपेक्षा हानि अधिक हुई है। दुनिया में बहुत से महापुरूष हुये हैं जो ईश्वर में बिल्कुल विश्वास नहीं करते थे लेकिन वे लोग धर्म को हम सब की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह समझते थे और उन्होंने जगत का काफी कल्याण किया है। हर धर्मावली को उदार बनना पड़ेगा और जैसे ही धर्म उदार बनेगा, धर्म की कल्याणकारी शक्ति कई गुणा बढ़ जाएगी।

जिस दिन व्यक्ति सच्चे अर्थों में धर्म के मूल मर्म को समझ जाएगा, उस दिन अध्यात्मिक जीवन की ओर उन्मुख हो जाएगा। धर्म का आचरण करना अपने आप में एक तरह का तप है। श्री रामचरितमानस में गोस्वामी जी कहते हैं –

शिवि दधीच हरिचंद नरेसा। सहे धरम हित कोटि कलेसा।।

अर्थात शिवि, दधीचि, हरीशचन्द्र आदि ने अपने जीवन में धर्म का पालन करने के लिए अनेक कष्ट सहे, धर्म के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया ।

यह बहुत ही सरल एवं समझने वाली बात है कि जीवन में अहंकार और स्वार्थ जितना बढ़ता है, उतना ही हम धर्म के दूर होते हैं। अहंकार व स्वार्थ जितना कम होगा, उतना ही हम धर्म के नजदीक होते हैं। आज के इस समय में जब धर्म व्यापार बनता नजर आता है, हमें धर्म के इसी मर्म को स्मरण करने की जरूरत है।

○○○

अध्याय

3

एकेश्वरवाद, बहुदेवतावाद व मूर्तिपूजा

अध्यात्मिक जीवन किसी भी स्थापित धार्मिक जीवन शैली से महान होता है।

मानव ने ईश्वर, अनेक देवी देवताओं, जानवर, पहाड़, पेड़ व प्रकृति की पूजा/उपासना के भिन्न–भिन्न तरीके क्यों अपनाये, इस रहस्य को समझने के लिये मानव जीवन से जुड़े हुये कुछ बुनियादी सवालों को समझना होगा जैसे कि ईश्वर क्या है ? क्या उसके कई रूप हो सकते हैं ? हम विभिन्न तरह की पूजा पाठ क्यों करते हैं, भगवान को क्यों मानते हैं या क्यों नहीं मानतें हैं व अध्यात्म से क्यों जुड़ना चाहते हैं इत्यादि ?

मानव सभ्यता के शुरूआती समयकाल में जब मानव छोटे–छोटे समुदायों में रहता था तो उसने महसूस किया एवं उसे डर भी लगा कि प्रकृति में बहुत ताकत है व प्रकृति कुछ भी कर सकती है, जैसे अचानक तूफान आ जाना, भूकंप आना या भयानक जानवरों द्वारा हमला होना आदि। इस प्रकार वह प्रकृति के विभिन्न रूपों से न केवल डरने लगा लेकिन उनकी पूजा भी करने लगा। इसके बाद धीरे–धीरे मानव विज्ञान के आधार पर इन सब घटनाओं का कारण समझा गया और वह अधिक शक्तिशाली व समझदार बन गया एवं पुराने रीति–रिवाजों को ठुकरा दिया। इसके बाद अच्छे समझदार मानवों को शक्तिशाली मानकर उनकी पूजा होने लग गई एवं इस प्रकार

देवी–देवता को मानव मानने की शुरूआत हुई । पुराने जमाने में बहुत से धर्म स्थानीय एवं विशिष्ट होते थे एवं उनके अनुगामी देवी–देवताओं और आत्माओं में विश्वास रखते थे। यह प्रथा अब भी कई पंथों में प्रचलित है। अनेक देवी–देवताओं, दैत्यों व मूर्तिपूजा करने वालों व जीववादियों में से बहुतों ने यह भी माना है कि समूची सृष्टि का नियंत्रण करने वाली एक ही महान सर्वोच्च सत्ता है एवं अन्य सारे देवता/शक्तियां उसी के अधीन हैं।

अनेक देवताओं में विश्वास करने वाले अक्सर उदार व ग्रहणशील होते हैं एवं उनकी इस अन्तर्दृष्टि व दूरगामी धार्मिक सहिष्णुता की वजह से यह लोग अन्य धर्मों के अस्तित्व और सामर्थ्य को आसानी से स्वीकार करते आये हैं। एक ओंकार को विभिन्न रूप में देखने वाले लोग ज्यादा सहिष्णु होते हैं। बहुदेववादियों ने कई साम्राज्यों को जीतने के बाद भी अपने अधीन विभिन्न मतावलम्बियों का धर्मान्तरण करने की विशेष कोशिश नहीं की। यह रूख एकेश्वरवाद में कम देखा गया है। वे अन्य धर्मावलंबियों, नास्तिकों, अज्ञेयवादियों व काफिरों के प्रति ज्यादा उदार नहीं रहे और परिणामस्वरूप कई बार उन्हें अपनी आस्था को बदलने के लिये मजबूर होना पड़ा। वे अत्याचार करते आये हैं एवं उनका धर्म परिवर्तन कराते रहे हैं।

विश्व के महान्तम व्यक्तियों ने जिन्होंने हमारे सोचने समझने के दायरे को तार्किक, वैज्ञानिक एवं सटीक बनाया उनकों तत्कालीन एकेश्वरवाद विचारधारा के लोगों ने तंग किया और कइयों को तो मौत के घाट भी उतार दिया था। गैलेलियों की महान खोज को धर्म विरोधी मानकर, धर्म के ठेकेदारों ने उन्हें आजीवन कारावास की सजा दे दी थी। कॉपरनिकस पॉलैण्ड के खगोलशास्त्री थे जिन्होंने सिद्ध किया था कि पृथ्वी ब्रह्माण्ड के केन्द्र में नहीं है और उन्होंने ही यह बताया था कि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई एक दिन में चक्कर पूरा करती है और सूर्य का चक्कर एक वर्ष में पूरा करती है। इटली के महान गणितज्ञ, खगोल वैज्ञानिक एवं दार्शनिक जिओर्डानौ ब्रूनों (1548–1600 ई0) जिन्होंने कॉपरनिकस के विचारों का समर्थन किया था (पृथ्वी सूर्य

के चक्कर लगाती है एवं सूर्य पृथ्वी के चक्कर नहीं लगाता) उनको कैथोलिक चर्च ने अफवाह फैलाने के आरोप में मृत्युदण्ड देते हुए जिन्दा जला दिया गया था। अल्बर्ट आइंसटीन ने जब हिटलर के नाजी कानूनों को गलत बताया तो जर्मन राष्ट्रवादियों ने उन्हें जर्मनी का गद्दार कहकर अपमानित किया था और उनको दूसरे देश में शरण लेनी पड़ी थी। यह सब धर्म के ठेकादारों की अज्ञानता, तानाशाही एवं गलत सोच के परिणाम थे।

आज भी देखा जाये तो ऐसी घटनाओं में खास कमी नहीं आई है। दिसम्बर, 2019 में जब पहली बार चीन के डॉक्टर ली वेनलियांग ने कोरोना वायरस के बारे में अपने निजी दोस्तों को जानकारी दी एवं सतर्कता बरतने को कहा तो वुहान शहर की पुलिस ने उन्हें अफवाहें फैलाने के आरोप में प्रताड़ित किया एवं इसके बाद डॉक्टर ली ने पुलिस से लिखित में माफी भी माँगी थी। दुर्भाग्यवश थोड़े दिनों बाद ही डॉक्टर ली वेनलियांग कोविड–19 से संक्रमित हो गये और उनकी 7 फरवरी 2020 को मौत हो गई, ऐसा बताया गया। कम्युनिस्ट पार्टी ने उनकी मौत के बाद उनके परिवार से माफी मांगी थी लेकिन उस वक्त तक बहुत देर हो चुकी थी। धर्मान्ध व्यक्तियों एवं राजनैतिक तानाशाहों का वैज्ञानिक शोध के विरूद्ध यह रवैया कब तक चलता रहेगा?

अब समय आ गया है कि हम सब इनके खिलाफ आवाज उठायें और ऐसी व्यवस्था करें कि किसी भी सत्यखोजी (Truth pursuing person) मानव को धर्म के ठेकेदारों एवं राजनैतिक ताकतों द्वारा सताया नहीं जावे क्योंकि इन्होंने ही कई ऐसी अवैज्ञानिक धारणाओं को जिनको धर्म का समर्थन था, गलत सिद्ध किया है।

निचोड़ यह है कि यदि कोई कर्तव्यनिष्ठ मानव गलत, अनैतिक व अन्य को नुकसान पहुँचाने वाले कार्य न करता हुआ कोई भी धर्म अपनाता है या नास्तिक भी है तो उसे सच्चा धार्मिक व कर्मयोगी ही मानना चाहिए। सब धर्म अपनी जगह सही है। सब भक्ति के तरीके

सही हैं यदि वे दूसरो के विचारों में दखल नहीं देते हैं या शान्ति भंग नहीं करते हैं या दूसरी विचार धारा के प्रति घृणा और द्वैष भाव जाग्रत नहीं करते हैं। यह ज्ञान ही हमारा मूलमन्त्र होना चाहिए। इस संदर्भ में विष्णु धर्मोंतर पुराण में एक मार्मिक व रहस्यमय श्लोक है–

श्रृणुते सर्वधर्मश्च सर्वान देवानंमस्यति।
अनसूयर्जित क्रोधस्तस्य तुष्यति केशवः।।

भावार्थ

ईश्वर उससे प्रसन्न होता है जो सभी धर्मों के उपदेशों को सुनता है, सभी देवता स्वरूपों की उपासना करता है, जो ईर्ष्या से मुक्त है और क्रोध को भी जीत चुका है।

हर धर्म के सिर्फ आधारभूत तथ्यों को ही अपनायें। अनावश्यक व सारहीन बातों से नाता ना जोड़े। हमें हठधर्मियों, सम्प्रदायवादियों, पक्षपात करने वालों एवं रूढ़िवादियों के चंगुल में नहीं फंसना है।

बहुदेवतावाद क्यों ?

इसका खास कारण यह है कि ऋषि–मुनियों, कई धर्मवलंबियों एवं वेदों द्वारा वर्णित सर्वव्यापी ब्रह्म/ईश्वर/सार्वभौमिक आत्मा (निर्गुण – आकार, गुण और लिंग के बिना) हम जैसे आम मनुष्यों की समझ में आना जरा कठिन है। कुछ मनुष्यों को एक ऐसे ईश्वर/देवता की जरूरत पड़ती है जिसकी वे कल्पना साकार रूप में कर सके। इसलिए मूर्ति के रूप में उसे स्थापित किया गया। इसी वजह से सगुण ब्रह्म का विस्तार हुआ एवं देवी–देवताओं की धारणा पैदा हुई। इस देह वाले रूप को ईश्वर का नाम दिया गया और इसे भगवान का अवतार मान लिया गया। इस देहधारी अवतार की कल्पना को साधारण भक्त के लिये जानना व निकटता का अनुभव होना (उपासना) आसान प्रतीत होता है।

जीवन का अहम् सत्य यह है कि आज जो परम, पूर्ण, असीमित, सही व असंदिग्ध (Undeniable) लगता है, वह कल पूरा अपूर्ण, गलत व अधूरा सिद्ध हो सकता है। कल किसी ने नहीं देखा है एवं कल क्या होगा यह कोई जानता भी नहीं है? अतः मानव को नम्य (लचीला) रहकर भविष्य में होने वाले अनगिनत बदलाव के लिए हमेशा खुलापन रखना चाहिए।

उम्र के साथ हमारे विचारों में बहुत बदलाव आता है एवं हमारी हर विषय की सोच भी बदलते समय के साथ परिवर्तित होती है एवं होनी भी चाहिए। यह भी याद रखना चाहिये कि मानव जीवन में नित नई चुनौतियों आती रहेंगी जिनका पूर्ण समाधान किसी भी पुरानी वैज्ञानिक या धार्मिक पुस्तक से नहीं हो सकता। पुस्तक आधारित धर्म या पंथ तत्कालीन समय के सौ–दो सौ वर्षों तक तो हमारा मार्ग प्रशस्त कर सकती है परन्तु जैसे हमें हमारे देश के संविधान में सत्तर वर्षों में ही 120 संशोधन करने पड़े हैं, वैसे ही भविष्य की आवश्यकताओं एवं चुनौतियों के लिये इन धार्मिक पुस्तकों के भी रिवाईज्ड संस्करण (Revised edition) की आवश्यकता हो तो करना चाहिए। हमें पता है यह कार्य असंभव है, क्योंकि उनमें फेर बदल से कोहराम मच सकता है लेकिन उनमें जो मानव विरोधी भावनाए हैं एवं कई तथ्य वैज्ञानिक आधार पर गलत साबित हो चुके हैं उन पर तो गौर करना ही वाजिब होगा। यह कार्य आपसी प्रेम, भाईचारा, सद्भावना एवं विश्वास जैसे मूल्यों को केन्द्र में रखकर किया जा सकता है एवं इन मूल्यों को समस्त धार्मिक विश्वासों की आधारशिला बनाई जा सकती है।

एक डॉक्टर के नाते में यह बात पूरे विश्वास से कहता हूँ कि वर्ष 1970 में मैंने सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज,जयपुर से एमबीबीएस की जो पढ़ाई पूरी की थी, उन किताबों में लिखी कई बातें अब गलत सिद्ध हो चुकी है। मैं उन पुरानी किताबों के ज्ञान से आज पूरी सही डॉक्टरी नहीं कर सकता। सही डॉक्टर के लिये मुझे लगातार नये शोध पत्रों एवं अनुसन्धानों को पढ़ना पड़ेगा। यही बात

धार्मिक पुस्तकों के संदर्भ में भी सही प्रतीत होती है। इसलिये कोई भी सत्य अंतिम नहीं होता है, बस इतना जरूर है कि इन्सान का इन्सान से प्यार एवं सौहार्द एक अटल सत्य है जिसमें कोई बदलाव नहीं आना चाहिये। इसलिये कोई भी ऐसा धार्मिक विश्वास जो दूसरे धार्मिक विश्वास के अनुयायियों को अविश्वास एवं घृणा से देखता या दिखाता है वह ठीक नहीं है, चाहे वह किसी भी धार्मिक पुस्तक में लिखा गया हो या किसी व्यक्ति द्वारा कहा गया हो।

जीवन बहुत जटिल है अतः यह हमेशा ध्यान रखना चाहिये कि हमारा विरोधी भी अनेक बार सही हो सकता है, अतः अपने गलत विचारों को बदलो। विश्व में कुछ भी अखंडनीय व निस्संदेह नहीं है। सृष्टि की उत्पत्ति रचना एवं सृष्टिकर्ता के बारे में भी ऋग्वेद के नास्दीय सूक्तों में संदेह साफ जाहिर किया गया है। इन सूक्तों को ''सृजन या सूक्त या क्रिएशन हायम'' के नाम से जाना जाता है। ऋग्वेद X, 129–6,7– इनकी व्याख्या हम अध्याय–2 में कर चुके हैं।

ooo

अध्याय

4

विविध धर्म व सम्प्रदायों के महात्माओं के विचार

विश्व की हर पीढ़ी के महामानव एवं वैज्ञानिक हमारे लिए अपार ज्ञान वसीयत के रूप में छोड़ कर गये हैं। हमें उसे समझकर जीवनयापन करना है एवं उसे और बढ़ाकर व सुधार कर भावी संतति के लिए छोड़ना होगा अन्यथा हमारी चेतना को चैन नहीं मिलेगा। जीवन की अंतिम घड़ियों में हमें यह मलाल रहेगा कि दुनिया में हमने वांछित सुधार क्यों नहीं किये? हमने विज्ञान में तो बहुत उन्नति की है लेकिन हमारी आन्तरिक खुशहाली में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई है। इसके साथ–साथ अन्य जीव जन्तुओं को हमने बेहद दुःख दिया है। कईयों का तो अस्तित्व ही हमेशा के लिए समाप्त कर दिया है। आज का गैर जिम्मेदार एवं अति शक्तिशाली मानव यह नहीं जानता है कि वह कहाँ जा रहा है लेकिन यह जरूर है कि वह पारिस्थितिक तंत्र (Eco System) को खराब करके अपने खुद के खात्मा की ओर बढ़ रहा है। सार यह है कि हर धर्म के संतो की कथाओं और उनके महान विशिष्ट तत्वों व नियमों को हमें जानना है एवं उन्हें कभी भी नजर अंदाज नहीं करना है।

आज विश्व समाज में प्रेम, अहिंसा व एक दूसरे के प्रति मैत्रीभाव की बहुत आवश्यकता है। यह कार्य अपने–अपने कर्तव्य व धर्म को

सही समझने एवं संकीर्णता से ऊपर उठकर ही किया जा सकता है। हर मानव मात्र को यह समझना होगा कि हम सब एक ही ईश्वर की संतानें हैं जो हम सब में मौजूद है। सबके कल्याण भाव से ही हमारा एवं प्रकृति का अस्तित्व बना रह सकता है। यह सब मानव की सोच को सकारात्मक की ओर प्रेरित करने से होगा।हर मजहब, पंथ में बहुत से महान वृतान्त हैं, जो हमें संकीर्णता से ऊपर उठाकर पूरे समाज में प्रेम, उन्नति, शांति व मानवता का पाठ पढ़ाते हुए एक दूसरे के प्रति मैत्रीभाव बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं। हम जब तक धैर्य, मानवता के कल्याण, सेवा–भाव, दया, क्षमा–भाव व सहिष्णुता की भावनायें नहीं अपनायेंगे एवं प्रकृति व वातावरण का ध्यान नहीं रखेंगे तब तक विश्व में आज प्रचलित कई विनाशकारी गतिविधियों में कमी आना असंभव है।

वैदिक धर्म के महान ग्रंथ यजुर्वेद के अनुसार हर शुभ कार्य प्रारंभ करने के पहले यह प्रार्थना की जाती है :–

ऊँ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः।
पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिःरोषधयः, शान्तिः।।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वें देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः।
सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि।।
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

भावार्थ

शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में। शान्ति कीजिए जल में और गगन में, अन्तरिक्ष में, अग्नि में, पवन में, औषधि, वनस्पति, वन, उपवन में, सकल विश्व में, जड़ चेतन में। शान्ति राष्ट्र–निर्माण सृजन, नगर, ग्राम और भवन में। शान्ति कीजिए जीवनमन्त्र के तन में, मन में और जगत के कण–कण में। ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

इस शक्तिशाली मंत्र में हम सब के लिए, हमारे वातावरण के लिए एवं उस हर वस्तु के लिए जो हमें दिखाई देती है, प्रार्थना करते हैं, फलतः हम सब के साथ मेलजोल बनाकर चैन से रह सकें।

प्रकृति की सेवा व उसका सम्मान रखे बिना भगवान् के नाम पर की गयी उपासना, पूजा–पाठ ढ़ोंग ही है। प्राकृतिक संसाधनों को बर्बाद करने की बजाय उनका संवर्धन (पालन–पोषण) करना आवश्यक है। आज हमने धरती माँ को अधमरा कर दिया है। जल संकट भयंकर रूप धारण कर चुका है। पवन देवता में हर पल जहर घोलकर उसको अति दूषित कर दिया है। अग्निदेव प्रकृति के अन्य तत्वों को दुखी देखकर भयंकर आग बरसा रहे हैं। आज हर राष्ट्र को तुरन्त सीख लेकर ऐसी जीवन शैली अपनानी पड़ेगी जिससे हमारी प्रकृति सुरक्षित रहे एवं भविष्य में मानव व हर प्राणी सुखी जीवन बिता सके। यदि इन बातों पर ध्यान नहीं दिया गया तो विश्व विनाश के बारे में की गई सब भविष्यवाणियाँ सही साबित हो जायेंगी एवं हम सबका वजूद ही खत्म हो जायेगा।

ईश्वरीय वाणी कुरआन में भी प्रकृति का ऐसा ही विवरण है :–

वही (खुदा) तो है जिसने तुम्हारे लिए धरती का बिछौना बिछाया, आकाश की छत बनाई, ऊपर से पानी बरसाया और उसके द्वारा हर प्रकार की पैदावार निकाल कर तुम्हारे लिये रोजी जुटाई।

कुरान मजीद सुरा–2, अलबकरा–22

उसकी (अल्लाह) पाकी (पवित्रता) तो सातों आसमान और जमीन और वे सारी चीजें बयान कर रही है जो आसमान और जमीन में है।

सूरा 17 बनी इसराईल–44

जब यह प्रकृति खुदा की बनाई हुई है तो इसका मान–सम्मान करते हुए देखभाल करनी चाहिए।

कुरान मजीद के कुछ अन्य नेक सूत्र

(i) अल्लाह न्याय और भलाई और रिश्तेदारों के हक अदा करने का आदेश देता है और बुराई और अश्लीलता और जुल्म व ज्यादती से रोकता है। वह तुम्हे नसीहत करता है ताकि तुम शिक्षा लो। (**कुरान** 16:90)

(ii) आपस में भरोसा कायम रखो। (सूरत 2:आयात नं. 283)

(iii) जब लोगों के साथ फैसला करो तो इन्साफ के साथ करो। (सूरा 4–58)

पवित्र बाईबल की सर्वश्रेष्ठ सीख (यीशु का पहाड़ी उपदेश):–

(i) धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

(ii) धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे है, क्योंकि वे तृप्त किए जायेंगे।

(iii) धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

(iv) धन्य हैं वे जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

(v) धन्य हैं वे जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।

(vi) तुम सुन चुके हो कि अपने पड़ौसी से प्रेम रखना और अपने बैरी से बैर परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो।

Mathew-5 (मत्ती–5)

(i) सावधान रहो। तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे।

(ii) इसलिए जब तू दान करे, तो अपने आगे तुरही न बजाना जैसा कपटी लोग सभाओं और गलियों में करते हैं ताकि लोग उनकी बड़ाई करें। मैं तुम से सच कहता हूँ कि वे अपना फल पा चुके।

(iii) परन्तु जब तू दान करे तो जो तेरा दाहिना हाथ करता है, उसे तेरा बायाँ हाथ न जानने पाए ताकि तेरा दान गुप्त रहे और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।

(iv) और जब तू प्रार्थना करे तो कपटियों के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के लिए सभाओं में और सड़कों की मोड़ों पर खड़े प्रार्थना करना उनको अच्छा लगता है, मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।

(v) परन्तु जब तू प्रार्थना करे तो अपनी कोठरी में जा और द्वार बन्द करके अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर। तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।

(vi) प्रार्थना करते समय बक–बक न करो, क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुनी जाएगी।

(vii) सो तुम उनकी तरह न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या–क्या आवश्यकता है?

Mathew-6 (मत्ती–6)

बुद्ध की अमरवाणी पुस्तक 'धम्मपद' में उन्होंने लिखा है –

मावोच फरूसं कटिच, वुता पटिवदेययु तं।
दुक्खा हि सरम्मकथा, पतिदण्डा फुसेययतु तं।।

अर्थ

किसी को कठोर वचन मत बोलो, ऐसा बोलने पर दूसरे भी तुम्हें वैसे ही बोलेंगे।

क्रोध या विवाद भरी वाणी दुःख का ही रूप है। कठोर वाणी बोलने के बदले में तुम्हे दंड जरूर मिलेगा। मर्मभेदी व कड़वी बात मुँह से कभी भी मत निकालो। दूसरों को दुःख देने वाली बातें केवल पापी ही बोलते हैं और हमें पापी नहीं बनना है।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतम ब्रूयात, एष धर्मः सनातनः।।

अर्थ

सत्य और प्रिय बोलना चाहिए पर अप्रिय सत्य नहीं बोलना और प्रिय असत्य भी नहीं बोलना, यह सनातन धर्म है।

जैन धर्म के पाँच मूलभूत सिद्धांत

1. अहिंसा

2. सत्य

3. अचौर्य – (चेतना का उन्नत शिखर) मैं शुद्धचैतन्य स्वरूप हूँ तथा शरीर–मन–बुद्धि इस मानव जीवन का यापन करने हेतु मात्र साधनरूप है जिनके द्वारा अपने यथार्थ स्वरूप तक पहुँच सके।

4. ब्रह्मचर्य – यह सिद्धान्त उपरोक्त तीन सिद्धान्तों–अहिंसा, सत्य, अचौर्य के परिणामस्वरूप फलीभूत होता है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'ब्रह्म+चर्य' अर्थात ब्रह्म (चेतना) में स्थिर रहना।

जब मनुष्य उचित–अनुचित में उचित का चुनाव करता है एवं अनित्य शरीर–मन–बुद्धि से ऊपर उठकर शाश्वत स्वरूप में स्थित होता है तो परिणामतः वह अपनी आनंद रूपी स्व सत्ता के केन्द्र बिन्दु पर लौटता है जिसे ब्रह्मचर्य कहा जाता है।

5. अपरिग्रह – जो स्वरूप के प्रति जागृत हो जाता है और शरीर–मन–बुद्धि को अपना मानते हुए जीवन व्यतीत करता है उसकी बाहरी दिनचर्या संयमित दिखती है। जीवन की हर अवस्था में अपरिग्रह का भाव दृष्टिगोचर होता है तथा भगवान महावीर के पथ पर उस भव्यात्मा का अनुगमन होता है। इस प्रकार जैन धर्म के यह सिद्धान्त जीवनयापन की ऐसी शैली प्रदान करते हैं जिससे हम इस मानवीय शरीर से मुक्ति मार्ग की ओर अग्रसर हो सकें व आत्म निरीक्षण करते हुए अपने शुद्ध चैतन्य आत्म अनुभव तक पहुँच सकें।

आर्य समाज के निम्न दस नियम भी मानव को सही राह दिखाते हैं

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

2. ईश्वर सच्चिदानंदस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वांतर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है।

3. वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढना व पढाना और सुनना व सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

5. सब काम धर्मानुसार, अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

7. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथा योग्य वर्तना चाहिये।

8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिये, किंतु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

10. सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी, नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतंत्र रहें।

कुछ अन्य महान संतो के अमूल्य व प्रेरक विचार

(क) चीन के प्रसिद्ध दार्शनिक एवं राजनीतिज्ञ कन्फुशियस के कुछ उपयोगी वाक्यांश :–

1. With only coarse rice as meal and only plain water as drink and only my arm as pillow, I still find joy in midst of these conditions. Wealth and honour acquired contrary to righteousness are to me like the passing clouds.

   केवल मोटा चावल खाकर और सादा पानी पीकर तथा अपनी बांह का तकिया लगाकर भी मुझे इन परिस्थितियों में आनन्द मिला है। बेईमानी से प्राप्त किया वैभव और सम्मान मेरे लिए क्षणिक मेघों के समान है।

2. Consideration for others is the basis of a good life, a good society.

   दूसरो के लिए सद्भाव और भलाई की कामना ही अच्छे जीवन व सुदृढ़ समाज का आधार है।

3. The superior sets a good example to his neighbors. He is considerate to their feelings and property.

उत्कृष्ट (अच्छा) मानव अपने पड़ौसी के सामने उत्तम उदाहरण देते हुए उनकी भावनाओं एवं सम्पत्ति का पूरा ध्यान रखता है।

4. Ask yourself constantly "What is the right thing to do?"

   अपने आप से हमेशा यह पूछते रहो, सही कार्य क्या है जिसे मैं करूं?

5. What you do not wish done to yourself, do not do to others.

   कोई बर्ताव, कार्य व व्यवहार तुम्हारे साथ किया गया है और वो तुम्हे अच्छा नहीं लगे, ऐसा कार्य दूसरों के लिए न करें।

(ख) कन्फ्यूशियस के 500 वर्ष बाद यही बात ईसामसीह ने कही थी–

Do unto others as you would have them do unto you.

भावार्थ – वही कार्य व बर्ताव करो जो तुम दूसरो द्वारा अपने लिए चाहोगे।

(ग) व्यास मुनि ने मानव के कल्याण के लिए महाभारत ग्रंथ में वेदों से ही लेकर अहिंसा पालन करना मानव के लिये सर्वश्रेष्ठ धर्म व कर्तव्य–कर्म है, का संदेश दिया है। अहिंसा धारण करना और आपस में हिंसा रहित, प्रेम भरे विचारों को कहना परमेश्वर की पूजा है।

(घ) ऋग्वेद में अहिंसा की परिभाषा :–

1. किसी प्राणी को न मारना।

2. मन, वचन व कर्म से किसी को पीड़ा व दुःख न देना अर्थात मन में किसी को दुःख देने का विचार भी न करना।

3. मुख से अभद्र भाषा आदि द्वारा किसी का दिल न दुखाना।

4. हाथ पैरों द्वारा लड़/झगड़कर, मारपीट इत्यादि करके किसी मनुष्य/पशु–पक्षी की हत्या करके दुःख न पहुँचाना।

(च) सत्य– अहिंसा का दूसरा नाम था '' महात्मा गाँधी''। उनके बारे में कहा जाता है

''दे दी हमें आजादी बिना खड़ग, बिना ढ़ाल,
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल''

महात्मा को जब गोली लगी व उनका अंतिम समय आया तो उनके मुँह से ''हे राम'' निकला था।

(छ) गुरू नानक का मानवतावाद

गुरू नानक मानव सेवा की साक्षात मूर्ति थे, खास तौर पर उन्होंने पिछड़े वर्ग, गरीब, दलित और शोषित वर्ग की सेवा को सबसे अधिक महत्त्व दिया है। एक जगह गुरू नानक देव फरमाते हैं–

''जो ऊँची जाति के लोगों की सेवा करता है, उसकी भी तारीफ की जानी चाहिए, लेकिन जो गरीब और पिछड़े हुए लोगों की सेवा करता है, वो तो मेरी खाल की जूतियां बनाकर पहन सकता है।'' दीन दुखियों की सेवा के प्रति इससे बड़ा सम्मान और क्या हो सकता है?

गुरू नानक जाति–पाँति के एवं पाखण्ड के विरोधी थे। अपने उपदेश में उन्होंने बिल्कुल सीधी दो टूक बात कही है–''ओछी जात का वह है जो सच्चे रब को भूल जाता है। नीच और पतित वह है जो परमात्मा से दूर हैं।''

श्री गुरूग्रन्थ साहिब में संत कबीर की निम्न वाणी देखिये :–

''मन को मक्का बनाओ और शरीर को काबा समझो। उसमें आत्मा को ही बड़ा पीर मानो। ऐ मुल्ला, इस दस द्वार के शरीर रूपी मस्जिद में ही आवाज दो और नमाज पढ़ो। मन की तामसिक, गन्दगी

तथा भ्रमों को ' बिस्मिल्लाह' कहकर जिबह कर दो (मार दो)। कामादि पाँचों विकारों को खाकर सन्तुष्ट और धैर्यवान बन जाओ। हिन्दू एवं मुसलमान, दोनों का परमात्मा एक ही है, इसमें मुल्ला या शेख क्या कर सकते हैं? कबीर जी कहते हैं कि मैं तो प्यारे प्रभु का आशिक हूँ। मेरा मन मारा जाकर (जिबह होकर) सहज में ही समा गया है।''

भैरउ वाणी भगता की।। कबीर जीउ घरू। –4,4

गुरू नानक के उपदेश का सार है– उस एक परमात्मा का मन सुमरिन करते हुए नेकी, ईमानदारी और लगन से अपना काम करना, उसके बन्दो की खिदमत करना।

(ज) कुछ अन्य महान उपदेश

(i) अगर आप खुश रहना चाहते हैं और शान्ति पाना चाहते हैं तो औरों को खुश करें व औरों को शान्ति दें। देखना खुशी व शान्ति आपके पास हजार गुणा होकर लौटेंगी। साधु वासवानी हमेशा कहते थे– "If you want to be happy, make others happy" यानि अगर आप खुश रहना चाहते हैं तो औरों को खुश करो।

(ii) रवीन्द्रनाथ टैगोर हमारे एक मात्र कवि जिन्हें नोबल पुरस्कार मिला था, ने अपनी इस कविता में जीवन की खुशी का सार अनूठे अंदाज में लिखा है – ''मैंने रात को सपने में देखा कि जिन्दगी सिर्फ खुशी है, मैं सुबह उठा और देखा जिन्दगी सिर्फ सेवा में ही है।

मैंने सेवा की और पहचाना कि सिर्फ सेवा में ही खुशी है।''

(iii) स्वामी विवेकानन्द का यह कहना, ''प्रत्येक मानव में ब्रह्म की शक्ति विद्यमान है और यह भी कहना कि दीन–दुःखी लोगों में विद्यमान नारायण हमारी सेवा चाहते हैं'' अपने आप में एक अद्‌भुत संदेश है। इस संदेश ने मनुष्य को

उसके स्वार्थ–बोध की सीमा से बाहर निकालकर उसे आत्मबोध (Self realization) कराते हुए असीम मुक्ति का पथ दिखाया है।

(iv) मेरी पुत्री प्रतिभा (03 अक्टूबर, 1978 – 28 जुलाई, 1993) ने मुझे धर्म का पहला पाठ, उसके स्वर्गवास होने के कुछ महिनें पहले पढ़ाया था। उसके शब्द आज भी मेरे कानों में गूंजते हैं :–

"पापा, आप एक धर्म को छोटा और दूसरे को बड़ा क्यों मानते हैं? यह ठीक नहीं है।"

उसकी यह सीख मेरा मार्गदर्शन करती रहती है।

ooo

अध्याय

5

भोला मानव, गुरू, धर्म व भगवान

जिसने धर्म का सही अर्थ समझ लिया व उसकी पालना करता है वह व्यक्ति जीते जी ही अपने अन्दर व चारों तरफ स्वर्ग का निर्माण करे रखता है।

आम मानव भोला व डरपोक है एवं सहारा ढूंढता है। सहारे की जरूरत हरेक जीव को होती है। डर अक्सर अज्ञानता की वजह से होता है एवं इस अज्ञानता व डर की वजह से मनुष्य अपने आपको कमजोर समझने लग जाता है और गलत कार्य करने को मजबूर हो जाता है व सहारे ढूंढने लगता है।

बचपन में माँ के बिना जीवन नामुमकिन होता है फिर गुरू व साथी–संगी चाहिए। वयस्क होने से लेकर जीवन के आखिरी तक एक जीवन साथी की जरूरत भी पड़ती है। इन सब के बावजूद एक और अदृश्य सहारे की जरूरत होती है एवं वह है सर्वोच्च शक्ति/भगवान/कुछ गहरे विश्वास/कुछ सिद्धान्तों का समूह (Set of values), देवता, धार्मिक क्रिया–कलाप/पूजा इत्यादि–इत्यादि।

कुछ विवेकशील व्यक्तियों की तो धारणा भी यह है कि जब मनुष्य किसी समस्या को लेकर अपनी ताकत, ज्ञान व साधनों में असहाय हो जाता है तब भय के मारे व सुखी रहने के लिए किसी अज्ञात/अनजान शक्ति के सहारे, उस समस्या से बचने और आजीवन

आशा बनाये रखने के प्रयास हेतु ही भगवान को खोजता है। इस अदृश्य सहारे को समझने या इससे जुड़ने के लिए अगर कोई पथ–प्रदर्शक (गुरू) मिल जाए तो आम आदमी उसका सहारा ले लेता है। यहाँ चूक होने की संभावनाएं बहुत होती हैं क्योंकि सही पथ–प्रदर्शक मिलना दुर्लभ है।

ढोंगी गुरू के दो रूप होते हैं – बाहरी दिखावा सात्विक और उसका असली स्वभाव कुटिल, स्वार्थी एवं राक्षस प्रवृति का होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ी चतुराई व होशियारी से अपना गोरख–धंधा, धर्म के नाम पर करता रहता है एवं साधारण लोगों को बहलाकर उनका नाजायज फायदा उठाता है। इनके मायाजाल में कई बार अच्छे पढ़े–लिखे लोग भी फंस जाते हैं क्योंकि शिक्षित लोग भी जब दुःखी व परेशान होते हैं तो इन गलत गुरूओं में सहारा ढूंढने की कोशिश करते हैं व उनके शिष्यों/चेलों की भीड़ का हिस्सा हो जाते हैं। हालांकि इन ढ़ोगी गुरूओं का मायाजाल ज्यादा दिन नहीं चल पाता है परन्तु वे खुद बर्बाद होने के पहले कईयों को नुकसान जरूर कर देते हैं।

हमने अक्सर देखा है कि लालची, अपरिपक्व, बेईमान व अधीर और कभी–कभी भोला इंसान भी नकली गुरूओं के चंगुल में ज्यादा आते हैं। गलत इंसान के साथ जुड़ने से तो अकेला चलना बेहतर होता है, चाहे वह गुरू हो या आपका कोई अपना हो। अतः गुरू का चुनाव सोच समझकर ही करें। हाँ, अगर आप सही धर्म निभा रहे हैं, ईमानदार व कर्तव्य परायण हैं तो सही समय पर सच्चा गुरू आपको जरूर मिल जायेगा।

जीवन अमूल्य है अतः संकीर्णतापूर्ण व्यक्ति, गुरू, उच्चाधिकारी, नेता व रिश्तेदारों से जितना दूर रहेंगे, उतनी ही शांति रहेगी।

बच्चों व वयस्कों पर उनके अन्य सहारों जैसे माता–पिता, संरक्षक, अध्यापक व माहौल का भी काफी असर होता है। इन्हीं से बच्चा काफी कुछ गलत–सही सीखता है। बेहतर समाज व भविष्य के लिये इन अभिनेताओं पर नजर रखनी होगी। ज्यादातर अभिनेता

परम्परावादी सोच एवं नियमों के अनुसार कार्य करते हैं इसलिए बच्चों को अक्सर ज्यादातर यह शिक्षा मिलती है कि यह मत करो या ऐसा करो। इसी शिक्षा में धर्म व अंधविश्वास की खिचड़ी भी होती है। ऐसे में जाने–अनजाने में रोगग्रस्त मानसिकता के व्यक्तित्व का निर्माण हो जाता है। हमें आने वाली पीढ़ियों को इस भ्रम जाल से निकालने की योजना पर काम करना हैं ताकि वे गलत विचारधारा के गुलाम नहीं बने, सुखी रहें व आगे की पीढ़ियों का भी थोड़ा सुधार करते रहें।

आने वाले समय में जात–पाँत की दीवारें टूटेंगी। पूजा स्थलों में भीड़ कम होगी एवं पूजा पद्धितयों में बदलाव आयेगा। धर्म में अन्धविश्वास की कमी आने की संभावना भी है, अतः हम सबको इनको ध्यान में रखते हुए दूरगामी रणनीति बनानी होगी। हम देख रहे हैं कि नई पीढ़ी पारम्परिक धार्मिक रीति–रिवाजों से भले ही धीमी गति से परन्तु दूर हट रही है। पुराने लोग चाहे कितनी ही दलीलें दें, आज के वयस्क अपने हिसाब से सोच रहे हैं चाहे वह धन व नाम कमाना, समय बचाना या आसान रास्ते की ओर चलना हो आदि। यह उनकी अपनी सोच है जो कुछ हालातों में सही भी हो सकती है। इसको सही दिशा तो नैतिक विज्ञान एवं विज्ञानपूर्ण नैतिकता ही दिला सकती है। इसमें सच्चे धर्म यानि मानवीय व्यवहार की भूमिका का होना भी जरूरी है।

हमें देखना होगा कि आज के बच्चे व वयस्क जब कोई आवेदन करते हैं तो धर्म, जाति की सूचना को कितने अनमने एवं भारी मन से क्यों भरते हैं? उन्हें आश्चर्य होता है कि इतिहास में वर्ण एवं जातिगत समाज का जो निर्माण हुआ था क्या उसकी अब भी कोई सार्थकता है?

आज जिस ढंग से ईश्वर में विश्वास रखने का प्रदर्शन किया जाता है उससे सच्चे मानव को अकथनीय कष्ट होता है। भगवान व धर्म दिखावे से अधिक जीने का विषय है। धार्मिक विश्वास के पाखण्डपूर्ण दिखावे से वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाला आज का व्यक्ति सदैव बचना चाहता है।

अक्सर हर धर्म का पुजारी अपने अनुयायियों की अलग पहचान बनाकर रखना चाहता है ताकि उनमें अलग एवं श्रेष्ठ होने का झूठा भाव बना रहे। भांति–भांति की पगड़िया, मुकुट, टोपी, हाथ या गले में तरह–तरह की मालाएं, रास्ता जाम कर देने वाले बड़े–बड़े धार्मिक जुलूस ये नासमझी ही ज्यादा है एवं स्वार्थी लोगों द्वारा अपनी धार्मिक दुकानदारी चलाने का रास्ता है। अपनी अलग धार्मिक पहचान बनाने वाले यह लोग दूसरे धर्म, संस्कृति वाले लोगों के मन में घृणा का भाव बढ़ाते हैं और कई बार वे परस्पर घृणा (Hate Crime) के शिकार बन जाते हैं।

पैदल चलने वालों के लिए पूर्णतया असुरक्षित हो चुकी हमारी सड़कों पर नंगे पाँव चलकर सूदूर स्थानों से कलशों में कावड़ जल लेकर शिवजी का जलाभिषेक करने वालों का कितना अहोभाग्य विकसित हुआ सोच व शोध का विषय है। परन्तु इन सड़कों पर मौत उनका पीछा करती रहती है, यह किसी से छिपा नहीं है। यदि इससे शान्ति मिलती है तो क्या गंगोत्री का यह जल थोक रूप में सुरक्षित तरीके से नहीं लाया जा सकता है ? क्या ऐसा करने से ईश्वर प्रसन्न नहीं होंगे? शिव मन्दिर में दूध, घी व शहद को बेहिसाब बहा देने की अपेक्षा किसी कुपोषित बच्चे को भगवान मानकर उसकी देखभाल करने से क्या ईश्वर कम प्रसन्न होंगे ? क्या इन सब बिन्दुओं पर विचार करने में कोई हर्ज है?

देवी–देवताओं की पूजा होती रहेगी, भीड़ में लोग मरते रहेंगे। भगदड़ मचेगी एवं भगदड़ में जो कमजोर लोग गिर जाते हैं उनको कुचलते हुए मजबूत लोग अपनी जाने बचाते रहेंगे। इसमें कोई संशय नहीं है। लोग तीर्थों पर जाते हैं, कुण्डों व नदियों में स्नान करते हैं। वहाँ पैसा खराब करते हैं लेकिन उनके घर में जो असली तीर्थ (मां–बाप) है, वे उपेक्षा एवं बीमारी से मर जाते हैं। कई बार तो इन जीवित भगवानों को समय पर एक कप गर्म चाय–दूध भी यह धार्मिक पाखंडी नहीं देते हैं और उनकी कमाई सम्पत्ति को जबरन छीन लेने की फिराक में रहते हैं एवं उन्हें फुटपाथ पर धकेलने पर उतर आते हैं।

हाँ, तीर्थों पर जायें तो भी ऐसे मौकों एवं तिथियों पर जायें जब वहाँ अत्यधिक भीड़ न हो ताकि आप वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य एवं सामाजिक जीवन का आनन्द लेकर घूमना फिरना कर सकें एवं यात्रा में आपका वास्तव में मनोरंजन हो और आपको शांति व ज्ञान मिले। नदियों में केवल औपचारिक डुबकियाँ लगाने से अगर पाप धुलते तो नदियों में रहने वाले जीव तो सीधे स्वर्ग में चले जाते और स्वर्ग में हमारे लिए जगह भी नहीं बचती।

लोग भगवान के मंदिरो में खान–पान, भोज (सवामणी) इत्यादि करते हैं, उत्सव मनाते हैं मित्र जनों से मिलते हैं। जीवन में धन–धान्य मिलने पर सर्वशक्तिमान को धन्यवाद देने हेतु सामूहिक भोज का आयोजन कर प्रेम–भाव बढ़ाने, रिश्तेदारों व यार दोस्तों से मिलने का यह अच्छा तरीका है। हमें खुशी व शांति चाहिए और अगर ऐसे कामों से यह सब मिलती है तो क्यों नहीं करें। पर यह करें तो सिर्फ ईमानदारी से कमाये धन से। उसमें से लगभग 10–15% खर्च उन लोगों के लिए भी करें जिनके साथ पूरा न्याय नहीं करके आपने धन दौलत इकट्ठी की है। हम यह नहीं कहते कि हर धनवान आदमी बेईमान होता है लेकिन जो आपके पास धन आया है उसमें कुछ ना कुछ अंश तो आम जनता की कमाई का जरूर होता है। हम भिक्षा देने की बात नहीं कर रहे हैं। बात यहाँ आत्मशुद्धि की हो रही है। जरूरतमंद, कमजोर वर्ग के इंसान की बिना प्रचार के थोड़ी मदद जरूर की जानी चाहिए। इससे यह संसार कुछ और सुन्दर बनेगा। कई धार्मिक लोग यह करते भी हैं एवं यह धर्म का एक बहुत अच्छा पक्ष है।

क्या किया जाए?

यह आपका अपना मुद्दा, सोच, दर्शन व निर्णय है कि आप मनपसन्द किसी भी धार्मिक विचार धारा से जुड़ें या न जुड़ें यद्यपि हम सब के सामने तीन ही विकल्प होते हैं :–

1. जिस धर्म में हम पैदा हुए उसे अपनाले एवं उसमें जो भी गलत, पुराना, रूढ़िवादिता या अतार्किक लगता है उनसे दूर रहकर अपना कर्तव्य करते रहें। अगर स्वधर्म आपको बहुत गलत लगता है एवं आपकी चेतना उसे बिल्कुल स्वीकार नहीं करती है तो उसमें विश्वास मत रखो परन्तु उसकी बुराई मत करो क्योंकि उससे दूसरे की श्रद्धा एवं विश्वास पर ठेस लगती है परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि अपने धर्म में सुधार लाने का नहीं सोचें या सम्भव प्रयास न करें।

2. अगर कोई अन्य धर्म आपको अपने धर्म से अच्छा लगता है एवं आप सोचते हैं कि उस धर्म को अपनाकर आप अच्छे इंसान बन सकते हैं और सद्कार्य कर सकते हैं, राष्ट्र निर्माण में सहायक हो सकते हैं तो उस धर्म को अपना लें परन्तु धार्मिक विश्वास को बदलना काफी कठिन है, यह स्मरण रहे।

3. तीसरा विकल्प नास्तिकता का है। अगर आप किसी परमात्मा या भगवान में विश्वास नहीं करते हैं तो इसमें भी कोई बुराई नहीं है। विश्व की कई महान् विभूतियों ने ईश्वर का अस्तित्व नहीं स्वीकारा है, यह उनकी अपनी राय थी या है। परन्तु उन्होंने भी सही आचार, सदाचार एवं विश्व कल्याण की भावना को माना, अपना उत्तरदायित्व बखूबी से निभाया और निभाते हैं एवं उसे सर्वोपरि रखा और रखते हैं। वास्तव में यही हर धर्म की मुख्य सीख भी है।

निष्कर्ष यह है कि हम हमारे उत्तरदायित्व का पूरा ध्यान रखें क्योंकि यह सोच ही हमारे संकुचित व्यवहारों को सुधार सकती है। हम जब भटकने लगते हैं या रास्ता भूल जाते हैं, तब हमारे उत्तरदायित्व का ज्ञान ही हमारा पथ प्रदर्शक बनता है। उत्तरदायित्व को अगर ठीक से निभाते रहें तो इससे बड़ा कार्य व धर्म और कोई भी नहीं है।

हम अधिकांश कार्य, हमारी आदतें, यादें, हिदायतें एवं अनुभव के आधार पर करते हैं। कुछ कार्य दुनिया वालों को खुश करने के लिए

भी हमें करने पड़ते हैं परन्तु यदि इनमें नैतिकता, सात्विकता व विश्व कल्याण की भावनाएं नहीं हैं तो ऐसे कार्यों के परिणाम सही नहीं हो सकते।

अपनी आत्मा, ज्ञान, आचरण व व्यवहार में बदलाव लाकर घृणा भाव से दूर रहते हुए, मानव मात्र से प्रेम भाव रख कर, सभी धार्मिक विचारधाराओं का सम्मान करते हुए हमें एकता से रहना सीखना होगा। यह धर्म का असली स्वरूप है।

अब हमें किसी भी नये धर्म का प्रवर्तन करने एवं स्थापना करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है। सबसे बड़ा मन्दिर स्वयं मानव का शरीर है जिसमें निहित हमारे मन व प्राण हैं, जो ताउम्र हमारे साथ रहते हैं। शरीर एवं विचारों को संवारना ही असली धर्म है। मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर इत्यादि पहले से ही इतने हैं कि उनकी एवं उनके पुजारियों की देखभाल करना मुश्किल हो रहा है।

ईश्वरीय शक्ति व उसकी उपस्थिति का अहसास

धर्म के बारे में जब भी कोई बात आती है तो यह प्रश्न जरूर उठता है कि ईश्वर कहाँ हैं एवं उसका क्या स्वरूप है? इसका उत्तर इतना आसान नहीं है फिर भी जो कुछ हमने समझा है एवं पढ़ा है उसके बारे में थोड़ा विस्तार से लिख रहे हैं।

ईशावास्योपनिषद् के 18 मंत्र एवं अन्य कई उपनिषदों में ईश्वर के बारे में बहुत अच्छी जानकारी है :–

(i) ईशावास्यमिदंऽ सर्वं तत्कञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

ईशावास्योपनिषद्–1

व्याख्या

अखिल ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी जड़–चेतनास्वरूप जगत् है यह समस्त ईश्वर से व्याप्त है (उसी के अधिकार में है)। उस ईश्वर को साथ रखते हुए त्यागपूर्वक इसे भोगते रहो। इसमें लिप्त मत हो क्योंकि धन भोग्य पदार्थ किसका है अर्थात् किसी का नहीं, केवल 'ईश' का ही है।

कुछ आदरणीय विद्वानों ने इसका भावार्थ ऐसा माना है– इस ब्रह्माण्ड में जो कुछ यह जगत् है, सब ईश्वर से व्याप्त है। उस ईश्वर द्वारा तुम्हारे लिये जो त्याग किया गया है अर्थात् प्रदान किया गया है, उसी को अनासक्त (Detached) रूप से ग्रहण करें। किसी के भी धन की इच्छा मत करो।

(ii) ओमित्येतदक्षरमिद सर्वं तस्योपव्याख्यानभूतं
भवद्भविष्यदिति सर्वमोङ्कार एव।
यच्चान्यत्त्रिकालातीतं तदप्योङ्कार एव।। माण्डूक्योपनिषद्–1

भावार्थ

ओंकार यह अक्षर–अविनाशी परमात्मा (ब्रह्म का प्रतीक) है, उसकी महिमा को प्रकट करने वाला यह विश्व–ब्रह्माण्ड है। भूत, भविष्यत् और वर्तमान– तीन कालों वाला यह संसार भी ओंकार ही है और तीन कालों से अन्य जो भी तत्व है, वह भी ओंकार ही है।

व्याख्या

पूर्णब्रह्म परमात्मा साकार भी हैं, निराकार भी हैं तथा साकार–निराकार दोनों से रहित भी हैं। सम्पूर्ण जगत उन्हीं का स्वरूप है और वे इससे सर्वथा अलग भी हैं।

(iii) ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णामादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

बृहदारण्यकोपनिषद्–5, प्रथम ब्रह्मण

'ऊँ' रूप में जिसे अभिव्यक्त किया जाता है, वह परब्रह्म स्वयं में सब प्रकार से पूर्ण है और यह सृष्टि भी स्वयं में पूर्ण है। उस पूर्ण तत्व में से इस पूर्ण विश्व की उत्पत्ति हुई है। उस पूर्ण में से यह पूर्ण निकाल लेने पर भी वह शेष भी पूर्ण ही रहता है। पूर्ण में से पूर्ण निकाल लेने पर पूर्ण ही शेष रहने की ऋषि की अनुभूति (बोध) अनोखी है। वर्तमान विज्ञान भी इस अवधारणा (Hypothesis) का साक्षात्कार नहीं कर सका है।

(iv) श्वेताश्वर उपनिषद एक ईश्वर का उल्लेख करती है, जिसके समान कोई दूसरा नहीं है, जो सभी लोकों की रचना करता है, अपनी शक्तियों से उनका शासन करता है तथा काल के अंत में उन्हें फिर से लपेट लेता है। वह प्रकृति की सब चीजों में रहता है। –श्वेताश्वर उपनिषद 3–2 एवं 2–17

(v) छान्दोग्य उपनिषद में कहा गया है :''वस्तुतः यह समस्त जगत् ब्रह्म (ईश्वर) है और यह हृदय के अंदर जो मेरी आत्मा है वह भी ब्रह्म है। ईश्वर सर्वथा अन्य, अनुभव से परे और जगत एवं मानव से पूरी तौर से परे है, और फिर भी व मनुष्य में रहता है और इसके अस्तित्व का ही अन्तरतम सार बन जाता है।''

–छान्दोग्योपनिषद् 4–15

(vi) पवित्र बाइबल में भी इसी प्रकार का वर्णन है –

''प्रभु परमेश्वर वह जो है, और जो था, और जो आनेवाला है, जो सर्वशक्तिमान है यह कहता है कि मैं ही अल्फा और ओमिगा हूँ।'' (The Revelation of John) (यूहना का प्रकाशित वाक्य)–1,8

(vii) कुरआन मजीद में भी ईश्वर के बारे में कई तथ्य उपनिषदों व बाइबल जैसे ही है – ''पूर्व और पश्चिम सब अल्लाह के हैं। जिस ओर भी तुम रूख करोगे, उसी ओर अल्लाह का रूख है। अल्लाह सर्वव्यापीं और सब कुछ जानने वाला है।''

–सुरा–2 परा–1–115

आपमें से अनेक ने कई बार यह महसूस किया होगा कि कोई महान, अदृश्य शक्ति हमारे शुभ कार्य एवं प्रयत्नों में हमारी मदद कर रही है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि अच्छाई एक दूसरे से जुड़ने के लिये तत्पर रहती है। इसी कारण हम हर क्षण व हर मोड़ पर उसकी (ईश्वर) मौजूदगी महसूस करते हैं। किसी भी अच्छे कार्य का सम्पन्न होना एवं उसमें अनगिनत, अप्रत्याशित, आकस्मिक सहायता इसी भाव से हमें प्राप्त होती है जिसे हम दैवत्व के रूप में स्वीकार करते हैं।

जो भी कार्य हम करते हैं या करने की सोचते हैं तो मोटे तौर पर उसके पीछे हमारी मस्तिष्क की दो शक्तियाँ काम करती हैं। पहली शक्ति हमारी देववृत्ति व नैतिक आचरण करने वाली होती है। इसी के साथ–साथ हमारी राक्षसी प्रवृत्ति सोच/विचार भी हमें कुछ करने को मजबूर करती रहती हैं। इस राक्षसी प्रवृत्ति को हम हमारे ज्ञान, नैतिक बल, सही सोच व ईश्वर की मदद से नियंत्रित कर सकते हैं। देवीय शक्ति/विचार प्रवृति की ओर हम जैसे ही मुड़ते हैं, उसी समय हमें परम शक्ति का साथ मिल जाता है एवं कार्य सफल हो जाता है।

हम उन सभी महान मानवों को नमन करते हैं जिन्होंने ईश्वर के अस्तित्व को नकारा है क्योंकि हम तो यह मानते हैं कि वे भी ईश्वर के ही अंश थे उनकी अपनी सोच थी, वे अपनी जगह सही थे एवं उनमें से तो बहुत से तो विश्व के माने हुए व सफलतम इंसानों में गिने जाते रहेंगे। हमारा दृष्टिकोण उनसे विपरीत है और हमें ईश्वर के अस्तित्व के बारे में तनिक भी शंका नहीं है।

नास्तिक और आस्तिक के बीच एक सुविदित अन्तर है। नास्तिक सोचता है कि जो कुछ हम देखते हैं, अनुभव करते हैं, छूते हैं और अनुमान करते हैं उसके सिवा और कुछ नहीं है। आस्तिक वह है, जो ऋग्वेद 10,31.8 की तरह यह मानता है कि 'नैतावदेना अन्यदस्त्युक्षा – केवल यही नहीं है बल्कि कुछ अन्य अतीन्द्रिय (Supernatural अलौकिक) भी है।

ईश्वर विश्वास पर ही मानव प्रगति का इतिहास टिका हुआ है। जब यह डगमगा जाता है तो व्यक्ति इधर–उधर हाथ पाँव फेंकता विक्षुब्ध (अशांत) मनः स्थिति को प्राप्त होता दिखाई देता है। ईश्वर चेतना की वह शक्ति है जो ब्रह्माण्ड के भीतर और बाहर जो कुछ है, उस सब में संव्याप्त (भरी हुआ) है। उसके अगणित क्रिया कलाप हैं जिनमें एक कार्य इस प्रकृति का एवं विश्व व्यवस्था का संचालन भी है। संचालक होते हुए भी वह दिखाई नहीं देता क्योंकि वह सर्वव्यापी व सर्वनियन्त (सबको अपने वश में रखने वाला) है।

ooo

अध्याय

6

धर्म, पूजा-पाठ व भक्ति में आये घोर ढोंग, अवैज्ञानिक तथ्य व विवेकहीनता

धर्म में स्वार्थपरता, पाखंण्ड, कट्टरता, अंधविश्वास व कुरीतियों की कोई भी जगह नहीं होनी चाहिए।

धर्म व धार्मिकता का सारतत्व माथे पर तिलक, बड़ी–बड़ी व तरह–तरह की मालायें पहनना, टोपियां पहनना, अलग तरह के कपड़े पहनना, घंटियाँ, शंख व मंजीरा इत्यादि बजाना नहीं है।

धर्म में आये ढ़ोंगों के खोखलेपन एवं अवैज्ञानिक सोच से दुखी होकर अमेरिका में हाल के वर्षों में कोई भी धर्म न मानने वाले लोगों की संख्या बढ़ी है एवं तेज गति से लोग संगठित धर्म छोड़ रहे हैं। वहाँ कुल आबादी के लगभग 25% व 21वीं सदी में वयस्क हुए एक तिहाई लोग किसी धर्म को नहीं मानते हैं। गैलप सर्वे के अनुसार 1980 के बाद पैदा हुई पीढ़ी के केवल 42% लोग ही चर्च जाते हैं। नास्तिकों की संख्या बढ़ने की वजह से ब्रिटेन के सैकड़ों वर्ष पुराने कई एतिहासिक व प्राचीन गरिमा वाले चर्च गंभीर वित्तीय संकट के घेरे में हैं एवं उनका रखरखाव मुश्किल हो रहा है। इनमें से कई चर्च पैसा जुटाने के लिए फिल्म शो, गोल्फ जैसे कार्यक्रम कर रहे हैं। वित्तीय संकट में कई अन्य धर्मों के पूजा, प्रार्थना स्थल भी ऐसी स्थिति से गुजर रहे हैं।

आज धर्मों में जिस पैमाने पर आड़म्बर छाये हुये हैं उन पर अंकुश केवल हर धर्मावलम्बियों की सकारात्मक सोच व सहनशीलता के अपनाने से ही संभव है। हर तरह के अंधविश्वास से मुक्ति पाना हमारा प्रथम व खास मकसद होना चाहिए। अगर हमारे दिलो–दिमाग में शुद्धता, निष्पक्षता, आध्यात्म का ज्ञान (जो धर्म से ऊपर/परे हो), न्याय, प्यार व सेवा भाव नहीं है तो हमारा जीवन व्यर्थ है एवं हम मानव कहलाने के काबिल नहीं हैं।

बहुत से धर्मों के अपरिपक्व व कुमार्गी गुरूओं व प्रचारकों ने समाज का बहुत नुकसान किया है। बहुतों को छला है एवं अनेकों के साथ दुर्व्यवहार, यौन शोषण व उत्पीड़न किया है। हमें जनता को इनसे सावधान रहने की शिक्षा देनी चाहिये।

जन्म, जीवन के विभिन्न पड़ाव एवं मृत्यु के नाम पर ढ़ोंग

मनुष्य के जन्म के समय को लेकर उस समय के नक्षत्र, पल, घड़ी, दिन, वार, तिथि इत्यादि का हिसाब–किताब रखते हुये जो जन्म कुण्डली बनाई जाती है एवं कई बार ज्योतिषी बच्चे के जन्म के समय को अशुभ बताते हुये एवं ग्रह इत्यादि के चक्कर में, माँ–बाप को डाल देते हैं एवं कई तरह के ढोंग भरे पूजा–पाठ करवाते हैं, यह सरासर गलत है। हम यह नहीं कहते कि पूरा ज्योतिषशास्त्र ही गलत है क्योंकि ज्योतिष में दिया हुआ अंक, बीज, रेखा गणित तो बिल्कुल सत्य है लेकिन उसमें जो फल (भविष्य) की लीला वाला तत्व है वह सरासर निराधार व अवैज्ञानिक है।

किसी भी मानव के जन्म जैसी घड़ी से ज्यादा शुभ मुहूर्त तो कोई हो ही नहीं सकता। जन्म जैसे अवसर को किसी भी मायने में अशुभ बताना किसी भी आधार पर सही नहीं हो सकता। क्योंकि जिस समय किसी हिन्दू के बच्चा जन्म लेता है उसी समय, उसी शहर, गाँव में अन्य धर्मावलम्बियों के बच्चे भी जन्मते हैं तो फिर हिन्दू धर्म वाले

ही क्यों इस खोखलेपन के शिकार हैं? क्या उस घड़ी में पैदा हुये अन्य धर्मों के बच्चे स्वस्थ रहते हुये समृद्धि, उन्नति, ख्याति हासिल करते हुये दीर्घायु की प्राप्ति नहीं करते हैं? इस अवैज्ञानिक सोच में विश्वास न करते हुये जो पैसे व समय झूठी पूजा–पाठ में बर्बाद किया जाता है उसको जच्चा–बच्चा के देखरेख में खर्च करना श्रेयस्कर है। वैसे भी भगवान तो सिर्फ देते हैं वे हमारी हर जरूरत को पूरा करते हैं, उन्हें चढ़ावा नहीं चाहिए।

तैतिरीयोपनिषद् के अनुसार माता–पिता को देवतुल्य मानने की शिक्षा हैं एवं निर्दोष कर्म ही करने का आदेश है और जिन विषयों में तनिक भी शंका हो उनका अनुकरण मना किया गया है। जब हमारे माता–पिता ईश्वर के स्वरूप माने गये हैं तो उनका अमूल्य उपहार (संताने) किसी अशुभ घड़ी में पैदा कैसे हो सकते हैं?

मातृदेवो भव। पित्देवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि। तानि सेवितव्यानि नो इतराणि। तैतिरीयोपनिषद् 11–2

अर्थ

माता–पिता को देव रूप मानो, आचार्य को देवता समझो। अतिथि को देवरूप मानो। जो दोष रहित कर्म वर्णित है, उन्हीं का आचरण करो, अन्य का नहीं।

प्रभु का दिया हुआ हर क्षण मानव के लिये पवित्र, शुभ एवं अमूल्य है। कोई भी दिन, तिथि, महीना, समय किसी भी हालत में अशुभ नहीं हो सकता। मृत्यु के समय को लेकर भी कुछ लोग व पुजारी कई गलत धारणायें/एवं भविष्यवाणियाँ करते हुये लोगों को भ्रमित करते हैं एवं कई तरह के पूजा–पाठ, पिण्ड दान, मृत्यु भोज इत्यादि करने की सलाह देते हैं। हमें यह समझ लेना चाहिये कि मृत्यु, परमेश्वर के नियम व कर्म फलों से हमें कोई भी डोरा–डाण्डा, मंत्र/यंत्र–तंत्र इत्यादि नहीं बचा सकते।

मानव जीवन एक उत्सव हैं एवं हम इस धरा पर खुशी मनाने, इसे और सुंदर बनाने, खुद व दूसरों का उत्थान करने के लिए ही आये हैं, लेकिन आज हम बहुत सा कार्य इन सबके विपरीत कर रहे हैं। भ्रमित दशा में गलत कार्य करके आप थोड़ी देर खुश हो सकते हैं परंतु चिर उल्लास की स्थिति में नहीं रह सकते, उससे तो क्षण भंगुर व झूठा आनन्द ही प्राप्त होता है।

पूजा–पाठ, धार्मिक उत्सव व भक्ति के लिए पशुबलि देना, अनाप–शनाप खर्चा करना एवं दिखावा करना गलत है। किये गई खर्च की पूर्ति के लिए बेईमानी करना तो अन्याय है एवं ऐसी आराधना व्यर्थ है। यह अपरिपक्वता की निशानी होते हुए घमंड भरा राक्षसी व्यवहार है। भगवान बहरे, गूंगे या बिना मस्तिष्क के नहीं हैं।

हमारे कई दोस्त व रिश्तेदार हैं जो बहुत पैसे वाले हैं लेकिन ठगों के ठग हैं। हर 6–12 महिने में पूजा, कानफोडु भजन, कीर्तन व स्वादिष्ट भोज का आयोजन करके अपने सारे रिश्तेदारो, दोस्तों एवं उच्च पदों पर बैठे कई भ्रष्ट अफसरों, राजनीतिज्ञों व तथाकथित प्रभावशाली व्यक्तियों को भी बुलाते हैं। कई बार मैं भी उनकी, भोजन सामग्री को खा लेता हूँ। अब नहीं खाऊँगा यह प्रतिज्ञा हर बार करता हूँ लेकिन मुझे खास सफलता नहीं मिली है।

हम कतई नहीं चाहते कि मानव जीवन नीरस हो, हम उत्सव न मनाये, भक्ति न करें व पूजा–पाठ न करें परन्तु जहां असंख्य, कुपोषण के शिकार बच्चे हो व बिना दवा के कई मनुष्य मौत के ग्रास बन रहे हों तो उनके पेट पर लात मारके इकट्ठे किये हुए धन को, उनकी स्थिति को नजर–अंदाज करके, कैसे धार्मिक उत्सव मना सकते हैं? हम कैसे दूध व घी की बर्बादी कर सकते हैं व अपना बहुमूल्य समय इन कार्यों पर खर्च कर सकते हैं? अगर भक्ति करनी है एवं अपना उद्धार करना है तो परायों, गरीबों व दुखियों का थोड़ा ध्यान तो रखना ही होगा।

स्वामी विवेकानंद के महान गुरू श्री रामकृष्णदेव का मूल मंत्र ''शिव भाव से जीव की सेवा'' इसका साक्षी है। सेवा व दान करके आपको जो आनंद मिलेगा वह किसी भी दिखावे के धार्मिक उत्सव या अन्य कार्य से अधिक होगा। सेवा व दान के लिए हमेशा धन की आवश्यकता नहीं होती। धन हो तो भी अच्छा व नहीं हो तो भी सेवा में कमी नहीं आ सकती। किसी दुःखी मानव से मीठी बात करना या उसे समय व सहारा देने में पैसा नहीं लगता है। सेवा करके देखें आप कम बीमार होंगे, आपकी सोच सकारात्मक रहेगी, आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली (Immune System) मजबूत बनेगी एवं आप चिरशांति व जीते जी मोक्ष प्राप्त कर लेंगे। बस एक ही बात ध्यान में रखनी होगी कि इसमें दिखावा व घमण्ड का अंश नहीं हो।

लैंगिक समानता व महिलाओं के मासिक धर्म पर गलत सोच

अब समय आ गया है कि पुरूष लैंगिक समानता की हकीकत को स्वीकारें एवं इसके साथ रहना सीखें। लैंगिक समानता की लड़ाई जारी रहेगी लेकिन भलाई इसी में है कि इसको जितना जल्दी हो सके कम किया जाए एवं महिलाओं को अधिक से अधिक क्षेत्रों में बराबरी का दर्जा दिया जाए। मेरी पुस्तक ''मेरे अनुभव और सुझाव'' (सन् 2019 ईस्वी), SKP PUBLISHING HOUSE, बुलियन बिल्डिंग, हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर–302003, के अध्याय ''मानव जगत की रचनाकार है स्त्री'' में स्त्रियों की महानता एवं उनके प्रति सम्मान के बारे में मैंने विस्तार से उल्लेख किया है।

कुछ लोग महिलाओं के मासिक धर्म पर नाजायज टिप्पणियां करते हैं एवं उन्हें धार्मिक स्थलों में प्रवेश की इजाजत भी नहीं देते हैं जो दुर्भाग्यपूर्ण है। यह दुख का विषय है कि पढ़े–लिखे लोग इस सामान्य जैविक प्रक्रिया को लेकर औरतों को अपमानित करते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि मासिक धर्म के दौरान जब यह लोग अपनी माँ

का स्तनपान करते थे तो वे उस समय अपवित्र क्यों नहीं थी ? हमें महिलाओं के निजी सम्मान की रक्षा करते हुए इस प्राकृतिक प्रक्रिया को सामान्य प्रक्रिया समझनी चाहिये। मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता साधनों एवं सैनेटरी पैड्स की व्यापक उपलब्धता एवं प्रयोग को यथासम्भव बढ़ाना ही इस विषय का सही समाधान है।

मासिक धर्म जो प्रजनन के लिए अंतः स्त्रावी तंत्र (Endocrine System) व रक्त का एक ऐसा सुव्यवस्थित, प्राणदायक व सुन्दर जीवन चक्र है, जिसके बिना मानव जाति का अस्तित्व ही संभव नहीं है। यह प्रक्रिया जो एक स्वस्थ कोख की निशानी है एवं जिस कोख में इस प्रक्रिया में गड़बड़ी होने की वजह से एक औरत को बांझ कह दिया जाता है। ऐसी प्राकृतिक प्रक्रिया को अभिशाप का दर्जा देना नासमझी और अविवेकता है।

एक धार्मिक संप्रदाय के महाराज ने अविवेक पूर्ण बात कह डाली – ''यदि महिलाएं मासिक धर्म के दौरान खाना बनायेगी तो अगले जन्म में श्वान पैदा होगी।'' – (समाचार पत्र) दैनिक भास्कर 22 फरवरी, 2020। इस कथन पर हम कोई प्रतिक्रिया नहीं देना चाहते क्योंकि ऐसी गलत सोच वाले विश्व में हर धर्म में मिल जायेंगे। उनको तो हमारी अर्ज रहेगी कि ऐसे बैतुके वक्तव्य देना बंद करें, दो–तीन साल के लिये मौन साधना करें व इस दौरान धर्म को समझने की कोशिश करें।

○○○

अध्याय

7

धर्म व राजनीति

अगर देखा जावे तो धर्म इसलिए बनाया गया है कि आदमी सच्चाई के मार्ग पर चले, सबकी भलाई के लिए सोंचे एवं स्वार्थ से ऊपर उठकर सेवा भाव धारण करें, लेकिन कई राजनेता धर्म का सहारा लेते हुए उल्टे चलते हैं।

धर्म राजनीति से व राजनीति धर्म से कभी अलग नहीं थी व न ही रहेगी। गाँधी जी ने इसके बारे में यह लिखा था ''जो यह कहते हैं कि धर्म का राजनीति से कोई लेना देना नहीं है, वे नहीं जानते कि धर्म क्या है ?'' हर जगह व हर सूरत में इन दोनों का सही तालमेल बिठाना आवश्यक है।

भारत जैसे धार्मिक विविधता वाले देश में धार्मिक आधार पर लोगों के बीच दीवारे खींचना उचित नहीं है। मन्दिर, मस्जिद, चर्च इत्यादि लोगों की आस्था (धार्मिक विश्वास) के निशान व स्तम्भ हैं। इन्हें राजनीति में घसीट कर सत्ता हासिल करने के यंत्र व माध्यम न बनाया जावे तो ही अच्छा है।

आस्था संस्कृति का एक पहलू है एवं एक समूह के विश्वास को दर्शाती है। एक धर्म को महान और दूसरे को तुच्छ कैसे माना जा सकता है ? परन्तु ऐसा हो रहा है। इस प्रवृति पर अंकुश लगाने के बजाय कुछ लोग, धर्म का गलत सहारा लेकर सत्ता पर अपनी पकड़

मजबूत करने में लगे हुए हैं। आज मतों (Vote) के लिये जनता को गुमराह व जकड़ने का कार्यक्रम चल रहा है। जातिवाद पर बिना वजह कई समस्यायें उत्पन्न करना व जनता को गुमराह करके मत हासिल करना आम बात हो गई है। कई नेता झगड़े करा देते हैं व विभिन्न संप्रदायों में भेदभाव उत्पन्न करते हैं। स्वार्थी राजनेताओं का एक ही लक्ष्य होता है कि वे चुनाव में विजयी हो और वे ही कुर्सी पर बैठे। इसके लिये वे धार्मिक भावनाओं को भड़काने, झूठी व असंभव सुविधाऐं देने का आश्वासन देते रहते हैं।

इस प्रकार आज की राजनीति ठगी करती प्रतीत होती है। यह समस्या राजनीति में कई जगह भयानक रूप धारण करती जा रही हैं। अनुशासनहीनता, गुण्डागर्दी, सही नियमों का पालन न करना, भ्रष्टाचार एवं रिश्वतखोरी में लिप्त रहना कई नेता एवं उनके अनुयायियों के स्वभाव में अब आम बात हो गई है। इन सभी का मुख्य कारण राजनीति में आचार संहिता (Code of Conduct) एवं सत्य–धर्म का अभाव है। ऐसी कार्यशैली से किसी भी देश में अच्छे मूलभूत सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन नहीं लाये जा सकते हैं।

लोकतन्त्र प्रणाली में चुनी हुई सरकार सारे देश की सरकार समझी जाती है, परन्तु होता यह है कि वह सरकार अपने मतदाताओं (Vote Bank) की खुल्लम–खुल्ला तरफदारी में लगी रहती है। यह लोकतन्त्रत का अपमान है और संविधान के विपरीत है। इस मानसिकता में सुधार लाना आवश्यक है।

हम सबको यह ध्यान रखना होगा कि जरूरत से ज्यादा राष्ट्रवाद और किसी भी एक धर्म का बोलबाला व सोच कहीं हमें गलत दिशा में ले जाकर खतरनाक स्थिति में ना डाल दे। केवल एक समुदाय/धर्म विशेष की विचारधारा को श्रेष्ठ एवं दूसरे को नीचा दिखाने के कुत्सित विचार से धार्मिक संकीर्णता और बढ़ती है एवं सामाजिक समरसता एवं समन्वय (Social harmony and coordination) को बनाने के प्रयासों में बाधा पड़ती है।

भारत हमेशा सब धर्मों व आस्थाओं का संगम रहा है एवं अब भी रहना चाहिए। आज के इस युग में कोई भी राष्ट्र तब ही उन्नति कर पायेगा जब उसका हर देशवासी अपनी–अपनी आस्था के साथ दूसरों का नुकसान पहुँचाये बिना, बेखौफ जीवन व्यतीत करे एवं हर देशवासी के साथ प्रेम से रहते हुए आगे बढ़े। यही सच्ची देशभक्ति व धर्म है क्योंकि हमारे विचार से प्रेम के बिना धर्म, राष्ट्रवाद व देशभक्ति की बात करना बेकार है।

अब कुछ महानगरों के पढ़े–लिखे नौजवान इन चीजों को समझकर धार्मिक एवं जातिगत भेदभाव को गलत मानने लग गये हैं परन्तु छोटे कस्बों में अभी इस सुलझी हुई विचारधारा की रोशनी पूरी नहीं पड़ रही है। हमें यह व्यवस्था अतिशीघ्र स्थापित करनी चाहिये जिसमें मानव जाति के शैक्षणिक, सामाजिक एवं वैज्ञानिक उत्थान का कोई भी निर्णय जाति एवं धार्मिक आधार पर नहीं लिया जावे अन्यथा जैसे हम गये एक हजार वर्षों से जी रहें हैं वैसे ही आगे जीयेंगे और मानव मात्र की गरिमा, सुरक्षा एवं प्रतिष्ठा को स्थापित करने वाला समाज बनाने का सपना, सपना ही बन कर रह जायेगा।

आज अंतरजातीय, अंतरनस्लीय, अंतरधार्मिक व अन्तर्राष्ट्रीय विवाह का प्रचलन बढ़ रहा है एवं युवा लोग धर्म व जाति के फिजूल बोझ से दूर भाग रहे हैं व हर देश में हर धर्म के लोग रहने लग गये हैं, वहाँ असहिष्णु समाज/सरकार का चलना नामुमकिन है। यह तथ्य हर व्यक्ति, पंथ, धार्मिक गुरू व राजनेताओं को जितना जल्दी समझ में आयेगा उतना ही उस देश व पूरे विश्व के लिए बेहतर होगा।

○○○

अध्याय

8

विज्ञान, धर्म और हमारा भविष्य

विश्व विनाश के मुख्य कारणों में धार्मिक कट्टरता, मानव की गलत सोच व अज्ञानता होगी।

आज वैज्ञानिकों द्वारा पूरे ईमान धर्म के साथ नए वैज्ञानिक तथ्यों के हर पहलू का खुलासा किया जाना आवश्यक है ताकि लोग इन पर यकीन करें एवं लाभ हानि से भी परिचित रहें। आज के वैज्ञानिक युग का मानव धर्म के बारे में अंधविश्वास या ऐसे उपदेश जो आसानी से गले नहीं उतरते, उनमें विश्वास नहीं करेगा। ज्यादातर पढ़े–लिखे लोग कुछ प्रमाण मांगते हैं कि धर्म में विश्वास करें या नहीं। कुछ धार्मिक कथाएं अविश्सनीय लगती है एवं उन्हें सिद्ध करना आसान भी नहीं हैं हालांकि ब्रह्माण्ड में जो ज्ञान है उसको बड़े से बड़ा वैज्ञानिक भी बहुत कम ही समझ पाता है।

आज धन प्राप्ति की होड़ मची हुई है और वहां अक्सर धर्मों को दरकिनार कर दिया जाता है या हाशिए पर रखा जाता है क्योंकि सही धर्म के साथ बहुत कमाना मुश्किल होता है। अधर्म और पाप की कमाई तो हमेशा विनाश ही करेगी। यह सत्य तो हमको मानना ही पड़ेगा। वैज्ञानिक लोग भी इस सत्य को अक्सर स्वीकार करते हैं कि बहुत धन की लालसा मानसिक शान्ति को जरूर भंग करती है।

धर्म व विज्ञान का भविष्य काफी हद तक एक दूसरे पर निर्भर करता है। बहुत कुछ भविष्य की घटनाओं को भी यह दोनों ही तय करेंगे। वर्तमान के वैज्ञानिक युग में सदाचरण की बेहद जरूरत है क्योंकि मनुष्य जीवन में सदाचरण (जो धर्म की बुनियाद है) और विज्ञान इन दोनों की आवश्यकता होती है। इन दोनों के बिना जीवन पथ पर सही तरीके से चला भी नहीं जा सकता। हालांकि धर्म और विज्ञान का स्वरूप अलग–अलग है लेकिन इन दोनों का मिलन प्रकाश और ज्ञान की तरह है जो एकाकी होने पर कुछ नहीं कर सकते लेकिन साथ मिलकर रहने पर बहुत दूरी का सफर तय कर सकते हैं। विज्ञान ज्ञान की वह प्रणाली है जो पदार्थ में छिपी हुई अंतर शक्ति को खोजती है लेकिन धर्म ज्ञान की वह पद्धति है जो चेतना के भीतर छिपी हुई शक्ति को खोजती है। भविष्य की संस्कृति हेतु यदि हमें मनुष्य का हित चाहिए तो उसमें धर्म और विज्ञान का संतुलन होना बेहद आवश्यक है। वैसे तो यह स्पष्ट है, फिर भी हमें यह देखना होगा कि ज्ञान और धर्म के मिलाप में, धर्म ही हमेशा विवेकशील रहे और विज्ञान उसका शिष्य/ जिस तरह शरीर व्यक्ति का स्वामी नहीं हो सकता उसी तरह विज्ञान भी स्वामी नहीं होना चाहिए। स्वामी तो धर्म और सदाचरण ही होना चाहियें तभी हम एक सुन्दर दुनिया का निर्माण कर पाएंगे।

वास्तव में इस वैज्ञानिक युग में धर्म की बेहद आवश्यकता है क्योंकि विज्ञान जिस रफ्तार से आगे बढ़ रहा है उसके लाभ और हानि दोनों है एवं कई तरह के खतरे भी हैं जो पूरे संसार का विनाश कर सकते हैं। इन खतरों को सदाचरण एवं नैतिकता अर्थात् धर्म से ही नियंत्रण किया जा सकता है अतः विज्ञान को परिधि की सीमा रेखा में बांधने के लिए धर्म आवश्यक है।

हमें धर्म ही सही मार्ग दिखाता है। आज हम अंधाधुंध वैज्ञानिक प्रयोग किए जा रहे हैं जो जरूरी है लेकिन जब धर्म की आंखें है तो उन आंखों से उस महाबली विज्ञान को चलना सिखाना है। इस प्रकार

दोनों के मिलन से ही मनुष्य जीवन को भावी खतरों से बचाया जा सकता है।

दिसम्बर, 2019 में शुरू हुई कोविड–19 महामारी ने पूरे विश्व, प्रकृति एवं हर जीव को कई तरह से बदल दिया है एवं न सिर्फ मनुष्य अपितु कई अन्य जीवों का जीवन भी संकट में डाल दिया है। कई लोग रोजी–रोटी के लिये तड़प रहे हैं। इसका अर्थव्यवस्था पर बहुत ही बुरा असर आने वाले कई वर्षों तक पूरे विश्व में रहेगा एवं यह इतिहास की सबसे भयानक घटनाओं में गिनी जायेगी।

इसके परिणामस्वरूप कई अन्य पक्ष भी उजागर हुये हैं जैसे वातावरण, जलवायु प्रदूषण का शुद्ध होना एवं कुछ जीव–जन्तुओं को राहत मिलना इत्यादि। मानव जाति ने इस महामारी से जो सीखा है वह यह है कि मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं है और मानव को मानव से प्रेम करने के अलावा कोई शिक्षा नहीं है। वैज्ञानिक कोविड–19 जैसी महामारी के रोगाणु के साथ छेड़छाड़ न करें एवं उसको हल्के में न लिया जाये। महान वैज्ञानिक उपलब्धियों के साथ प्रयोग व उनका उपयोग करने में धर्म की पालना अत्यंत जरूरी है।

मानव जब महामारी या कोई अन्य आपदा से परेशान होता है तो ऐसे माहौल में उसकी धारणाओं, सोच व कार्य में सकारात्मक बदलाव भी आसानी से लाया जा सकता है। ऐसे समय कलयुगी धर्म गुरूओं व अन्य अपरिपक्व धार्मिक नेताओं और गलत सोच वाले राजनेताओं के दायरे से बाहर निकलना भी आसान होता है। इस दौरान हम सब के लिये बिना काम के धार्मिक नियमों, अनुष्ठानों और ब्रह्माचारों से ऊपर उठना भी आसान होगा। विश्व भरके राजनेताओं और धार्मिक ताकतों के बीच सही गठजोड़ बिठाने का भी यह सही समय होता है जिससे वैश्विक सहयोग व विश्वास की भावना पनपती है।

यही एक तरीका है जिससे धर्म व विज्ञान यथार्थ व सजीव होते हुये हमारे जीवन का अंग बनेंगे एवं समाज के रोम–रोम में समा

जायेंगे। हर महामारी एवं अन्य आपदायें हमें कई शिक्षायें देती हैं, वे इस प्रकार हैं :–

1. अपने कर्तव्य परायणता पर अडिग रहें व भाईचारा कभी न छोड़े।

2. अपने अन्दर स्थित असली भगवान व अन्य मानवों में स्थित भगवान की पूजा करें।

3. इस बीमारी से जूझने और हमारी मदद करने वालों के लिये भी प्रार्थना करें।

4. अपने पूर्वजों व अपनी खुद की कमाई हुई दौलत से कुछ भाग को जरूरत मंद लोगों में बाँटने का यह सुनहरा मौका होता है।

5. प्रकृति, पर्यावरण व अन्य जीव जन्तुओं के साथ जो अन्याय हुआ है, उसका आंकलन जरूर करें।

6. प्रकृति के नियमों का उल्लंघन, जीव जन्तुओं का नुकसान एवं अन्य घिनोने कर्मों की सजा हमें अक्सर भुगतनी पड़ती है।

7. महामारी में बुजुर्गों, सेवानिवृत्त लोगों व कई अन्यों को पहले से ज्यादा समय मिलता है क्योंकि उनका बाहर जाना, शादी पार्टियों में जाना, रिश्तेदारों व दोस्तों के यहाँ जाना कम हो जाता है। अतः इस अतिरिक्त समय का सदुपयोग करना चाहिए। इस अवधि में कुछ मानसिक परेशानियाँ, अकेलापन, झुंझलाहट, उदासी, विषाद (Depression), अनिद्रा होने की संभावनायें बढ़ सकती हैं। इनका उपाय यह है कि हमें अपना मूलस्वरूप याद करते हुए खुश रहना सीखना पड़ेगा। हमें अत्यधिक उदार भी बनना होगा। ध्यान, व्यायाम, घूमना, प्राणायाम व सरल आसन इत्यादि का समय भी बढ़ाना चाहिये। दर्शन शास्त्र में रूचि ले सकते हैं। कई अच्छी पुस्तकें पढ़ने की आदत डालें। हो सके तो कोई नई चीज, यंत्र, बजाना सीखें एवं नई हॉबी बनायें।

8. महामारी के दौरान बच्चों की औपचारिक शिक्षा–दीक्षा एवं विकास प्रभावित हो जाता है। वे असुरक्षित महसूस करते हैं इस कारण उन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

9. इस अवधि में लगाातर तनाव में रहने के कारण परिवार में स्त्री–पुरूष एक दूसरे के साथ असहिष्णु हो उठते हैं। अतः धीरज व सहनशीलता बनाये रखें।

10. इस काल में प्रायः प्रत्येक व्यक्ति घबराया हुआ होता है परन्तु वह सामान्य दिखने का प्रयास करता है। इस कारण अन्तर्मानवीय संबंधों में करूणा, दया, प्रेम व सहयोग की भावना रखें।

11. जो लोग दूसरों से समृद्धशाली हैं, जैसे– अधिकारी, डॉक्टर, पुलिस, नेता या बड़े व्यापारी, उन्हें इस अवधि में अत्यधिक धीरज और उदारता से काम लेना चाहिए और अपनी वरिष्ठता एवं अधिकारिता में लचीलापन रखना चाहिए। यही क्यों, इस समय तो मानव मात्र को धैर्य पूर्ण आचरण करने की आवश्यकता होती है।

12. भविष्यवाणियाँ मानव को दिग्भ्रमित करने वाली कल्पनायें हैं। याद रखें भविष्य में कोई नहीं झाँक सकता है।

13. इस त्रासदायी बीमारी की वजह से विश्व की बिगड़ती अर्थव्यवस्था को ''सबका साथ व सबका विश्वास'' के भाव से ही वापस पटरी पर लाया जा सकेगा।

हम स्वामी अग्निवेश एवं सेंट स्टीफन्स कॉलेज दिल्ली के पूर्व प्राचार्य श्रीमान वालसन थम्पू का 30 जून, 2020 को ''इण्डियन–एक्सप्रेस'' समाचार पत्र में प्रकाशित कोरोना के बाद की स्थिति एवं धर्म व भगवान से सम्बन्धित लेख यहाँ पुनः उदृत कर रहे हैं। यह लेख दो बहुत माने सुलझे हुये व्यक्तियों द्वारा लिखा हुआ है, कृपया इस पर जरूर गौर करें।

Post-COVID, religion must be God-centred and priest-free

Worship must be to spiritual life what breathing is to physical life. Just as there are no middlemen in our breathing -- except the deadly middleman of pollution -- in the spiritual breathing of worship too, there must be no middlemen.

We are living, said Pope Francis, not so much in an era of change as in a change of era. The COVID-19 pandemic is a watershed moment in history. The present disarray, destruction and suffering are the birthing pangs of a new era. We hear the footfalls of the departing gods fading behind us, even if we don't see the footprints of the incoming gods in front of us.

The brunt of this transition falls on religions because they thrive on the past. All religions claim to be inheritors of exclusive spiritual legacies, which they treat as closed systems. They hold zealously to the letter and litter of it, even though the world around them has changed beyond recognition. As a result, religions remain enclaves of regression in an ever-changing world.

This results from the supremacy that religions attach to "faith". Faith is pitted against reason. Surely, this cannot be faith in God; for God is Supreme Reason. It is faith in the religious establishment and its agendas. This specious faith is used to suppress in human beings the divine attributes of love, truth, justice and compassion. This goes against the grain of scriptures. For that reason, the light of scriptures is kept hidden from believers. Historically, it was the priestly class that exalted faith above the attributes of God. This had the effect of the dethroning of God.

Misusing faith, religious establishments and the priestly class distorted religious culture and made the life of religious communities centred not on God, but places of worship. To hide the irrationality this entailed, they distorted the idea of

God. Consequently, the omnipresent God became a local deity who stays tamely confined within the narrow radius of priestly interests and sleights of hand. God was turned into an alibi for fragmenting humankind, and an excuse for spreading communal poison. God of love became God of hate. God of truth became God of untruth. God of light became God of darkness.

It looks as though the COVID pandemic has come to emancipate us from this subhuman religiosity. The virus has freed us from our addiction to priestly potions in temples, churches, and mosques. The fact that the rupture in people's addiction to places of worship is enabling many to recognise the superfluity of priest-manipulated, temple-centred religiosity, is troubling the priestly class as a whole. It is now fairly clear that religiosity of this kind was not for the sake of the people, but people were being used for the profit of religious establishments.

Unlike love, which is universal, faith is inherently parochial. Faith is exclusive to religious groups. Zeal for one's faith breeds hate and hostility to the faiths of others. It is this naiveté that custodians of religions breed and exploit to deadly effect.

The priestly class can be trusted to import their agenda into the post-COVID era. It is in the interest of humanity that they be not allowed to do this. A new age needs a new spiritual vision. That vision has to be informed by the godly attributes of love, truth, justice and compassion. The priestly class has no use for these values. They are incompatible with priestly interests. The new world cannot live on their regressive menu from the past. It is spirituality, not religion, that humankind in the new world needs.

The virus has undermined every aspect of priest-driven religiosity. Temples, mosques and churches are closed. Most people do not miss them! The tinkling of coins is no longer heard in sanctuaries, and that does not seem to upset gods. The communal nexus between religion and politics stands para-

lysed. Post-COVID, religion must be God-centred and priest-free, unburdened with places of worship. Worship, free from rituals, dogmas, deception and priestly hypocrisy, must nourish life. Worship must be to spiritual life what breathing is to physical life. Just as there are no middlemen in our breathing — except the deadly middleman of pollution — in the spiritual breathing of worship too, there must be no middlemen.

The emphasis must shift from salvation to social justice, from piety to peace, from rituals to human development, from divisive faith to universal love. Humanity must be free at last to recognise the God of justice who has no favourites or special agents.

उक्त लेख का हिन्दी में संक्षेप सारांश निम्न है :–

कोविड 19 वायरस के बाद धर्म भगवान पर ही केंद्रित हो एवं पुजारियों से पूरी तरह से मुक्त हो।

पोप फ्रांसिस का कहना है कि हम बदलाव के युग में नहीं बल्कि एक बदलते हुए युग में रह रहे हैं। कोविड 19 महामारी इतिहास में एक युगांतरकारी समय है। वर्तमान उथल–पुथल, विनाश एवं पीड़ा एक नए युग के आगमन की प्रसव पीड़ा है। हम, हमारे भगवानों को हमें छोड़कर जाने की आहट सुन रहे हैं, भले ही हम अभी आने वाले भगवानों के आगमन के पद चिह्नों को नहीं देख पा रहे हो । इस परिवर्तन का प्रहार हमारे धर्म पर हो रहा है जो भूतकाल पर फलते–फूलते हैं।

सभी धर्म यह दावा करते हैं कि वो एक विशिष्ट आध्यात्मिक विरासत के उत्तराधिकारी हैं जिसे वे एक बन्द प्रणाली के रूप में समझते हैं। इसका परिणाम यह है कि लगातार बदलती दुनिया में सभी धर्म पीछे की ओर धखेलने वाली सोच की जकड़ में हैं। इसका

कारण यह है कि धर्मों ने आस्था को प्रभुत्व दे रखा है। आस्था को तर्क से सम्पूर्णतः बचाने का प्रयास किया है।

यह निश्चित है कि आस्था रखने वाले को भगवान में विश्वास रखने वाला नहीं कहा जा सकता क्योंकि ईश्वर तो महान तर्कशक्ति है। जबकि दिखावटी आस्था केवल धार्मिक संस्थाओं एवं उनके एजेंडा में विश्वास मात्र है न कि ईश्वर में।

यह ऐसी निष्ठा मानव मात्र में ईश्वरीय गुणों जैसे प्यार, सत्य न्याय, दया व संवेदना को नहीं पनपने देती है और यह धर्म ग्रंथों की मूल भावना के विरूद्ध है। इसी कारण अधिकांश निष्ठावान लोग अब तक धर्म ग्रंथों के प्रकाश से वंचित हैं। पुजारियों ने हमेशा आस्था को ईश्वरीय गुणों से ऊपर बनाए रखा है। इसका परिणाम यह हुआ है कि भगवान को ही अपदस्थ कर दिया गया है।

कुछ पुजारियों एवं धार्मिक संस्थाओं ने आस्था एवं विश्वास का दुरुपयोग करते हुए धार्मिक संस्कृति का रुप बिगाड़ रखा है। इन्होंने धार्मिक समाज का ध्यान भगवान की ओर रखने के स्थान पर पूजा स्थलों की ओर मोड़ा हुआ है। अपनी तर्कहीनता को छुपाने के लिए इन्होंने ईश्वर के विचार को ही विकृत कर दिया है। परिणामस्वरुप सर्वव्यापी ईश्वर को ऐसा स्थानीय देवता बना दिया गया है कि वो पुजारियों के संकीर्ण हितों के दायरे, हाथ की सफाई एवं चमत्कार तक सीमित हो गया। इसी प्रवृत्ति के चलते भगवान का बहाना लेकर यह मानवता को खंडित करने एवं संप्रदायों के बीच जहर घोलते रहे हैं। इससे प्यार के भगवान नफरत के भगवान बन गए, सत्य का भगवान असत्य का भगवान बन गया और प्रकाश का देवता अंधकार का देवता बन गया।

ऐसा प्रतीत होता है कि कोविड महामारी हमें इस अमानवीय धार्मिकता से छुटकारा दिलाने के लिए आई है। इस वायरस ने मंदिर, मस्जिद, चर्च में पुजारियों द्वारा दी जाने वाली जादुई पुड़ियाओं में पड़ी हुई हमारी लत से छुटकारा दिलवा दिया है।

पूजा स्थलों में लोगों की लत के तड़कने के तथ्य के कारण बहुत सारे लोग धर्मस्थल केन्द्रित धार्मिकता की सारहीनता को पहचान गए हैं और इससे पूरे पुजारी वर्ग को काफी परेशानी होने लग गई है। अब यह स्पष्ट हो गया है कि इस प्रकार की धार्मिकता लोगों के भले के लिए नहीं थी बल्कि लोगों का इस्तेमाल धार्मिक संस्थानों के लाभ के लिए हो रहा था।

आस्था प्रेम की तरह सार्वभौमिक नहीं होकर सदैव संकीर्ण होती है। अलग–अलग धार्मिक समूहों की आस्था अलग–अलग होती है। खुद की आस्था में अति उत्साह एवं दूसरे की आस्था के लिए घृणा एवं शत्रुता पैदा करता है। धर्म के ठेकेदारों के इस अनुभवहीन भोलेपन एवं ज्ञान की कमी से अत्यंत घातक प्रभाव पैदा हो रहे हैं।

इस महामारी की समाप्ति होने के बाद पुजारी वर्ग पुनः अपने पुराने एजेंडा को हमारे बीच में लाने की कोशिश करेंगे। यह मानवता के हित में होगा कि उनको ऐसा नहीं करने दिया जाय। इस नए दौर में नयी आध्यात्मिक दृष्टि की आवश्यकता है। यह दृष्टि प्रेम, सत्य, न्याय एवं संवेदनाओं को साथ लेते हुए विकसित होनी चाहिए। पुजारी वर्ग के लिए इन मूल्यों का कोई महत्व नहीं है। वैसे भी यह मूल्य पुजारी वर्ग के हितों से मेल नहीं खाते हैं।

भूतकाल के पीछे ले जाने वाले उनके प्रतिगामी (Regressive) सिद्धांतों पर नई दुनिया नहीं चल सकती। मानवता इस नए संसार में आध्यात्मिकता चाहती है न कि धर्म। इस वायरस ने पुजारी आधारित धार्मिकता के हर पहलू को कमजोर कर दिया है। आज मंदिर, मस्जिद, चर्च सब बन्द है। ज्यादातर लोगों को उनकी याद भी नहीं आती है। इन अभयारण्यों में अब सिक्कों की खन खनाहट सुनाई नहीं देती है एवं इससे भगवान भी परेशान होते नहीं दिख रहे हैं।

धर्म और राजनीति का सांप्रदायिक गठजोड़ इस समय पंगु हो गया है। महामारी के बाद का धर्म सिर्फ भगवान पर ही आधारित हो, जो पुजारियों के शिकंजे व पूजा स्थलों से पूरी तरह से मुक्त हो।

कर्मकांड, अनुष्ठान, हठधर्मिता, छलावा एवं पुजारियों के ढोंग से मुक्त पूजा अब हमारे जीवन की पोषक बननी चाहिए। जो संबंध हमारे श्वास एवं भौतिक अस्तित्व में है वही संबंध हमारी आध्यात्मिकता एवं पूजा में होना चाहिए। जिस प्रकार हमारे श्वास एवं हमारे बीच में (सिवाय प्रदूषण) के कोई बिचोलिया नहीं है उसी प्रकार हमारे आध्यात्मिक जीवन एवं पूजा के मध्य कोई बिचोलिया नहीं होना चाहिए।

अब हमारा जोर, मुक्ति या मोक्ष के स्थान पर सामाजिक न्याय, धर्मनिष्ठा के स्थान पर शांति, अनुष्ठानों के स्थान पर मानव विकास और बांटने वाली आस्था के स्थान पर सार्वभौमिक प्रेम की ओर होना चाहिए।

न्याय के भगवान को पहचानने के लिए अंततः मानवता को स्वतंत्र होना चाहिए। साथ में यह भी याद रखना चाहिए कि ईश्वर का कोई पसंदीदा या विशेष एजेंट नहीं होता है।

सारांश

धर्म हमें विवेकशील होने एवं आवश्यकतानुसार प्रयोग करने को प्रेरित करता है। धर्म की छाया विज्ञान के पौधे को समाज के लिए वृक्ष बनाने में एक अहम किरदार निभाती है। यह सुनिश्चित करना होगा कि विज्ञान हमेशा मनुष्य जाति हेतु प्रयोगों से प्राप्त निष्कर्षों का लाभकारी उपयोग ही करे। विज्ञान का पथ प्रदर्शन अगर धार्मिक भावना द्वारा नहीं हुआ तो विनाश की स्थिति पैदा हो सकती है।

हमें वैश्विक सहयोग और विश्वास की भावना को आगे बढ़ाते हुए भाईचारा व विश्व कल्याण को और सुदृढ़ बनाना चाहिए।

आने वाले समय में भी धर्म व विज्ञान का यदि सही तालमेल नहीं हुआ तो कई तरह का विनाश जरूर होगा। क्योंकि कई गैर जिम्मेदार मानव, भोले–भाले लोगों को पथ भ्रष्ट करके, सरकारों और

जनता का नुकसान करते रहेंगे। अनैतिक एवं ताकतवर सत्ताधारी लोग भविष्य के तकनीकी युग में भी दुनिया में बंटवारा व लड़ाईयां करते–कराते रहेंगे। जो राष्ट्र विज्ञान व धर्म का सही मिश्रण कर लेगें वे ही खास मुद्दे जैसे शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, जलवायु सुधार एवं सामाजिक शांति व समरसता (Harmony) पर ध्यान दे पायेंगे एवं वे सब ही वास्तविक प्रगति करने, गरीबी एवं भेदभाव मिटाने में कामयाब होंगे।

हमारे धर्म गुरूओं को सचेत होकर उनके अवैज्ञानिक व रूढ़ीवादी विचारों को छोड़ना होगा। मानव–समाज में तार्किक सोच को स्थापित करने के लिये भी धर्मगुरूओं ने जगह नहीं दी क्योंकि इससे उनके स्वार्थ एवं बिना परिश्रम की कमाई पर चोट लगती है।

इस वैज्ञानिक युग में हर नागरिक को सावधान रहना होगा। क्योंकि सरकारें इतनी ज्यादा निगरानी रखने लग जायेगी कि वे आसानी से यह पता लगाने में कामयाब हो जायेगी कि आप कहाँ हैं, क्या खा रहे हैं, क्या सोच रहे हैं एवं आपकी तबियत कैसी है? यह सब जानकारी बायोमेट्रिक मानिटरिंग व निगरानी (Surveillance) से बहुत आसानी से सरकार/तानाशाह व आपके दुश्मनों तक आसानी से पहुँच सकेंगी। डरें नहीं, इनका बहुत– कुछ उपाय आप कर सकते हैं।

ooo

अध्याय

9

जनसामान्य एवं लोक सेवकों का धर्म

यह दुःख की बात है कि हमने धर्म में आये अंधेपन व इतिहास के थपेड़ों से कुछ भी नहीं सीखा है एवं पुरानी गलतियों को दोहराने की गलती करने को तैयार हैं। परिपक्व आध्यात्मिकता की खास निशानी यह है कि हम ऐसे समाज या मनुष्यों से जुड़ें जो हमसे हर तरह से अलग हैं, जिनका खान–पान, रहन–सहन, पूजा–पाठ पद्धतियाँ हमसे बिल्कुल भिन्न हैं। इसी दृष्टिकोण से पुराने झगड़ों, दुःख, यातनाओं इत्यादि को भूलने में सहायता मिलेगी एवं एक नये समाज, संस्कृति व जीने की पद्धति का उदय होगा जो ज्यादा जीवंत व प्रगतिशील होगी। इस तरकीब से हम शांति दूत बन जायेंगे।

याद रखें पीछे देखकर आगे चलने पर खतरा रहता है। आगे चले तो आगे की राह को अच्छा करने हेतु ही सतर्क रहें। आइये समर्पित और शक्तिशाली नागरिक बनकर बिना अहंकार के हमारी शक्ति का उपयोग विश्वहित में करें।

एक अच्छा नेता एवं प्रशासक एक दिन में नहीं बनता। किसी प्रतियोगी परीक्षा को उत्तीर्ण करने या चुनाव जीत जाने मात्र से अच्छे प्रशासक के गुण विकसित नहीं हो जाते, इसके लिए सतत साधना एवं अभ्यास करना होता है।

सर्वप्रथम इस हेतु नवीनतम कानून, प्रक्रियाओं, नियम एवं निर्देशों की पूरी जानकारी होना आवश्यक है। उसे सूचना प्रौद्योगिकी (इनफोर्मेशन टेक्नोलोजी) का पूर्ण उपयोग करते हुए अपनी टीम, अधीनस्थ एवं उच्च अधिकारियों के साथ निरन्तर सार्थक संवाद एवं समन्वय बनाते हुए कार्य करने की योग्यता विकसित करनी होती है।

अच्छा लोकसेवक मानव मात्र को जाति, धर्म, संप्रदाय एवं क्षेत्रीयता के दायरे से बाहर रखकर सच्चे सेवा भाव से निर्णय लेने की योग्यता रखता है। वह यह याद रखता है कि वर्तमान प्रजातांत्रिक युग में मानव मात्र की गरिमा, जीवन एवं स्वतंत्रता सर्वोपरि है एवं जाति–धर्म का भेदभाव मानव निर्मित है जो तर्क एवं बुद्धि की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है।

ऐसा व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थिति में भी आत्मविश्वास नहीं खोता है। उसे याद रहता है कि सदाशयता, सद्भाव एवं ईमानदारी से लिये गये निर्णय एवं की गई सेवा का आदर भाव सदैव उसके साथ रहेंगे एवं वही उसका कर्तव्य व धर्म है।

नैतिक एवं वित्तीय सत्यनिष्ठा भी उस में कूट–कूट के भरी होनी चाहिए। हम सब के जीवन में इस गुण का पग–पग पर प्रतिदिन परीक्षण होता है। सरकारी संसाधनों का व्यक्तिगत उपयोग, सरकारी कार्यालयों में बिजली पानी के अपव्यय की अनदेखी, कार्यालय की साफ सफाई, अवांछित पुराने रिकॉर्ड की छंटनी, नाशन (Weeding) एवं ठीक से रखरखाव के प्रति उदासीन रवैया रखना लोक सेवक की नैतिक सत्यनिष्ठा के अभाव को परिलक्षित (Depict) करता है।

सत्यनिष्ठा एवं विश्वसनीयता वे दो गुण हैं जिसके बिना प्रशासकीय ढ़ाँचा क्षतिग्रस्त ही रहता है। लोकसेवक यदि ईमानदार नहीं है तो उसकी विश्वसनीयता (Trustworthiness) शून्य ही रहेगी। ईमानदारी के साथ–साथ उसे अपनी टीम के कार्य निष्पादन में आने वाली कठिनाईयों का व्यावहारिक समाधान करने की योग्यता भी रखनी चाहिए। एक लोकसेवक को अखण्ड ईमानदारी के साथ–साथ सहज

एवं विनम्र सेवा भाव रखते हुए, धीरज के साथ अनवरत (Continuous) कठोर परिश्रम करते रहने की योग्यता भी विकसित करनी होती है।

अच्छे प्रशासकों के संबंध में आम जन, सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यकर्ताओं का यह मत होता है कि वे सही निर्णय लेते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि सही निर्णय की व्यवस्था से ही समाज व्यवस्थित एवं अनुशासित रहता है। सामाजिक व्यवस्था (Social Order) हर कार्य को सही तरीके से पूर्ण करने पर ही कायम रह पाती है।

सोच समझकर लिए गये किसी निर्णय के बावजूद स्वार्थी तत्व, अक्सर उस निर्णय को लेकर बखेड़ा खड़ा करके विवाद कर देते हैं। ऐसे हालात में लोक सेवक विचलित नहीं होते हैं और नैतिक साहस के साथ उस निर्णय की जिम्मेदारी लेने से भी नहीं घबराते हैं।

आजकल कई तरह के दबाव–समूह कार्य करते हैं जो सभी सही नहीं हैं। इनमें से कई दबाव–समूह गत कुछ दशकों से प्रशासकों एवं नीति निर्धारकों को सही निर्णय नहीं करने देते हैं एवं प्रशासक इनके डर के मारे बुरी ताकतों से लडने से कतराने लग गये हैं। इससे प्रशासनिक एवं सामाजिक व्यवस्था कमजोर होने की आशंका हो गई है, जो अच्छा संकेत नहीं है। अच्छे लोक सेवकों को नैतिक साहस के साथ इसका मुकाबला करना होगा।

अच्छे लोक सेवक में भावनात्मक स्थिरता का गुण होना भी आवश्यक है। उसके लिए एकदम क्रोधित हो जाना, किसी बात विशेष पर अपना मूड खराब कर लेना या असफलता पर निराशा भाव आ जाना ठीक नहीं है। उसमें नेतृत्व का गुण होना भी आवश्यक है। इन सबके लिए नैतिकता मय धर्म की जरूरत होती है। नये कार्यों की पहल करते हुए वे अपनी टीम को उन सद्कार्यों की ओर मोड़ते हैं और वे स्वयं सर्वप्रथम उस कार्य को करते हैं जो अपनी पूरी टीम से कराना चाहते हैं।

समय की पाबन्दी एवं प्रबन्धन तथा दिये गये समय में कार्य को पूर्ण करने का गुण भी अति आवश्यक है। हर सफल व्यक्ति में आपको समय प्रबन्धन का यह गुण देखने को मिलेगा।

लोक सेवक अपने निवास के आस–पास भी अपने सादगीपूर्ण एवं गरिमामय जीवन यापन के साथ परानुभूति (empathy) सहयोग एवं मार्गदर्शन रखकर अपने बस्ती/मोहल्ले में सकारात्मक एवं ऊर्जावान परिवेश रखते हैं। उनकी मानसिक स्थिति इस प्रकार की होती है कि वे सदैव जिम्मेदारी लेने एवं कार्य करने की ईच्छा रखते हैं।

लोक सेवक अपने शरीर एवं मानसिक स्वास्थ्य का सदैव ख्याल रखते हैं। वे तनाव को स्वयं पर इतना हावी नहीं होने देते कि उसकी मौलिकता एवं हंसमुखता ही समाप्त हो जावें। वह अपने परिजन, जीवनसाथी एवं बच्चों को भले ही कम समय दे पाते हो परन्तु जो भी समय देते हैं, वह समय गुणवत्तापूर्ण होता है। यही तो सच्चा स्वयं का एवं पारिवारिक धर्म है।

अच्छा लोकसेवक सेवानिवृत्त होने के बाद भी मुरझाता एवं बुझता नहीं है। वह जीवन की अंतिम सांस तक आशावादी एवं सकारात्मक रहता हुआ समाज को कुछ न कुछ देकर अपना धर्म निभाने में कामयाब होता है।

समाज के प्रतिष्ठित लोग, अधिकारी, नेतागण, अन्य कर्मचारी व हम सब अगर अपना स्वधर्म और कर्तव्य निभायेंगे तो अधिकांश समस्याओं का हल होता रहेगा क्योंकि मानव का व्यवहार पूरी सृष्टि पर बहुत व्यापक असर करता है जैसे कि श्रीमद् भगवद् गीता में वर्णित है।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरूते लोकस्तदनुवर्तते।।

श्रीमद् भगवद् गीता 3–21

भावार्थ

श्रेष्ठ पुरूष जो – जो आचरण करता है, अन्य पुरूष भी वैसा–वैसा ही आचरण करते हैं। वह जो कुछ प्रमाण देता है, समस्त मनुष्य समुदाय उसी के अनुसार व्यवहार करने लग जाते हैं।

अगर हमारे दिलो–दिमाग में शुद्धता, विष्पक्षता, अध्यात्म का ज्ञान (जो धर्म से ऊपर हो) न्याय, प्यार व देश प्रेम की भावना नहीं है तो हम मानव कहलाने के काबिल नहीं हैं।

तुलसीदासजी ने कहा है–सचिव बैद गुरू तिनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस।

राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगहीं नास।।

मंत्री, वैद्य और गुरू– ये तीन यदि भय या लाभ की आशा से (हित की बात न कहकर) प्रिय बोलते हैं तो (क्रमशः) राज्य, शरीर एवं धर्म इन तीन का शीघ्र ही नाश हो जाता है। ऐसे व्यक्तियों से सावधान रहना चाहिये।

आप चाहे किसी भी क्षेत्र में कार्यरत हों, आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक और राजनीतिक जगत में आप चाहे जितनी क्रान्तियाँ ले आएँ, जब तक आप धर्म की गतिशील प्रेरणा को साथ नहीं लेंगे, तब तक आप अपनी योजनाओं में कोई खास सफलता हासिल नहीं कर सकेंगे।

○○○

अध्याय

10

धर्म की असली सीख : प्रसन्नता एवं शान्ति

मनुष्य का मूल स्वभाव शांति, निर्भयता, प्रेम और संतुलन का है। इसे ही सत्–चित् आनन्द (सच्चिदानन्द) कहते हैं। सब धर्म ग्रन्थ यही कहते हैं। जब हम सत् (परम निरपेक्ष सत्ता), चित्त् (परम चेतना) व आनन्द हैं तो यह बात सिद्ध होती है कि मानव जीवन रोने–चिल्लाने तथा दुःखी–पीड़ित होने के लिए नहीं है। हाँ, इस संसार के दुखों, पीड़ा, उतार–चढ़ाव व अपूर्णताओं के सम्पर्क में आते हुए उनसे होकर निकलना पड़ सकता है, परन्तु हमें याद रखना होगा कि हम उनसे भिन्न हैं एवं वे सब हमारे अंश नहीं हैं। उनको हमें हमारी आत्म–जागरूकता (Self Awareness) की क्षमता से हमारे जीवन का हिस्सा नहीं बनाना है।

हमेशा यह अनुभव करें एवं स्वयं को मंत्रो की तरह याद दिलाते रहे कि आप सच्चिदानन्द– स्वरूप हैं एवं सदा रहेंगे। यह अपने स्वभाव व सोच में डाल ले क्योंकि यह योग्यता आपके स्वभाव में सहज ही निहित (अंदर छिपा हुआ) है । हमें यह कभी भी नहीं भूलना है कि हम इस धरती पर प्रकाश की ओर बढ़ने के लिए तथा परमान्द की प्राप्ति के लिए आये हैं। तैत्तिरीयोपनिषद का यह श्लोक इस सिद्धान्त की हर तरह से पुष्टि करता है :–

"आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्। आनन्दाद्वयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते।

आनन्देन जातानि जीवन्ति। आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति। सैषा भार्गवी वारूणी विद्या।

परमे व्योमन् प्रतिष्ठिता। स य एवं वेद प्रतितिष्ठति। अन्नवानन्नादो भवति।

महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन। महान कीर्त्या।

– तैतिरीयोपनिषद्, भृगुवल्ली अनुवाक–6–1

भावार्थ

भृगु ऋषि ने तप द्वारा यह बोध प्राप्त किया कि आनन्द ही ब्रह्म है। वास्तव में आनन्द से ही समस्त प्राणी उत्पन्न होते हैं। उत्पत्ति के बाद आनन्द से ही जीवन जीते हैं और अन्त में आनन्द में ही प्रविष्ट होते हैं। इस प्रकार भृगु ऋषि ब्रह्मज्ञान से पूर्ण हुए। भृगु ऋषि द्वारा अनुभूत तथा देव वरूण द्वारा वर्णित यह ब्रह्म विद्या परम व्योम (व्यापक आकाश) में प्रतिष्ठित है। इस प्रकार जो साधक ब्रह्म के आनन्द स्वरूप को जानता है, वह प्रचुर अन्न, पाचन शक्ति, प्रजा, पशु, ब्रह्मवर्चस तथा महान् कीर्ति से सम्पन्न होकर महान् हो जाता है।।

मेरे पूजनीय गुरू स्वामी चिदानन्द, डिवाइन लाईफ सोसाईटी, ऋषिकेश, उत्तराखण्ड अक्सर यह कहते थे कि हमेशा यह याद रखो कि आप सदा से ही सच्चिदानन्द हैं एवं अगर हम यह याद रखें तो सत्य, पवित्रता, आनन्द, शान्ति, प्रज्ञान (बुद्धिमता) तथा पूर्णता से हमको कोई वंचित नहीं कर सकता है।

आनंद-चिरआंनद (Long lasting bliss) व परमानन्द

मनुष्य अपनी पारिवारिक, सामाजिक, पर्यावरणीय, शैक्षिक स्तर व अपनी सोच के अनुसार आनन्द की अनुभूति करता है एवं उसका अच्छा या बुरा परिणाम भोगता है। कुछ लोगों को भोजन में परम सुख मिलता है, कुछ को स्वामित्व व दूसरों पर अधिकार जमाने पर आंनद

मिलता है। सही आचरण व उपयोगितावादी नजरिये से आनन्द की प्राप्ति का उद्देश्य बहुत से लोगों का होता है लेकिन इन्हें भी धार्मिक चिन्तन करना चाहिए क्योंकि वास्तविक, सर्वोत्तम व स्थाई सुख तो इसी से मिलेगा।

कई सुसंस्कृत और शिक्षित लोग चिंतन, दर्शन, कला, कर्तव्य–परायणता, कर्म–योग और विज्ञान में आनंदित होते हैं। यह अच्छी बात है लेकिन आध्यामिकता (Spirituality) इन से भी उच्च स्तर की परमानंद की स्थिति है। आध्यात्मिकता, चरित्र निर्माण, विश्व–शान्ति व भगवत प्राप्ति की प्रेरक शक्ति का स्त्रोत हमेशा मनुष्य की अंतरात्मा व सही धर्म की पालना ही होता है। यह अंतरात्मा की महान शक्ति जो हरेक मनुष्य के स्वभाव में होती हैं, यह परम सत्य है। इस शक्ति पर हर मनुष्य का जन्म सिद्ध अधिकार है और इस शक्ति का प्रेरणादायक प्रेरक धर्म है।

इस प्रकार धर्म का अध्ययन सफल जीवन के लिये व्यापक आधार पर होना चाहिये। धर्मों में आई संकीर्णता, गलत धारणायें, सम्प्रदाय व जातिवाद जैसी भावनाओं को बदलना होगा। हर समुदाय या राष्ट्र, अगर यह सोचे कि उनका भगवान अन्य के भगवानों से अलग है तो यह भ्रांति व अंधविश्वास है। इस सोच से मुक्ति पाना जरूरी है। हमें हर धर्म तथा अतीत व पूरे संसार में जो कुछ भी सुन्दर और महत्वपूर्ण है उनको साथ लेते हुये वर्तमान के ज्ञान को समृद्ध बनाकर, भविष्य का दरवाजा खोलना होगा। इसी तरकीब से हर धर्म उदार बनेगा एवं उसकी कल्याणकारिणी ताकत बेशुमार हो जायेगी। यह कार्य ज्यादा मुश्किल नहीं है क्योंकि आज मानव ने काफी उन्नति करली है और वह विश्व के किसी भी कोने तक अपनी बात को कुछ ही क्षणों में सारी दुनिया में फैला सकता है। इन भौतिक साधनों व वैज्ञानिक उन्नति ने पूरे संसार को कई मायनों में एक बना दिया है। अतः धर्मों के सदुगणों को आसानी से विश्वव्यापी (Universal) बनाया जा सकता है व हम आनन्दमय जीवन जी सकते हैं।

ooo

अध्याय

11

अन्तिम बात

धर्म की असली सीख मन व शरीर को स्वस्थ व सकारात्मक रखना है। शरीर और मन आपस में दिन–रात की तरह जुड़े हुये हैं एवं इनका परस्पर घनिष्ठ संबंध है। स्वस्थ व मजबूत शरीर में ही परोपकारी, दयावान, ऊर्जावान, व सकारात्मक मन रह सकता है। मुश्किल यह है कि मन बहुत चंचल है और बहुत जल्दी भटकता है। बहुत सावधान रहना नहीं तो यह मन आपके सुन्दर, स्वस्थ व सुगठित शरीर को बहला फुसलाकर गर्त में डाल देगा। एक अच्छी बात है कि मन आपसे कुछ छिपाता नहीं है। आप कोई भी काम करने जा रहे हैं, या आपको विचार आता है तो तुरन्त इस (मन) को उस विचार की वैधता ईमानदारी से पूछो। मन आपको बता देगा कि क्या गलत एवं क्या सही है? जैसे ही गलत की जानकारी मिले, उसी वक्त उस विचार को त्याग कर सही रास्ता पकड़ लेवें। मन को आप अपनी चेतना (Super Conscious) से वश में कर सकते हैं। हमें मानव जीवन मिला है एवं इससे बढ़कर भला और क्या सौभाग्य व सुअवसर हमें चाहिए। अतः विवेक व आध्यात्मिक जिज्ञासा (Spiritual desire) द्वारा प्रयत्न करके अपनी महान ज्ञानमय शक्ति को दृढ़ता, योग्यता, धीरता व कर्मठता (Diligence) से सदुपयोग करने को आतुर (Desirous) रहना है। यह सब अपने आप नहीं होगा, इसके लिये दृढ़ अभ्यास की आवश्यकता होती है। इसमें अपने कर्तव्य, धर्म, बुद्धि, गुरू व आत्मज्ञान के सहारे धैर्यपूर्वक जुटे रहना है। यही सच्ची साधना व उपासना है।

हमें यह महावाक्य याद रखना है– अहं ब्रह्मास्मि यानी मैं विशुद्ध निर्मल चेतना हूँ। सार्वभौम पवित्र चेतना। इसे जानें और ऐसे ही बनें। हमको सुअवसर प्राप्त हुआ है एवं हम अपना जीवन सफल बनाने में समर्थ है।

ईमानदारी से संसार व जीवन की परेशानियों की गहराईयों में जाना होगा। हर समस्या का समाधान होता है। अगर पूरा नहीं तो कुछ न कुछ निवारण तो जरूर होता है। आज जितनी भी समस्याएं हैं उसकी खास वजह देवतुल्य मानव के भटकाव, कर्तव्य परायणता की कमी व उससे उपजा अधर्म है।

जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, खाने–पीने की सामग्री में मिलावट, बच्चियों व स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार, बड़े से बड़े अधिकारियों द्वारा अपने पद का दुरूपयोग, रिश्वतखोरी, जाति व धर्म के आधार पर भेदभाव आदि का कारण भी हमारी आध्यात्मिकता में आई कमजोरियाँ ही हैं। ईश्वर तुल्य प्रकृति के साथ नाइंसाफी का मुख्य कारण भी मानव की अधर्मी सोच ही है।

हर धर्म का व्यक्ति प्रकृति में ईश्वर को देखता आया है एवं देखना भी चाहिए। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश प्रकृति के प्रतीक बताये हैं। हमने इन पाँचो तत्वों के साथ बेरहमी से छेड़छाड़ करके इनकी सुरक्षा तो दूर इनकी दुर्गति की है। अब इसके दुष्प्रभाव हमें झेलने पड़ रहें हैं। धरती माँ को हमने अधमरा कर दिया है, जल का संकट भयंकर रूप धारण कर चुका है, पवन देवता में हर पल जहर घोल रहे हैं। आकाश में अंधकार है एवं अग्नि देवता, उसके शेष चारों तत्वों को दुःखी देखकर भयंकर आग बरसा रहे हैं। हर धर्मावलंबी को चेतना होगा वरना प्रकृति के साथ जो बेइंसाफी हम कर रहे हैं वह बेहद आत्मघाती होगी, चाहे हम कितनी ही वैज्ञानिक उन्नति करलें।

कभी–कभी यह लगता है कोविड–19 जैसी महामारी भी प्रकृति के साथ हमारी नाइंसाफी का परिणाम है, इसीलिये तो समस्त प्राणियों में

से केवल मानव पर ही सबसे ज्यादा प्रहार इस छूत की बीमारी ने किया है। अतः प्रकृति की सुरक्षा सेवा व उसका मान सम्मान किये बिना भगवान के नाम पर किये गये पूजा–पाठ ढ़ोंग ही हैं।

यह खुशी की बात है कि वर्तमान में इस दिशा में कुछ प्रयास हो रहे हैं। लेकिन इसके हर पहलु में जल्द व सटीक उपाय करने होंगे। हर राष्ट्र को तुरन्त ऐसी जीवन शैली अपनाने को प्राथमिकता देनी पड़ेगी जो प्राकृतिक संसाधनों को बर्बाद करने की बजाय उसका संवर्धन कर सके। यदि यह नहीं हुआ तो भविष्य में धरती पर मानव जाति व अन्य कई जीवों/प्राणियों के वजूद को लेकर ही आशंका पैदा हो जायेगी। हम देख रहे हैं कि कई प्राणियों की प्रजातियाँ तो पर्यावरण की छेड़छाड़ से लुप्त हो चुकी हैं।

(1) भारत का वेदांत व पश्चिम के युवक

स्वामी विवेकानन्द ने वेदांत दर्शन के सारभूत रूप में तीन मुख्य बातें कही हैं :–

(i) मनुष्य की वास्तविक प्रकृति ब्रह्म है।

(ii) मानव का परम लक्ष्य उसके भीतर की ज्योति को जगाना है।

(iii) स्वरूप (आकृति) भेद और अभिव्यक्ति (प्रकटीकरण) के अन्तर के बावजूद संसार के समस्त तत्व ज्ञान में एक ही परम–सत्य प्रतिपादित किया गया है। यह सब जान लेने के बाद मनुष्य कभी भी मत–मतान्तरों व विवादों में नहीं पड़ता है और अपनी आत्मा का उत्थान कर लेता है।

इसमें कुछ भी आश्चर्य नहीं कि पश्चिम के बहुत से युवक धार्मिक झगड़ों, अहंकारी दावेदारों और पाखण्डी धर्मोपदेशकों से अब भारतीय तत्व ज्ञान की ओर झुके हैं। वेदान्त के सरल किन्तु गूढ़ ज्ञान में वे लोग वह तत्व पाते हैं जिसकी उन्हें आवश्यकता है। यह देखकर उन्हें एक सुखद आश्चर्य होता है कि वास्तव में धर्म और विज्ञान के

बीच उतनी बड़ी खाई नहीं है, जितनी पाश्चात्य विचारकों ने उन्हें बताई है। भौतिक विज्ञान की कुछ नवीनतम खोजों द्वारा पुष्ट विचार मूल रूप में सहस्त्रों वर्ष पूर्व लिखे गये वेदों में पाये गये हैं।

स्वामी विवेकानन्द ने वर्षों पहले यह भी कहा है – ''बात यह नहीं कि हमें पश्चिम से ही सब कुछ सीखना होगा, और न ही यह सच है कि पश्चिम को हम सब सिखाने की स्थिति में आ गए हैं। अपितु भारत और पश्चिम दोनों को ही अपनी–अपनी श्रेष्ठतम भौतिक एवं अध्यात्मिक उपलब्धियों की धरोहर भावी विश्व के मानवों को सौंपना है। दोनों को ही अधिक अच्छे विश्व के निर्माण में अपना–अपना योगदान करना है।''

हर तरह की असमानताओं व बुराईयों की तह में जाकर हमको वैज्ञानिक तरीकों व वैदिक दर्शन के अनुसार उनका निवारण करना होगा।

हमारे वेदों में वर्णित ज्ञान के भंडार की यह थोड़ी सी झलक आपको इसलिए बता रहें हैं ताकि हम भविष्य में कभी भी इस धरोहर को भूलें नहीं। यदि समय मिलता है तो उनका थोड़ा बहुत अध्ययन करें व बच्चों को भी कराएं ताकि भावी पीढ़ी को इसके बारे में ज्ञान रहे। हर धर्म के भूतकाल में ज्ञान का खजाना होता है। अतः उसको खंगालते रहें।

लगभग 3500 वर्ष पुराने उपनिषदों एवं वेदों में मानव मस्तिष्क, ब्रह्माण्ड व खगोलशास्त्र के बारे में बहुत रोचक व सही प्रमाण व तथ्य हैं, जिनका लोहा आधुनिक वैज्ञानिक भी मानते हैं। हिन्दू पंचांगों में कई वर्षों से चन्द्र व सूर्यग्रहण के बारे में सटीक जानकारियां दी जाती रही हैं। इन ग्रंथों में मनुष्य के मस्तिष्क एवं ब्रह्माण्ड के बारे में कई ऐसी जानकारियां हैं, जिन्हें आसानी से नकारा नहीं जा सकता।

ब्रह्माण्ड, सौरमण्डल (Solar System), गुरूत्वाकर्षण बल एवं चन्द्रग्रहण इत्यादि के बारे में बहुत सारी जानकारी ऋग्वेद में दी गई

हैं। यह सब तथ्य वेदों के रचयिताओं ने कैसे जाने थे? यह उनकी महान कल्पना शक्ति की वजह से उपजे थे या कोई और साधन उनके पास थे, यह बताना मुश्किल है।

इन श्लोकों के कुछ उदाहरण निम्नानुसार हैं :–

त्वं सोम पितृभिः संविदानोऽनु द्यावापृथिवी आ ततन्थ।
तस्मै त इन्दो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।

ऋग्वेद – 8,48–13

स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में इन श्लोकों का अर्थ इस प्रकार बताया गया है :–

(त्वं सोम.) इस मन्त्र में यह बात है कि चन्द्रलोक पृथ्वी के चारों ओर घूमता है। कभी–कभी सूर्य और पृथ्वी बीच में भी आ जाता है। द्यावापृथिवी– यह बहुत मन्त्रों में पाठ है कि द्यौः नाम प्रकाश करने वाले सूर्य आदि लोक, और जो प्रकाशरहित पृथ्वी आदि लोक हैं, वे सब अपनी–अपनी कक्षा में सदा घूमते हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि सब लोक भ्रमण करते हैं।

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातंर पुरः।
पितरं च प्रयन्त्स्वः।। ऋग्वेद – 10,189–1

भावार्थ

गौ– नाम है पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमादि लोकों का। यह सब अपनी–अपनी परिधि में, अन्तरिक्ष के मध्य में सदा घूमते रहते हैं। सूर्य, पृथ्वी के पिता समान है, इससे वह सूर्य के चारों ओर घूमती है।

अब यह कहना मुश्किल है कि क्या पाश्चात्य देशो द्वारा सौरमण्डल (Solar System) की जानकारी से पूर्व ही ऋग्वेद के समय

इस तथ्य की जानकारी हो गई थी कि सूर्य भ्रमण नहीं करता बल्कि पृथ्वी अपने अक्ष के साथ–साथ सूर्य के चारों ओर परिभ्रमण करती है?

(2) शिक्षा व्यवस्था धर्म, चरित्र, नैतिकता व धर्म

अगर हमारी शिक्षा हमारे जीवन को हर तरह से उत्कृष्ट/श्रेष्ठ नहीं बनायेगी तो हम एक अप्रजातंत्रवादी, अहिष्णु (Intolerant) व भयंकर जातिवाद से भरा हुआ समाज उत्पन्न कर लेगें। हर जगह वैचारिक स्वतंत्रता, शांति, मित्रता, वफादारी एवं विभिन्न विचार धाराओं को सुरक्षित रखना बुनियादी शिक्षा व्यवस्था से ही संभव है। इसीसे विश्व कल्याण होगा। हर धर्म व पंथ को स्वीकारना एवं बराबर का दर्जा देना हर शिक्षक एवं धार्मिक गुरू का प्रथम कर्तव्य होना चाहिये। आशा करते हैं कि हमारे यह महानुभाव इस पर तुरन्त ध्यान देंगे।

स्कूलों में व कार्यस्थल पर सहनशील रहना, सहनशीलता सिखाना आज की गंभीर चुनौतियों का महत्वपूर्ण समाधान है। आज हमको धर्म निरपेक्षता (Secularism) से ओत–प्रोत नैतिक शिक्षा चाहिए जो धर्म से ऊपर (Beyond) हो।

समग्र शिक्षा (Holistic Education) के अन्तर्गत आध्यात्मिक, नैतिक, बौद्धिक एवं वैज्ञानिक इन चारों पक्षों पर पूरा ध्यान देकर चरित्रवान नागरिक बनाये जा सकते हैं। शिक्षा, खुशी, प्रगति, धन, विज्ञान,धर्म, स्वास्थ्य व चरित्र साथ–साथ चलते हैं एवं यदि इनमें से कोई एक भी पहलु कमजोर हो तो जीवन में वास्तविक सुख की प्राप्ति करना मुश्किल होता है।

जब तक देवीय गुण व नैतिकता (Morality) इंसान के स्वभाव में नहीं आ जाती तब तक कुछ भी ठीक नहीं हो सकता। हर इंसान अच्छा होता है व दया, प्यार व सहानुभूति को सराहता रहता है। हमें इस अच्छाई को निखारना है। अब आध्यात्मिकता को धर्म से ऊपर

रखने का समय आ गया है ताकि भावी पीढ़ी को यह उत्तम उपहार देकर अपना जीवन सफल बनायें।

अलग–अलग धर्मों व विश्वासों के मानवगण में प्यार व भाईचारे द्वारा हम स्वर्गमय माहौल बनाकर विश्व का कल्याण कर सकते हैं, जैसा कि हर धर्म के महान् प्रचारकों ने बताया है। हमें यह याद रखना होगा कि हम सब मनुष्य पहले हैं । हिन्दू, सिख, मुसलमान, ईसाई इत्यादि बाद की व ऊपरी सतह की बातें हैं, जो हमारे जन्म स्थान, पूर्वजों की स्थिति, विश्वास व रीति–रिवाज की वजह से पनपती हैं। इन ऊपरी सतह की बातों का इंसानियत से कोई लेना–देना नहीं है। सही धर्म तो मानवता का ही है व हर मानव में एक ही परमात्मा का अंश है जो आपस में जुड़ा हुआ है।

अतः अगर हम आस्तिक हैं तो हमें हर जीव में भगवान का तत्व स्वीकार करना होगा एवं हर व्यक्ति के ईश्वर तत्व को चाहे वह किसी भी जाति व धर्म का हो, याद रखते हुए, उसे कभी भी किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देना है। यहाँ, ईशावास्योपनिषद् का यह श्लोक ब्रह्म वाक्य लगता है :–

यस्तु सर्वाणी भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्व भूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते।।

भावार्थ

जो मनुष्य प्राणिमात्र को सर्वाधार परब्रह्म पुरूषोतम परमात्मा में देखता है और सर्वान्तर्यामी परम प्रभु परमात्मा को प्राणिमात्र में देखता है, वह कैसे किसी से घृणा या द्वेष कर सकता है ? वह तो सदा–सर्वत्र अपने परम प्रभु के दर्शन करता हुआ मन ही मन सबको प्रणाम करता रहता है तथा सबकी सब प्रकार से सेवा करना और उन्हें सुख पहुँचाना चाहता है।

हर धर्म का इतिहास कुछ पवित्रता धारण किये हुए हैं। हाँ, हमारे अतीत में कुछ ऐसा भी है जो दोषपूर्ण है, पर बहुत कुछ ऐसा भी है जो परम सत्य है एवं जीवनदायी और उन्नति की ओर ले जाने वाला है। अतः हमें अपना भविष्य सुधारने के लिए अतीत का विवेक व सहानुभूति से अध्ययन करते हुए उसमें वर्तमान की आवश्यकतायें व परिस्थितियों के अनुसार स्पष्टीकरण व परिवर्तन करना होगा। यह सब भी विज्ञान के साथ–साथ शिक्षा में सम्मिलित करना होगा।

(3) झगड़े, मुकदमें, कोर्ट–कचहरी व धर्म

आज न्यायालयों में जो भीड़, मारा–मारी, धन व समय की बर्बादी हो रही है, उतनी शायद अस्पतालों में भी नहीं है। इस भीड़ को रोकना नामुमकिन है लेकिन धर्म के सही आचरण से इस बर्बादी में कमी जरूर आयेगी।

हम यह मानते हैं कि समाज एवं सरकार में न्यायालय का महत्व एवं जरूरत सदैव रहेगी। न्यायपालिका शासन व्यवस्था का सम्मानजनक एवं महत्त्वपूर्ण पाया है परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि कई कानूनविद अपने ज्ञान एवं धीरज का प्रयोग मामलों को लम्बा खींचने में करने लग गये हैं। इस कारण हमें इस जाल से बचे रहने एवं अपने विवादों को सदाशयता व सदाचरण से न्यायालयों के बाहर ही निपटाने की कोशिश करनी चाहिए।

आम आदमी कई बार यह भ्रम पाले रहता है कि वहाँ न्याय की नदी तैयार मिलेगी। इस नदी का प्रत्यक्ष अनुभव तो न्यायालय में कभी दावा (Plaint) दायर करने या फिर जवाब दावा (Written statement) पेश करने पर ही हो सकता है। मेरा अनुभव यह है कि वहाँ न्याय होता हुआ दिखेगा जरूर पर सहज ही आपके जीवन में मिलता नहीं है।

हमारे देश में वर्तमान में कार्यपालिका (Executive) कई बार कठिन एवं विवादास्पद मामलों में निर्णय लेने से बचती नजर आती है।

किसी भी पेचीदा समस्या का हमारी कार्यपालिका समाधान कर सकती है परन्तु समाधान के पश्चात होनी वाली सामाजिक प्रतिक्रिया एवं उस निर्णय की न्यायिक विवेचना एवं समीक्षा (Judicial scrutiny and review) का दृढ़ता से सामना करने का भाव कार्यपालिका में कम होता नजर आ रहा है। न्यायपालिका में भी श्रेष्ठता का अहसास गहरा रहा है जिससे उसमें कार्यपालिका के हर कदम को शक की नजर से देखने की अवांछनीय प्रवृत्ति विकसित हो रही है। यह स्थिति कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के लिए ही नहीं बल्कि हमारे देश के लिए भी चिन्ताजनक है।

इस संबंध में भारत के उच्चतम न्यायालय के सेवानिवृत्त एवं महान मुख्य न्यायाधीश श्री आर.सी. लाहोटी का दिनांक 02.06.2020 को ''इंडियन–एक्सप्रेस'' समाचार पत्र में प्रकाशित लेख का निम्न पैरा मैं उदृत करना चाहूँगा।

अगर आपके मन में यह विचार पनपे कि इस निम्नलिखित विवरण का धर्म या आस्था से क्या सम्बन्ध है, तो आपकी सोच सही है। इस सम्बन्ध में हमारी मान्यता है कि साधारण मानव के जीवन, कार्यपालिका (Legislative & Executive) और नौकरशाही (Bureaucracy) द्वारा लिये गये अनुचित निर्णयों (Verdicts) का प्रभाव भी उतना ही हानिकारक या तर्कविहीन हो सकता है जितना धर्म और आस्था के नाम पर किये जाने कुकर्मों से–इसी धारणा से यह विचार प्रस्तुत है :–

''.....An error committed by the legislature or executive is capable of being corrected either by themselves or by the judiciary in the exercise of its power of judicial review. But an error in a judicial order, howsoever grave it may be, may not be capable of being corrected with that ease.

Several well-known instances from the past two decades show some judicial commands have created a lot of confusion

and misunderstanding and also resulted in slowing down the normal process of governance. Most competent, knowledgeable and bold officials who would have come up with innovative ideas to salvage an unusual situation are hesitant to act for the fear of being called upon to explain their action or inaction before the judiciary after many years, when memory and evidence have faded away.

Having been associated post-retirement with some governmental committees and having got an opportunity of seeing the working of the public functionaries from inside, I can say with confidence that generally, the high officials of the government are conscientious, competent and go deep into the matter before planning the policies and taking decisions. The three wings of governance ought to trust each other and should not begin with the assumption that the other wing of governance must have faltered.

.....My experience as a member of the subordinate judiciary and later, as a member of the higher judiciary, has made me learn that too much judicial activism may turn out to be counter-productive. It may obstruct the normal functioning of the executive and divert the attention of public officials to collecting material for being placed before the court, drafting the pleadings and affidavits, briefing the government advocates (sometimes personal presence in the courts), ...Faced with notice of the court, the executive may feel compelled to alter its well-thought-out priorities, resulting in imbalance."

श्री लाहोटी के उक्त लेख का सार यह है कि न्यायिक गलती आसानी से ठीक नहीं होती है। गत दो दशकों में ऐसे कई मामले देखने को मिले हैं जिनमें न्यायालय के आदेशो से बहुत भ्रम एवं गलतफहमी फैली है और इनसे शासन प्रणाली की गति धीमी पड़ी है।

सक्षम एवं जानकार अधिकारी जो अपने अभिनव एवं प्रगतिशील विचारों (Innovative ideas) से असामान्य हालातों में समाज को उबार सकते हैं, वे उस घटना के कई वर्षों बाद जब उसके साक्ष्य (Evidence) एवं घटना की याददाश्त तक फीकी पड़ गई हो, अपनी उस कार्यवाही या निष्क्रियता को कोर्ट के सामने स्पष्ट करने के लिए बुलाये जाने के डर से, अब कार्यवाही करने में संकोच करने लग गये हैं। श्री लाहोटी यह भी कहते हैं कि सेवानिवृत्ति के पश्चात कुछ सरकारी समितियों से सम्बन्ध रहने एवं सरकारी अधिकारियों की कार्यशैली को अन्दर से देखने के बाद वे विश्वास के साथ कह सकते हैं कि यह अधिकारी आमतौर पर कर्तव्यनिष्ठ एवं सक्षम होते हैं एवं नीतियों की प्लानिंग करते वक्त एवं निर्णय लेने से पूर्व मामले की तह में जाते हैं। इसलिए शासन के तीनों स्तम्भों को एक–दूसरे पर विश्वास करना चाहिए तथा न्यायपालिका को यह धारणा नहीं बनानी चाहिए कि शासन का दूसरा स्तम्भ लड़खड़ा गया है या कमजोर पड़ गया है।

श्री लाहोटी के अनुसार न्यायपालिका के निचले एवं उच्चस्तर पर काम करने के बाद उन्होंने यह सीखा है कि न्यायालय की अतिसक्रियता प्रतिकूल (Counter productive) असर डाल सकती है। यह कार्यपालिका के सामान्य कामकाज में बाधा डाल सकती है और कोर्ट के नोटिस प्राप्त होने के बाद सरकारी अधिकारियों का ध्यान एवं समय सरकारी वकीलो से मिलने, न्यायालय में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होने, अदालतों के सामने दस्तावेज पेश करने, दलीलें और हलफनामों के मसौदे तैयार करते रहने से कार्यपालिका अपने सुविचारित प्राथमिकताओं (Well thought out priorities) को बदलने हेतु मजबूर हो सकती है जिसका परिणाम असन्तुलन होगा।

पूर्व मुख्य न्यायाधीश के यह उदगार हमारी वर्तमान शासन व्यवस्था की पूर्ण व्याख्या करते प्रतीत होते हैं, अतः जब तक इन हालातों में सुधार नहीं होता तब तक बड़ी समस्याओं के समाधान के लिए न्यायालय की ओर देखना बहुत विवेकपूर्ण प्रतीत नहीं होता।

अन्त में यही कहना है कि जहाँ तक सम्भव हो, नैतिकता, सदाचरण एवं ईमानदारी से जीवन जीएं एवं वाद–विवाद होने पर समझौता करने का भाव रखें। कोर्ट–कचहरी के चक्कर लगाने की भूल नहीं करें। यदि ऐसा किया तो आपके स्टील के घुटने तक घिस सकते हैं एवं चाँदी की जेब भी तार–तार हो सकती है।

(4) वर्तमान स्थिति व विज्ञान

अधर्म के खिलाफ उठाया गया हर कदम हमेशा धर्म की नींव को मजबूत करता है पर धर्म को ही अधर्म की तलवार बना लेना पाप है। हमें इस से बचना चाहिए। आज ज्यादातर लोग जानते नहीं हैं कि वे किस दिशा में जा रहे हैं और उनका आगे क्या होगा ? अतः थोड़ा रूकें। आत्म निरीक्षण और ध्यान करें कि कहीं हम हमारे विश्व, प्रकृति व पर्यावरण के विनाश की ओर अग्रसर तो नहीं हो रहे हैं।

मानव ने विज्ञान के क्षेत्र में बेशुमार उन्नति की है। आज वह इतना ताकतवर है कि वह कहीं भी बैठा हुआ एक बटन दबाकर बड़े भू–भाग को नष्ट कर सकता है। वैसे भी मानव जाति कभी भी बहुत सहिष्णु नहीं रही है। उसने न सिर्फ अपने भाई–बंधुओं का ही खात्मा किया अपितु अन्य जीव–जन्तु, पर्यावरण एवं प्रकृति का भी बहुत नुकसान पहुँचाया है। धर्म की गलत व्याख्या, ऊँच–नीच का भेद भाव, ताकतवर व कमजोर की लड़ाई, चतुर–चालाक व सक्षम का भोले–भाले व्यक्तियों को डराना व कष्ट देना यह वर्तमान एवं मानव इतिहास में आम बात रही है। इन सब खामियों की वजह से ही हमारे सामने विनाशकारी समस्यायें आ खड़ी हुई हैं। कई प्राकृतिक आपदायें जैसे वायुमण्डल का दूषित होना, तापमान का बढ़ना, कई लुप्त होती जीवों की प्रजातियां एवं भयंकर महामारियां आने वाले विनाश के कुछ संकेत हैं।

वैज्ञानिक उन्नति की वजह से भौतिक सुख–सुविधाओं का बहुत विकास हुआ है लेकिन मानव के सामाजिक रिश्तों में सुधार एवं

उसकी विनाशकारी प्रवृतियों में कोई खास बदलाव नहीं हुआ है। शरणार्थी शिविरों, झुग्गी–झोपड़ियों व कारागारों में आज भी भीड़ है। यह सब मानव की सात्विक (भाईचारा, सेवाभाव, विश्व कल्याण, करूणा व आध्यात्मिक) प्रकृति पर राक्षसी प्रवृति की विजय की वजह से है।

तात्पर्य यह है कि बहुत सी दुविधायें विज्ञान, धर्म, आध्यात्मिकता व दार्शनिकता के सही तालमेल नहीं होने की वजह से हुई हैं एवं यदि हम इस समय नहीं सम्भले तो विनाश ज्यादा दूर नहीं है। अतः आज सही आचरण, कर्तव्य–परायणता, सेवाभाव व ''जीओ और जीने दो'' की प्रवृति की अत्यन्त आवश्यकता है यह सब उपासना, भक्ति व नैतिक आचरण के पालन से ही संभव होगा।

(5) उपासना, सेवामय भक्ति व ध्यान

उपासना के बारे में लिखे बिना यह लेख थोड़ा अधूरा लग रहा है। उपासना का सरल अर्थ है – समीप बैठना व उपस्थित होना। ईश्वर की पूजा उपासना है परन्तु अपने परिवार, मित्रों व विद्वानों आदि के समीप उपस्थित होना व उनसे संगति करना भी उपासना ही है। हम जब किसी के पास बैठते हैं तो इसमें हमारा कोई प्रयोजन (मकसद) जरूर होता है। हमारे परिवार के सदस्यों, मित्रों व अन्य लोगों के पास बैठने का प्रयोजन उनकी संगति करना होता है। इससे हम एक दूसरे के बारे में, उनके सुख–दुःख, उनकी शैक्षिक, सामाजिक स्थिति आदि की जानकारी का आदान–प्रदान करते हैं। इसके साथ–साथ कई बार हम अपने बुजुर्गों के अनुभव एवं उपदेश सुनकर अपनी कई समस्याओं का समाधान भी प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार विद्यार्थी अपने गुरूओं इत्यादि की उपासना व संगति करके कई विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

साधारण मनुष्यों की संगति से ही जब इतना कुछ हासिल किया जा सकता है तो ईश्वर की यथार्थ उपासना करके मनुष्य अज्ञान, दुर्बलता, दरिद्रता आदि दूर करके हर तरह से गुणवान, बलवान व

ऐश्वर्य सम्पन्न हो सकता है। हमारे सब अवगुणों को हम हमारे दृढ़ संकल्प और ईश्वर की सहायता/उपासना के द्वारा हटा सकते हैं। ईश्वर की उपासना के पूर्व हमें ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना जरूरी होता है, जो हम धर्म ग्रथों का अध्ययन करके प्राप्त कर सकते हैं। इस ज्ञान के बिना हम गलत मत/मतान्तरों व कलयुगी अज्ञानी व लालची गुरूओं के चक्कर में फंसकर, हमारे इस दुर्लभ जीवन को नष्ट कर लेंगे। ध्यान व उपासना के लिये शरीर का स्वस्थ होना और हमारे मन से अवगुणों को निकालना भी आवश्यक है अन्यथा हमारा मन ध्यान, उपासना व सेवा भाव में नहीं लगेगा। अतः प्रतिदिन नियत समय पर थोड़ा ध्यान जरूर करें व मन को ईश्वर के गुणों में स्थिर करने का प्रयास करें।

एक चिकित्सक के रूप में व वर्तमान के कई वैज्ञानिक तथ्यों व अध्ययनों के आधार पर मैं यह कहते हुये बिल्कुल भी नहीं हिचकिचाऊगाँ कि ध्यान व उपासना के अनेक लाभ हैं।

(6) उपासना कैसे करें?

कोई भी कार्य शुरू करने एवं किसी भी वस्तु का उपयोग प्रारंम्भ करने के पूर्व सर्वप्रथम मन ही मन उसे अपने भगवान को समर्पित करें। इससे आत्मा का विकास, पवित्रता का बोध व शालीनता आती है, अहंकार मिटता है, शरणागत की भावना आती है एवं मन में उत्साह रहता है। कुछ पुराने रिवाज जैसे कि भगवान को खाने से पहले भोग लगाना, उन्हें धन्यवाद देना व शादी–विवाह के निमन्त्रण की प्रथम प्रतिलिपि को मन्दिर में अर्पित करना इत्यादि इसी उपासना की रीति का परिणाम है।

पवित्र बाइबल (New Testament) में भी यही संदेश है :– सो तुम चाहो खाओ, पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो। कुरिन्थियों 1–10,31.

इस प्रकार हर कार्य भगवान के लिये हो जायेगा और अगर मन ही मन हर कार्य को और उसके परिणाम को हम भगवान का प्रसाद मानने लग जायेंगे तो उसके लाभ या हानि की चिंता अपने आप मिट जायेगी। हर कार्य भगवान को समर्पित करते हुये उसे सेवा भाव से करना असली कर्म व भक्ति योग होता है, जिसका वर्णन श्रीमद्भगवत् गीता के 12 वें अध्याय में विस्तार से वर्णित है।

इस प्रक्रिया से हम परमात्मा की ओर अग्रसर होंगे एवं अंत में उनके साथ एकत्व प्राप्त कर लेंगे। इस उपासना व सेवा भाव की वजह से त्याग की भावना का विकास होता है। हमें व्यापक दृष्टिकोण अपनाना चाहिये क्योंकि हमारे अस्तित्व (छोटा सा जीवन), सीमित चेतना, सीमित आनन्दों के आधार के पीछे एक अखण्ड व अनन्त सत्ता है जो हर मानव के माध्यम से प्रकट हो रही है। उस सत्ता के प्रति सब कुछ न्यौछावर करना सबसे उत्तम उपासना है।

स्कन्दोपनिषद् (10) में कहा गया है :–

देहो देवालयः प्रोक्तः स जीवः केवलः शिवः ।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत्।।

अर्थ

तत्वदर्शियों द्वारा इस देह को देवालय कहा गया है और उसमें जीव केवल शिवरूप है। जब मनुष्य अज्ञानरूप मैल का परित्याग कर दे, तब सोऽहं भाव से उनका (शिव का) पूजन करें। तात्पर्य यह है कि मानव देह एवं हर जीव भगवान का मन्दिर/अंश है। जिस मनुष्य को यह तथ्य समझ में आ जाता है वह स्वतः ही हर जीव के प्रति सोऽहं (जीव और ब्रह्म की एकता) का भाव रखते हुये उपासना करने लगता है।

छान्दोग्योपनिषद्– 3,14–1, में भी लिखा कि यह सारा जगत निश्चय ब्रह्म ही है, यह उसीसे उत्पन्न होनेवाला, उसी में लीन होने

वाला और उसी में चेष्टा करने वाला है – इस प्रकार शान्त (राग–द्वेषरहित) होकर उपासना करें।

उपासना के अन्य मार्ग भी हैं जैसे जप करना, ध्यान करना, प्रतीकों की पूजा इत्यादि। लेकिन मानव सेवा जो भगवान की सेवा है, वह सबसे सरल उपासना है। सच्चा भक्त परमात्मा को सब में व्याप्त देखता है। इस तरह उसका सारा जीवन परमात्मा की उपासना बन जाता है और वह परमशांति एवं धन्यता का अनुभव करते हुये अपने जीवन को सफल व परमानन्द की स्थिति में रख पाता है।

(7) अपना मार्ग खुद चुने

आपके सर्वोच्च प्राकृतिक सत्ता (Super Natural Power) में अथवा एक निराकार ईश्वर में अथवा अनैतिक व बुरे कार्य करने पर दण्ड मिलने की व्यवस्था में अथवा किसी भी ऐसे अदृश्य विश्वास जिसके सहारे आप अपने निर्णय लेते हैं एवं अपना जीवन संचालित करते हैं अथवा विभिन्न देवी–देवताओं में आस्था जैसी गतिविधियों को संचालित करते हैं, उसका सबसे अच्छा तरीका, सबसे अच्छा मार्ग कैसा होना चाहिये?

प्राणी जगत में सर्वाधिक विकसित एवं बुद्धिमान प्राणी मानव ही है एवं जब तक किसी भी एक व्यक्ति की धारणा एवं कर्म दूसरे व्यक्ति के लिये हिंसक या कष्टप्रद नहीं है तब तक प्रत्येक व्यक्ति को अलग–अलग विश्वास एवं धारणाओं को रखने की पूर्ण स्वतंत्रता ही एक प्रगतिशील एवं स्वस्थ मानव समाज की पहचान है। विचारों में उदारता, हमारे से भिन्न मतो के लिए सहनशीलता, आपसी प्रेम, समझ एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण ही किसी भी बस्ती एवं देश की शांति एवं समृद्धि की आधारशीला है। इनमें से किसी भी तत्व की कमी होने पर समाज का ढाँचा ही टूट सकता है।

मन–मस्तिष्क में शान्ति एवं आनन्द, ध्यान (Meditation) और अच्छाई के साथ सत्कार्यों में गहरा एवं अटूट विश्वास रखते हुये लगातार कार्य करते रहने से ही संभव है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण अपने से वरिष्ठ एवं गुरूत्तर व्यक्ति की संगति एवं श्रेष्ठ पुरूष से मार्ग दर्शन प्राप्त करने से भी बहुत सहायता मिलती है। ऐसा करने से मन के भ्रम एवं संशय समाप्त होते हैं। मन शीतल होता है व उसकी चंचलता कम होती है। नित्यकर्म से किसी धार्मिक स्थल पर जाने से जीवन में नियमितता बनी रहती है परन्तु इन धार्मिक स्थलों की किसी भी अविवेकपूर्ण परम्परा एवं रूढ़ि का हमें शिकार नहीं बनना चाहिये। अनुभव यह भी कहता है कि जो व्यक्ति किसी भी धार्मिक विश्वास का अनुयायी नहीं होता उसे प्रायः सामाजिक सामंजस्य बिठाने में कठिनाई होती है एवं वह मानव मात्र में महापुरूष एवं देवताओं की ऊँचाईयां नहीं देख पाता है। हमें यह भी याद रखना चाहिये कि प्रायः सभी धर्मों एवं विश्वासों के प्रवर्तक मनुष्य रूप में जन्में वे साधारण व्यक्ति हैं जिन्होंने त्याग, क्षमा, वीरता, धैर्य, प्रेम एवं अहिंसा की वे अप्रतिम ऊँचाईयां (Exceptional height) प्राप्त की, जो मानव मात्र के लिये मानक एवं पथ प्रदर्शक बन गई। कालान्तर में इन्हीं को फिर हम ईश्वर/देवता के अवतार कहने लग गये और सैकड़ो, हजारों वर्षों के पश्चात् भी इनके जीवन से हम प्रेरणा ले रहें हैं। इसका अर्थ यह है कि मनुष्य के यदि पतन की कोई सीमा नहीं है तो उसके अच्छे एवं उत्कृष्ट मानव बनने की भी असीम संभावनाएं हैं। उन संभावनाओं को हर व्यक्ति को अपने जीवन में साकार करके संतुष्टिपूर्ण एवं आनन्दमय जीवन जीत हुये, समाज में अच्छाई के विश्वास को बढ़ाते हुये, पूर्ण समरसता एवं प्रेम का संचार करते रहना है।

(8) क्या होता रहेगा व क्या करें ?

हमें यह भी स्वीकारना होगा कि थोड़े–बहुत धार्मिक मतभेद जरूर होंगे (यह आम मानव की फितरत है), लेकिन जहाँ उदारता, सहिष्णुता और सत्य होता है वहाँ मतभेद भी लाभदायक सिद्ध होते हैं।

यह भी सत्य है कि अमीरी–गरीबी हमेशा रहेगी व हमेशा थी। दुराचारी व गलत बर्ताव करने वाले व अंधविश्वासी लोग भी हमेशा थे व आगे भी रहेंगे परन्तु बहुत सुलझे हुए एवं अच्छे पढ़े–लिखे लोगों (जिनकी संख्या भले ही कम रही हो) ने समाज को रास्ता दिखाया है।

हमारा प्रथम कर्तव्य यह है कि हम खुद सुधरें व कमजोर, अंधविश्वासी, दुराचारी लोगों की संख्या को भी कुछ कम करें व उनको सुधारें। अगर हर एक अच्छा आदमी व सुलझा हुआ आदमी, 1–2 गलत आदमियों को भी सही रास्ते पर लाने में सफल हुआ तो संसार का बहुत भला होगा। कहीं भी और किसी भी धर्म के लोगों के खिलाफ अगर अन्याय हो रहा है तो आवाज जरूर उठानी चाहिए। क्योंकि हर धर्म यही शिक्षा देता है कि दूसरों को भी उतना ही अधिकार है जितना आपको है। वैसे भी दुखी एवं दरिद्र नारायण की सेवा ही, हर धर्म की असली सीख है।

कुरान में साफ लिखा है ''अल्लाह उसी को प्यार करता है जो न्याय करता है।'' बाइबल में भी वर्णित है कि ''न्याय करो व दुखियों की मदद की जाए।'' हिन्दू धर्म भी यही सीखाता है कि दुनिया की हर संतान के लिए दया और प्यार रखना है। भगवान बुद्ध ने कहा था कि हर मानव को दुनिया के हर अच्छी चीजों व संसाधन में बराबर का हक है।

(9) अचरज

(क) हमें कई बार आश्चर्य होता है कि छोटे से छोटे जन्तु, कीड़े–मकौड़े जैसे कि चींटियाँ व मधुमक्खियाँ इत्यादि कितने प्यार व अनुशासित ढंग से एक दूसरे की मदद करती हुई रहती है। मानव इन छोटे जीवों से भी अच्छी शिक्षा ले सकता है।

(ख) हम सब जानते हैं एवं कई महात्माओं ने बहुत बार कहा है कि मानव जीवन पानी के बुलबुले के समान है। किस वक्त हमारी

पारी इस वसुन्धरा पर खत्म हो जाए, किसी को पता नहीं। कई आपदाएं एवं महामारियों ने इस सत्य को अच्छी तरह से उजागर किया है कि बड़े से बड़ा सूरमा को किसी भी क्षण दफनाया जा सकता है। फिर भी आदमी झूठे जंजाल में फंसता हुआ खुद के लिए एवं अन्य के लिए बहुत सारी मुसीबतें खड़ी कर लेता है।

यह तथ्य हमको कब समझ में आएगा? कब तक हम खोखले और झूठे विवादों, धर्मों व जातिवाद में पड़ कर अपना खुद का और पूरे विश्व का विनाश करते रहेंगे। पहले हमें खुद को सुधरना है फिर उम्मीद करनी है कि शायद कोई दूसरा भी आपको देखकर सुधर जाये। अन्यथा मानव के रूप में जन्म लेने का हमें कोई लाभ नहीं होगा। हमें शिक्षा लेनी होगी कि जितने दिन हम यहां हैं, अच्छा काम करते हुए व अपना कर्तव्य निभा कर खुद का ही नहीं अपितु हर जीव व पर्यावरण का पूरा ध्यान रखें।

(ग) मस्तिष्क (चाहे वो छोटे से छोटे जानवर का हो या मानव का) में ज्ञान का भण्डार, क्षमता व विस्तार ब्रह्माण्ड जैसा है एवं इन दोनों के बारे में हम अभी तक बहुत कम जानते हैं। मानव मस्तिष्क में भी ब्रह्माण्ड की तरह ही काले छिद्र (Black holes) भी बहुत हैं। सफल जीवन के लिये मानव को इन काले छिद्रों से बचना जरूरी होता है और खुशी की बात यह है कि इनसे बचने की क्षमता हम सब में होती हैं।

ooo

लेखक परिचय

ले. जनरल (डॉक्टर) शिवराम मेहता (सेवानिवृत्त) का जन्म सन् 1949 में जयपुर जिले की किशनगढ़–रेनवाल तहसील के ग्राम चारणवास में हुआ। स्कूली शिक्षा रेनवाल में पूरी करने के पश्चात आपने वर्ष 1971 में सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज, जयपुर से एम.बी.बी.एस. किया। उसी वर्ष अक्टूबर माह में सेना में चिकित्सक के रूप में सेवा प्रारम्भ की एवं भारत–पाक युद्ध के दौरान अमृतसर सीमा पर तैनात रहे। आपने आर्मड् फोर्सेज मेडिकल कॉलेज पुणे से एम.डी. की एवं उसी कॉलेज में अध्यापन करते हुए मेडिसन विभाग में आचार्य एवं विभागाध्यक्ष के पद पर कार्य किया। कारगिल युद्ध के दौरान (वर्ष 1999 ई.) श्रीनगर में पद स्थापित रहते हुए दी गई सेवाओं के लिए आपको राष्ट्रपति द्वारा विशिष्ट सेवा मेडल प्रदान किया गया। 39 वर्ष तक सेवा उपरान्त आप महानिदेशक चिकित्सा सेवाएं (सेना) के पद से सन् 2010 में अति विशिष्ट सेवा मेडल के साथ सेवानिवृत्त हुए। आप राष्ट्रपति के ओनरेरी सर्जन भी रहे। सेवानिवृत्ति उपरांत आप सोसाईटी फॉर रूरल एजुकेशन एण्ड एंपावरमेंट (SREE) फाउंडेशन, भिलाई (छत्तीसगढ़) के संरक्षक हैं एवं रामकृष्ण मिशन, सी स्कीम, जयपुर के निदेशक मण्डल के सदस्य के रूप में रूरल मोबाईल चिकित्सा इकाई में सप्ताह में दो बार मानद सेवा दे रहे हैं। आपकी आध्यात्म में रूचि के कारण आपने समय–समय पर कल्याण व कल्याण–कल्पतरू, गीताप्रेस, गोरखपुर के लिए लेख भी लिखे हैं।

इस पुस्तक को भी आपकी पहली दो पुस्तकें, जीवन–दर्शन (जीवन कैसे जीये?) व मेरे अनुभव और सुझाव की तरह कॉपीराईट से मुक्त रखा गया है।

सुरेश बुक सर्विस

हॉस्पीटल रोड, उदयपुर-313001

मोबाईल: 9351685460

e-mail : sureshbookservice@gmail.com

ISBN : 978-93-8535-222-1